

کوثر الرحمن

مؤلف۔

فی عبد الوہاب میر ابن
عبد الرحمن صاحب میرؒ۔ آسنور کشمیر

H1_297.860R3S12

ISLAM

Small rectangular stamp or label at the top right corner.

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

Handwritten notes or signatures in the left margin, possibly including a date or reference number.

2424
C1

کوثر الرحمن

سیرت و سوانح حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میر احمدی رضی اللہ تعالیٰ عنہ
”صحابی ابن صحابی“ ریٹائرڈ فارسٹ ریجن آفیسر۔ وادی کشمیر

مؤلف۔

حاجی عبدالوہاب میر ابن
حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میرٹ۔ آسنور کشمیر

کوثر الرحمن	:	نام کتاب
حاجی عبدالوہاب میر آسنور کشمیر	:	مؤلف
ایک ہزار	:	تعداد
دسمبر ۲۰۰۱ء	:	سن اشاعت
الفصل کمپیوٹر قادیان فون 20438	:	کمپیوٹر کمپوزنگ
پرنٹوئل، امرتسر	:	مطبع
۶۰ روپے (Rs. 60/-)	:	قیمت
(۱) مولوی عنایت اللہ صاحب - محلہ احمدیہ قادیان	:	ملنے کا پتہ
گورداسپو پنجاب 143516		
(۲) احمدیہ مسلم مشن نزد ڈی۔ جی۔ آفس، ٹھالو، سرینگر،		
کشمیر۔ فون نمبر 0194-476218		

حضرت خواجہ عبدالرحمن میر صحابی ولد میاں حبیب اللہ میر صحابی کی اس وقت چوتھی پشت چل رہی ہے
شجرہ ہذا دو پشتوں تک: حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب ریخ آفیسر کشمیر

1	2	3	4	5	6	7
ڈاکٹر عبدالمنان میر	خواجہ محمد عبداللہ میر	عبدالسلام میر	عبدالوہاب میر	امۃ الرحمن	امۃ الرحیم	امۃ اللہ

سات اولاد کی بالترتیب دوسری پشت مندرجہ ذیل:-

1.	عبدالکریم 2-	عبدالحق رحمن 3-	عبدالحمید رحمن 4-	امۃ الکریم 5-	امۃ الواثق 6-	امۃ الباسط 7-	امۃ السیاح
2.	1- ثناء اللہ 2-	مطیع اللہ 3-	برکت اللہ 4-	نصر اللہ 5-	ظفر اللہ 6-	محمد احمد 7-	منعمہ 8- ریحانہ
3.	1- عبدالحمون 2-	عبدالوکیل 3-	عبدالقدوس 4-	امۃ السلام 5-	شمیمہ		
4.	1- منیب الرحمن 2-	شہاب الرحمن					
5.	1- فرید احمد 2-	بشراء					
6.	1- شہباز احمد 2-	خالد محمود 3-	طارق محمود 4-	بشراء بی 5-	صفیہ		
7.	1- انجناز احمد 2-	منظر احمد 3-	بہتر احمد				

طالب دُعا

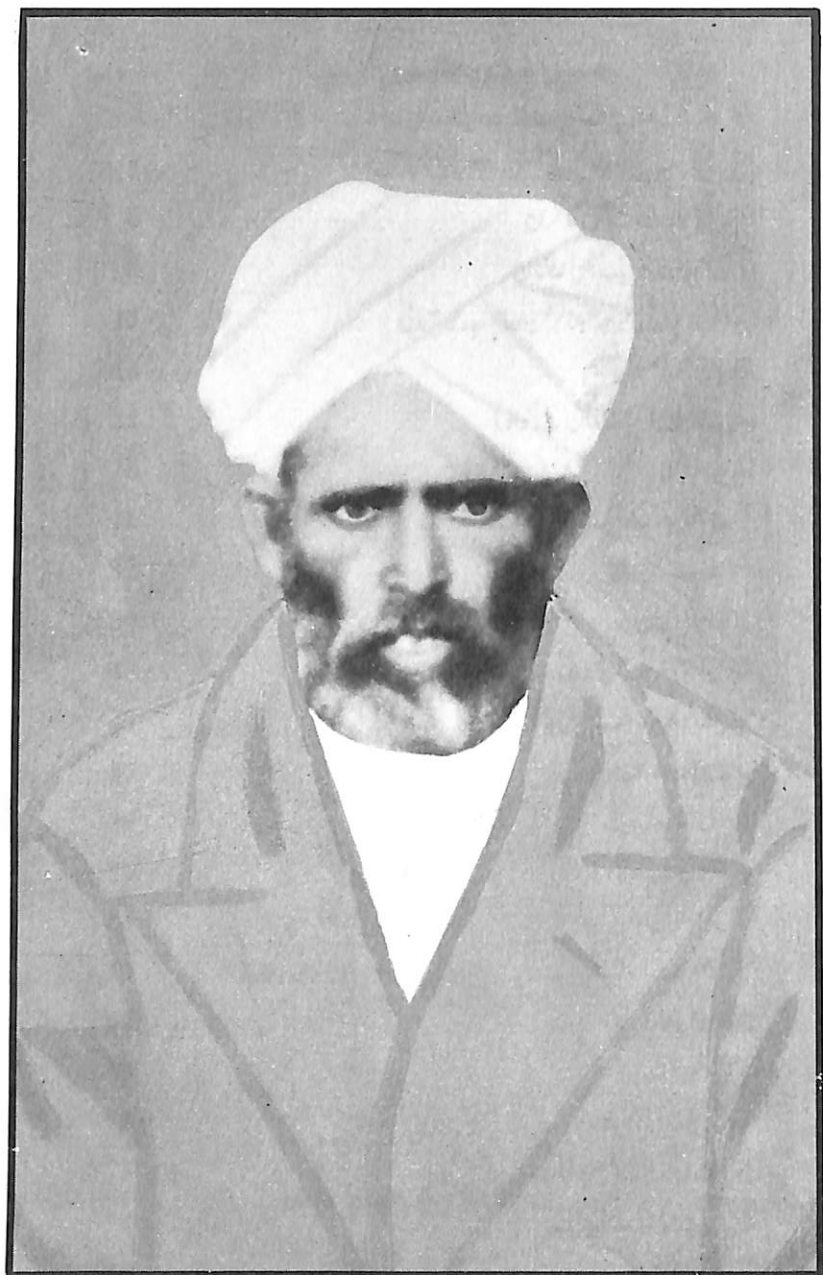
عبد الوہاب میر

Small rectangular stamp or label at the top right corner.

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

Handwritten notes or signatures in the left margin, possibly including a date or reference number.



حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب صحابی رنج آفیسر - کشمیر



Portrait of a man with a mustache, wearing a suit and tie.

صراحت مضمون

1	تبرہ از ملک صلاح الدین صاحب وسید عبدالحی صاحب
6	پیش لفظ۔ سیرت و سوانح کے متعلق حضور کی مبارک تحریر
8	خاندانی حالات۔ موضع گاگرن
13	قبول احمدیت کا ایک معجزانہ نشان
16	پیدائش و پرورش خواجہ عبدالرحمن صاحب میر صحابی
22	قادیان میں حصول تعلیم
26	احیائے موتی (ایک نشان کے گواہ)
28	ذریعہ معاش
32	محکمہ جنگلات کے ایک اعلیٰ افسر کے تاثرات
39	رشوت سے بیزاری
43	چچا جان کی کہانی
45	شادی اور حضرت عمرؓ اور صاحب صحابی کا ذکر
47	حضرت خواجہ صاحبؒ کی عائلی زندگی
49	پیاری والدہ صاحبہ مرحومہ
51	اولاد کی تعلیم و تربیت
61	چار پشتوں تک اولاد
63	شہل و اخلاق
64	شکل و صورت
65	چند مخصوص عادات
72	لباس و خوراک
73	درو و شریف کی عظمت
74	احمدیت کی برکت و مصروفیات
79	قادیان سے محبت و عقیدت
81	ایک مخلص مجب
	سچائی و دیانتداری

- 83 نرم اور پاک زبان کا استعمال
- 86 وسعتِ حوصلہ
- 87 غریب کی ہمدردی اور عزم و ہمت
- 89 تحریک جدید کے پانچ ہزار مجاہدین میں شرکت
- 92 تبلیغی معرکہ اور معجزہ
- 95 دُعا کا معجزہ
- 97 گوروواروں اور مندروں کا احترام
- 100 ایک عجیب و غریب واقعہ
- 103 مخالف احمدیت کو خدا کی مار
- 104 دوستوں سے اُلفت و مروت
- 107 ایفائے عہد اور دُعا کی تاثیر
- 110 پاکیزگی ایمان اور غصہ بصر
- 113 دیانت و تقویٰ
- 116 بحیثیت امیر جماعت جموں و کشمیر
- 121 روایات از سیرت المہدی
- 128 خط و کتابت
- 135 حضرت مسیح موعودؑ کے مبارک ہاتھوں کے لکھے کلمات
- 137 حضرت امانا جان کے مبارک تاثیرات
- 136 حضرت مصلح موعودؑ کے خطوط
- 138 حضرت مرزا بشیر احمد صاحبؒ کے خطوط
- 143 حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ کے خطوط
- 146 حضرت شہدائے کرام علیہم السلامؒ کے خطوط
- 148 حضرت مولوی زین العابدین ولی اللہ شاہ صاحب کا خط
- 152 اپنی اولاد کے نام خط

بسم الله الرحمن الرحيم نحمده ونصلی علیٰ رسولہ الکریم

ایک عاجزانہ تبصرہ

یہ حقیقت ہے کہ عالم احمدیت حضرت شیخ یعقوب علی عرفانی رضی اللہ تعالیٰ کا بے حد ممنون ہے کہ آپ اولین مؤرخ احمدیت ہیں۔ آپ نے اپنے مؤخر اخبار ”الحکم“ اور دیگر تالیفات میں حضرت مسیح الموعود علیہ السلام اور صحابہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے بارے میں ایک عظیم ذخیرہ جمع کر دیا ہے۔ جو تاریخ احمدیت کی ایک مستحکم بنیاد ہے۔ حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے بھی کئی درجن صحابہ کے اخلاص و اوصاف حسنہ تحریر کر کے ان کو زندہ جاوید بنا دیا ہے۔ حضور علیہ السلام فرماتے ہیں۔

”مبارک وہ جو ایمان لایا ☆ صحابہ سے ملا جب مجھ کو پایا“

محترم اخو یم عبد الوہاب صاحب میر کی خاکسار تعریف کئے بغیر نہیں رہ سکتا کہ آپ نے خصوصاً اپنے والد ماجد کے سوانح جمع کئے ہیں۔ بہتر ہو تا کہ صحابہ وادی کشمیر کا ایک مجموعہ بھی جمع کر دیا جائے۔ خاکسار 1941ء میں سیدنا حضرت خلیفۃ المسیح الثانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں بحیثیت پرائیوٹ سکرٹری خدمت سرانجام دے رہا تھا۔ بیماری کے باعث رخصت لے کر کشمیر گیا تھا۔ وہاں احباب سے گفتگو ہوئی کہ اس وقت حضرت راجہ غلام محمد خان صاحب چک ساکن ایمر پچھ ولی اللہ ہیں۔ اور یہ راجگان ضلع مظفر آباد سے آئے ہوئے ہیں۔ اور وادی کشمیر میں صرف حضرت خواجہ عبد الرحمن صاحب میر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ولی اللہ ہیں۔ اس موقع پر احباب سے ان کے رشوت نہ لینے، بیگار نہ لینے، اور نیکی اور تقویٰ کے بہت سے واقعات سنے گئے۔

اس سے پہلے ہم جماعت مولوی عبد الرحیم صاحب ابن حضرت مولوی شیر علی صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بھی ایسے واقعات حضرت عبد الرحمن صاحب میر کے تعلق سے سنے تھے۔ جو اپنی صحت کی کمزوری کی وجہ سے کئی سال موسم گرما میں ان کے پاس جایا کرتے تھے۔ ان کے ساتھ اس لئے گہرا تعلق تھا۔ کہ محترم عبد الرحمن صاحب میر حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے عہد مبارک میں جب تعلیم پانے کے لئے قادیان آئے۔ تو آپ کا قیام حضرت مولوی شیر علی صاحب

کے ہاں رہا۔ اور بعد میں جب میر صاحب کے بچے تعلیم پانے کے لئے قادیان آئے تو وہ بھی حضرت مولوی صاحب کے ہاں مقیم رہے۔ اور آپ کی رفیقہ حیات کے مودلطف و کرم رہے۔ خاکسار نے بھی حضرت عبدالرحمن صاحب میر کے متعلق جو حالات قلمبند کئے تھے یا احباب سے بالمشافہ سنے تھے۔ وہ سب واقعات اضافہ کے ساتھ محترم عبدالوہاب صاحب کو لکھنے کی توفیق ملی ہے۔ فالحمد للہ۔

نیز خاکسار عرصہ سے چاہتا تھا کہ صحابہ کشمیر کے حالات شائع ہوں۔ الحمد للہ۔ محترم موصوف نے یہ کارنامہ سرانجام دیا جو نہایت قابل قدر اور ایمان افروز ہے۔ فجزاہ اللہ احسن الجزاء فی الدین خیراً۔

خاکسار

ملک صلاح الدین درویش

مؤلف اصحاب احمد۔ قادیان

4/1/1999(1378)

☆☆☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

کوثر الرحمن پر ایک حقیقت افروز تبصرہ

مکرم سید عبدالحی صاحب ناظر اشاعت ربوہ کے ذاتی تاثرات اور ایک واقعہ جو حضرت خواجہ صاحب مرحوم کی سیرت پر روشنی ڈال رہا ہے۔
بسم اللہ الرحمن الرحیم

حضرت خواجہ عبد الرحمن صاحب میر ریٹائرڈ ریجن آفیسر محکمہ جنگلات ریاست جموں و کشمیر حضرت خواجہ عبد الرحمن صاحب میر وادی کشمیر کے وہ خوش قسمت فرد ہیں جن کو حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی زندگی میں قادیان دارالامان میں تعلیم و تربیت حاصل کرنے کی سعادت نصیب ہوئی۔ آپ نے اپنی آنکھوں سے قادیان کے وہ شب و روز دیکھے جب ہر روز کوئی نہ کوئی نشان ظاہر ہوتا تھا۔ اور اپنے کانوں سے وہ الہامات سنے جو شب و روز مسیح موعود علیہ السلام پر نازل ہوتے تھے۔ آپ نے صحابہ کی وہ کہکشاں بھی ملاحظہ کی جس کا ہر ستارہ روشن اور منور تھا۔ اور پھر اسی نور میں آپ خود بھی نہا گئے۔ آپ کو مزید یہ سعادت ملی کہ فرشتہ سیرت حضرت مولوی شیر علی صاحب نے آپ کو پدرانہ شفقت کیساتھ اپنے گھر میں رکھا۔ آپ کی صحبت کا حضرت خواجہ عبد الرحمن صاحب کی سیرت پر گہرا اثر تھا۔ میں نے آپ کو بچپن میں دور سے کئی مرتبہ دیکھا ہے۔ سادگی۔ انکساری۔ اور عاجزی کی چلتی پھرتی تصویر تھی۔ عبادت کرتے بھی دیکھا ہے۔ وہی انہماک اور بودگی نظر آئی جو حضرت مولوی شیر علی صاحب میں تھی۔

صرف ایک واقعہ ہے جس میں مجھے چند دن آپ کو قریب سے دیکھنے کا موقع ملا۔ تقسیم ملک کے وقت قادیان میں کشمیر کے ہم تین طالب علم تھے۔ محمد یوسف ڈار ابن عبد الرزاق ڈار عبد الغنی ملک ابن عبد القادر ملک اور خاکسار سید عبدالحی ابن سید عبد المنان۔

تقسیم ملک سے صرف دو ہفتے قبل ہم گرمیوں کی تعطیلات گزارنے کشمیر آئے ملک تقسیم ہوا تو شدید فسادات شروع ہو گئے۔ کشمیر باہر کی دنیا سے کٹ گیا۔ کچھ کچھ خبریں آتی تھیں کہ مشرقی پنجاب سے تمام مسلمان ہجرت کر کے پاکستان چلے گئے ہیں۔ پھر یہ خبریں بھی ملیں کہ قادیان کے احمدیوں کو بھی ہجرت پر مجبور کر دیا گیا ہے۔ یہ بھی خبریں ملیں کہ جماعت کے تمام ادارے

حتیٰ کہ خلیفۃ المسیح الثانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ بمع تمام جماعت کے قادیان سے ہجرت کر کے پاکستان چلے گئے ہیں۔ اور

قادیان میں صرف ۳۱۳ بچے جاں نثاری رہ گئے ہیں۔ اس کے بعد کشمیر ہندو پاکستان کا میدان جنگ بن گیا۔ نہ قادیان جانے کا راستہ محفوظ تھا نہ پاکستان جانے کی کوئی سبیل تھی۔ ہم طالب علموں کا وقت ضائع ہوتا رہا۔ آخر جنوری ۱۹۴۹ء میں ہندوستان اور پاکستان میں اقوام متحدہ کی مداخلت سے جنگ بندی ہو گئی۔ مشرقی پنجاب میں بھی حالات کچھ معمول پر آنے لگے۔ حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میران دونوں ریاست جموں و کشمیر کے امیر تھے اور حضرت مولوی عبدالواحد صاحب مرکزی مبلغ سلسلہ ان دونوں بزرگوں کی خدمت میں نے عرض کی کہ حالات کچھ سدھر گئے ہیں۔ ہم واقف زندگی ہیں اس لئے مناسب ہوگا کہ اب ہم قادیان جا کر اپنی تعلیم جاری رکھیں دونوں بزرگوں نے ہمارے لئے دعائیں بھی کیں اور حالات کا جائزہ بھی لیا۔ آخر طے ہوا کہ وسط مئی میں ہم قادیان روانہ ہوں گے۔ دونوں بزرگوں نے یہ ذاتی فرض سمجھا کہ سلسلہ کی ان امانتوں کو وہ خود سفر پر روانہ کریں، سرینگر پہنچے اور دفتر اصلاح بازار مائی سیماں میں قیام کیا۔ سرینگر سے جموں اور پھر وہاں سے قادیان کے سفر کے بارہ میں معلومات حاصل کیں۔ ابھی حتمی پروگرام طے نہیں ہوا تھا کہ دفتر اصلاح میں اچانک رئیس بانڈی پورہ خواجہ ثناء اللہ مرحوم وارد ہوئے آپ بہت وجہ تھے۔ شخصیت بارعب تھی۔ اور سلسلہ کے فدائی تھے۔ آپ کو جب ہمارے ارادہ کا علم ہوا تو دونوں بزرگوں سے فرمانے لگے کہ خلیفۃ المسیح تولاہور میں ہیں۔ سلسلہ کے ادارے بھی پاکستان منتقل ہو گئے ہیں آپ ان بچوں کو وہاں بھیجیں۔ ہمارے بزرگ سادہ تھے اور دنیا کے معاملات سے بے خبر۔ انہوں نے کہا کہ پاکستان کس طرح بھیجیں۔ کوئی راستہ تو ہے نہیں۔ مرحوم خواجہ ثناء اللہ صاحب فرمانے لگے کہ یہ ذمہ داری آپ مجھ پر ڈال دیں۔ میں ان کو پاکستان حفاظت کے ساتھ بھجواؤں گا۔ انہوں نے جو راستہ تجویز کیا اس میں ایک ایسا گاؤں آتا تھا جس کی آبادی مخلص احمدیوں پر مشتمل ہے۔ اس گاؤں سے آگے غیر آباد پہاڑوں کے طویل سفر کے بعد آزاد کشمیر کا علاقہ آتا تھا۔ اس گاؤں سے ہمیں مخلص احمدی گائیڈ مہیا ہونے تھے۔ سارے انتظامات طے ہو گئے تو حضرت خواجہ میر عبدالرحمن اور

حضرت مولوی عبدالواحد صاحب دونوں بزرگوں نے کہا کہ پھر ہم سلسلہ کی امانت ان تینوں بچوں کو اس گاؤں تک پہنچائے بغیر یہاں سے واپس نہیں جائیں گے۔ خواجہ ثناء اللہ صاحب نے بہتیرا سمجھایا کہ اس میں آپ کو کافی راستہ پیدل چلنا پڑیگا۔ آپ دونوں معمر ہیں۔ آپ کے لئے مشکل ہوگی مگر یہ دونوں بزرگ نہیں مانے اور پھر طے شدہ پروگرام کے مطابق طویل پیدل راستہ طے کر کے ہمارے ساتھ اس گاؤں پہنچے۔ وہاں کے مخلص احمدیوں نے ہمیں بحفاظت آزاد کشمیر پہنچانے کو انہوں نے ایک مقدس فرض سمجھ کر اپنی جانوں کو خطرے میں ڈال کر نبھانے کا عہد کیا۔ جب ہم جمعہ کی اجتماعی نماز سے فارغ ہو کر روانہ ہونے لگے۔ تو دونوں بزرگوں نے بہت تضرع سے دعائیں کر کے رخصت کیا اور پھر بتایا کہ جب تک آپ کے یہ گائیڈ آپ کو بحفاظت چھوڑ کر واپس نہیں آجاتے ہم دونوں یہاں منتظر رہیں گے اور آپ لوگوں کے لئے مسلسل دعائیں کریں گے۔

اور پھر ہم الہی بزرگوں کی دعاؤں کے سایہ میں بارڈر کراس کر گئے۔ اور بحفاظت لاہور پہنچ کر حضرت خلیفۃ المسیح الثانیؒ کی خدمت میں حاضری دی۔

اس پیدل سفر میں علاوہ پہاڑی علاقہ کی مشکلات کے یہ خطرہ بھی تھا کہ اگر حکومت کے کارندوں کو شک بھی پڑا کہ یہ لوگ سرحد عبور کرنے جا رہے ہیں تو ان کے لئے ہمیں اپنے بزرگوں سمیت گرفتار کرنے سے کوئی نہیں روک سکتا تھا۔ لیکن یہ دونوں بزرگ بڑھاپے اور ضعیفی کے باوجود بہت بشاشت کے ساتھ ہمارے ساتھ آئے۔ یہ ان کا اللہ تعالیٰ پر توکل اور سلسلہ کے وقف زندگی طلباء کے لئے محبت و احترام کا جذبہ تھا۔ اللہم اغفر لہما۔ وارجہما

والسلام
سید عبدالحی ربوہ

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ وَعَلَى عَبْدِهِ الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ
مبارک وہ جو ایمان لایا صحابہ سے ملا جب مجھ کو پایا
وہی مے انکوساتی نے پلا دی فسمان الذی اخزی الاعادی
(حضرت مسیح موعود علیہ السلام)

کَوْثَرُ الرَّحْمَنِ

سیرت وسوانح حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میر رضی اللہ تعالیٰ عنہ
”صحابی ابن صحابی“ ریٹائرڈ فارسٹ ریج آفیسر۔ وادی کشمیر۔

پیش لفظ:-

اگر ہر بال ہو جائے سنخور ☆ تو پھر بھی شکر ہے امکان سے باہر
اس خداوند کریم کا جتنا بھی شکر ادا کیا جائے کم ہے جس نے محض اپنے فضل و کرم سے مجھ ناچیز
کو ایک بزرگ صحابی کے ایمان افروز حالات اور واقعات کے جمع کرنے کی توفیق بخشی۔ جب
کہ مجھ میں نہ کوئی علمی صلاحیت ہے اور نہ میں کوئی مصنف یا نثر نگار ہوں۔ اس کے ساتھ ساتھ
میں اپنے ان دوست احباب اور بہن بھائیوں کا بھی بے حد ممنون و مشکور ہوں جن کی پر زور
تحریک اور حوصلہ افزائی نے مجھے اس تالیف پر آمادہ کیا۔ اللہ تعالیٰ ان سب کو جزائے خیر عطا
فرمائے۔ آمین۔

میرے دل میں یہ خواہش عرصہ دراز سے کروٹ لے رہی تھی کہ کاش میں جیتے جی اپنے
فرشتہ خصلت ”حضرت والد صاحب“ کی سیرت وسوانح کا اجمالی خاکہ ضبط تحریر میں لاؤں اور
اپنے ذمہ ایک فریضہ لازمہ کی انجام دہی سے عہدہ برآ ہوں۔

الحمد للہ کہ میں اس نیک مقصد میں کسی حد تک کامیاب ہو گیا۔ ہر چند کہ یہ کوشش ”دریا کو کوزے میں بند“ کرنے کے مترادف ہے۔

یہ سیرت و سوانح ”کوثر الرحمن“ کے نام سے اس لئے منسوب ہے کہ یہ نام اپنی معقولیت کے اعتبار سے مناسب اور موزوں پایا گیا۔

کوثر اپنی معنویت میں گہرائی اور وسعت رکھتا ہے۔ جنت کی ایک میٹھی نہر کو کوثر کہتے ہیں اور رحمن ایک لاناہتا اور اتھاہ سمندر ہے۔ اس لئے کوثر اور رحمن ملکر ایسی ترکیب بن گئی ہے، یعنی رحمن کی خیر و برکت اور یہ مفہوم حضرت خواجہ صاحب رضی اللہ عنہ کی شخصیت پر بھی دلالت کرتا ہے۔ خاکسار کے نزدیک دوسری مناسبت ”کوثر“ کی یہ بھی ہے کہ اباجی کے آبائی گاؤں موضع ”گاگرن“ سے لیکر ”آسنور“ تک کے علاقہ کو ایک قریبی جھیل موسوم ”کوثر ناگ“ اپنا بیٹھا اور صاف پانی سال بھر مہیا کرتی ہے۔ اور کشمیر کے اکثر کھیتوں کو سیراب کر کے سرسبز و شاداب بنا دیتی ہے۔ اور اس کا پانی خلق خدا کے لئے کوثر جیسی تاثیر اپنے اندر رکھتا ہے۔ اس طرح حضرت خواجہ صاحب رضی اللہ عنہ کی ذات خلق خدا کے لئے ایک کوثر سے کم نہ تھی۔ حضرت الحاج مرزا بشیر الدین محمود احمد رضی اللہ عنہ لکھتے ہیں:-

”کوثر کے معنی ہر چیز کے کثرت کے ہیں۔ نیز ایسے شخص کے جو خیرات کرنے والا اور سخی ہو“۔ تیسری سب سے افضل بات جو جھیل کوثر ناگ سے منسوب ہے وہ یہ کہ دشوار گزار پہاڑوں اور اس اونچی ترین جھیل کوثر ناگ تک پہنچنے کے کئی راستوں کی مٹی، پتھروں، سرسبز درختوں اور ندی نالوں کے شفاف پانی نے حضرت اقدس مسیح موعود علیہ الصلوٰۃ والسلام کے اہل خانہ کے قدموں کو چوما ہے۔ خصوصاً حضرت اماں جان رضی اللہ عنہا (زوجہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام) بہ نفس نفیس حضرت مصلح موعود رضی اللہ عنہ کے ساتھ جھیل کوثر ناگ تک پہنچ گئی ہیں۔ چوتھی کوثر ناگ کے ساتھ یہ بھی ایک باعث فضل و برکت نیک شگون ہے کہ حضرت مولوی عبدالواحد صاحب فاضل مبلغ سلسلہ کشمیر کا ایک رویا ”تاریخ احمدیت کشمیر“ (مؤلفہ محمد اسد اللہ قریشی) میں صفحہ ۱۱۸ پر یوں درج ہے۔

”ایک روای میں دیکھا کہ کشمیر کے ایک مشہور چشمہ (موضع آسنور کے قریب) کوثر ناگ کو جانے والے راستے پر حضرت رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم کے اصحاب کبار رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا سنگین پہرہ ہے۔ اصحاب شتر سوار ہیں اور چشمہ پر سوائے اس کے کسی کو جانے نہیں دیتے جو پاس دکھاتا ہے۔ میں نے دیکھا کہ احمدی احباب بکثرت پاس دکھاتے اور آگے بڑھنے کی اجازت پاتے ہیں“ ۱

یادر ہے جمیل کوثر ناگ سطح سمندر سے پندرہ ہزار فٹ کی بلندی پر واقع ہے۔ مولوی صاحب موصوف مرحوم کا یہ روایا انشاء اللہ احمدیت کی ترقی اور افضال و برکات کا روشن نشان ہے۔ اور کوثر کی میٹھی نہر سے احمدی احباب ہمیشہ مستفید و مستفیض ہوتے رہیں گے۔ نیز ساری دنیا اس وقت جماعت احمدیہ کے ذریعہ جس ”آب کوثر سے سیراب ہو رہی ہے وہ دراصل آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ذریعہ جاری کردہ فیوض روحانی کے اظلال و آثار ہی ہیں۔ جیسا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام فرماتے ہیں:-

بہار آئی ہے اس وقت غزاں میں ☆ لگے ہیں پھول میرے بوستان میں

خاکسار :- حاجی عبدالوہاب میر

ابن حضرت خواجہ عبدالرحمن میر رضی اللہ عنہ

بسم الله الرحمن الرحيم

سیرت و سوانح کے متعلق حضرت مسیح موعود علیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے ہیں

”یہ بات ظاہر ہے کہ جب تک کسی شخص کے سوانح کا پورا نقشہ کھینچ کر نہ دکھلایا جائے تب تک چند سطر میں جو اجمالی طور پر ہوں کچھ بھی فائدہ پہلک کو نہیں پہنچا سکتیں۔ اور انکے لکھنے سے کوئی نتیجہ معتد بہ نہیں پیدا ہوتا۔ سوانح نویسی سے اصل مطلب یہ ہے کہ اس زمانہ کے لوگ یا آنے والی نسلیں ان لوگوں کے واقعات زندگی پر غور کر کے کچھ نمونہ ان کے اخلاق یا ہمت یا زہد و تقویٰ یا علم و معرفت یا تائید دین یا ہمدردی نوع انسان یا کسی اور قابل تعریف ترقی کا اپنے لئے حاصل کریں۔ اور کم از کم یہ کہ قوم کے اولوالعزم لوگوں کے حالات معلوم کر کے اس شوکت و شان کے قائل ہو جائیں جو اسلام کے عمائد میں ہمیشہ سے پائی جاتی رہی ہیں۔ تا اسکو حمایت قوم میں مخالفین کے سامنے پیش کر سکیں اور یہ کہ ان لوگوں کے مرتبت یا صدق اور کذب کی نسبت کچھ رائے قائم کر سکیں۔ اور ظاہر ہے کہ ایسے امور کے لئے کسی قدر مفصل واقعات کے جاننے کی ہر ایک کو ضرورت ہوتی ہے۔ اور بسا اوقات ایسا ہوتا ہے کہ ایک شخص نامور انسان کے واقعات پڑھنے کے وقت نہایت شوق سے اس شخص کے سوانح کو پڑھنا شروع کرتا ہے اور دل میں جوش رکھتا ہے کہ اس کا دل حالات پر اطلاع پا کر اس سے کچھ فائدہ اٹھائے تب اگر ایسا اتفاق ہو کہ سوانح نویس نے نہایت اجمال پر کفایت کی ہو لائف کے نقشہ کو صفائی سے نہ دکھلایا ہو تو یہ شخص نہایت ملول خاطر اور مقبض ہو جاتا ہے اور بسا اوقات اپنے دل میں ایسے سوانح نویس پر اعتراض بھی کرتا ہے۔ اور درحقیقت وہ اس اعتراض کا حق بھی رکھتا ہے۔ کیونکہ اس وقت نہایت اشتیاق کی وجہ سے اس کی مثال ایسی ہوتی ہے کہ جیسے ایک بھوکے کے آگے خوان نعمت رکھا جائے اور معاً ایک لقمہ کے اٹھانے کے ساتھ ہی اس خوان کو اٹھالیا جائے۔ اس لئے ان بزرگوں کا فرض ہے کہ جو سوانح نویسی کے لئے قلم اٹھادیں کہ اپنی کتاب کو مفید عام اور ہر عزیز اور مقبول عام بنانے کے لئے نامور انسانوں کی سوانح کو صبر اور فراخ حوصلگی کے ساتھ اس قدر ربط سے لکھیں اور ان کی لائف کو ایسے طور سے مکمل کر کے دکھلا دیں کہ انکا پڑھنا انکی ملاقات کا قائم مقام ہو جائے۔ تا اگر ایسی خوش بیانی سے کسی وقت خوش ہوں تو اس سوانح نویس کی دنیا اور آخرت کی بہبودی کے

لئے دعا بھی کرے۔ اور صفحات تاریخ پر نظر ڈالنے والے خوب جانتے ہیں کہ جن بزرگ محققوں نے نیک نیتی اور افادہ عام کے لئے قوم کی ممتاز شخصیتوں کے تذکرے لکھے ہیں انہوں نے ایسا ہی کیا۔“ (کتاب البریہ صفحہ ۱۵۹)

(۲) احمدی بزرگوں کی یادیں زندہ کرنے کی مہم ساری دنیا میں چلائی چاہئے۔

(از سیدنا حضرت امیر المومنین خلیفۃ المسیح الرابع ایدہ اللہ تعالیٰ بنصرہ العزیز)

”میں نے دیکھا ہے کہ بہت سے ایسے بزرگ، آباء و اجداد جنہوں نے حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے زمانہ میں یا آپ کے بعد خلافت اولیٰ اور خلافت ثانیہ میں بیعتیں کی تھیں اور غیر معمولی دینی ترقیات حاصل کیں، غیر معمولی قربانیاں دیں انکا ذکر اگلی نسلیں بھول رہی ہیں۔ اور ان کے ماں باپ بھی انکے ذکر کو زندہ نہیں رکھتے نتیجتاً وہ کتابوں کے پھول بنتے جا رہے ہیں اور کتابیں بھی ایسی جنکو کم لوگ پڑھتے ہیں۔ پس یہ انداز جو ہے یہ زندہ رہنے کا انداز نہیں ہے۔ قرآن کریم نے ہمیں زندگی کا جو راز سمجھایا ہے اس کی رو سے آپ کو اپنے آباء و اجداد کے ذکر کو لازماً زندہ رکھنا ہوگا۔ چنانچہ گزشتہ چند سالوں میں..... میں نے جماعتوں کو بار بار نصیحت کی کہ وہ سارے خاندان جن کے آباء و اجداد میں صحابہ یا بزرگ تابعین تھے انکو چاہئے کہ اپنے خاندان کا ذکر خیر اپنی آئندہ نسلوں میں جاری کریں۔

مگر افسوس ہے کہ ابھی تک اس طرف کما حقہ توجہ نہیں دی گئی...

پس تمام دنیا میں جماعتوں کو احمدی بزرگوں کی یادوں کو زندہ کرنے کی مہم چلائی چاہئے اور تمام تربیتی اجلاسوں میں انکے ذکر خیر کو ایک لازمی حصہ بنادینا چاہئے۔ سب سے زیادہ زور اس بات پر ہونا چاہئے کہ آنے والی نسلوں کو اپنے بزرگ آباء و اجداد کے اعلیٰ کردار اور اعلیٰ اخلاق کا علم ہو۔ انکی قربانیوں کا علم ہو۔ (خطبہ جمعہ ۳۰/اپریل ۱۹۹۳ء)

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

بسم اللہ الرحمن الرحیم

خاندانی حالات

موضع گاگرن شویپان :- گاگرن ایک گاؤں اور شویپان ایک پرانا قصبہ ہے۔ قرب میں ہونے کی وجہ جب موضع گاگرن کا نام لیا جاتا ہے تو گاگرن شویپان ہی کہا جاتا ہے۔ گاگرن شویپان وادی کشمیر کی جنوبی سرحد کے نزدیک سطح سمندر سے چھ ہزار سات سو بائیس فٹ کی بلندی پر ایک پرانا قصبہ آباد ہے اور کشمیر کی راجدھانی شہر سری نگر سے چونتیس میل دور ہے۔ پیر پنچال کے پہاڑ کے نزدیک ہونے کے سبب یہاں کی آب و ہوا بہت جانفزا ہے اور جنوب و مغرب کی طرف سرسبز جنگلات اور برف پوش پہاڑ ہر وقت اپنی پرفراہی دکھاتے ہیں عام لوگوں کا پیشہ تجارت ہے۔ زمانہ سلف میں یہ قصبہ مغل سلاطین، پٹھان، سکھ حکمران اور بزرگان دین کی گزر گاہ رہا ہے۔ اس وجہ سے اسکی ایک تاریخی اہمیت بھی ہے۔

آجکل موضع گاگرن قصبہ شویپان کے ساتھ ملا ہوا ہے اور ایک ہی بستی معلوم ہوتی ہے گاگرن کے عام لوگوں کا پیشہ زراعت اور باغبانی ہے۔ لیکن چند تجارت پیشہ اور ملازم بھی ہیں۔ اکثر لوگ مختق اور سادہ لوح ہیں۔ ماضی میں اس بستی کے لوگ مذہبی تعلیم ملاؤں کے پاس محدود رنگ میں حاصل کرتے تھے۔ اس زمانے میں تعلیم و تہذیب کا فقدان ہی تھا۔ اس گاؤں کی اکثریت حنفیہ مسلک سے تعلق رکھتی ہے۔ اور کچھ اہل حدیث بھی ہیں۔ گاؤں کی اکثریت قوم ”میر“ سے وابستہ ہے۔

میاں حبیب اللہ صاحب ”صحابی“ ولد میاں ابراہیم صاحب میر موضع گاگرن شویپان کشمیر کے اسی ”میر“ خاندان میں ایک سادہ، نیک فطرت اور انتہائی غریب شخص میاں حبیب اللہ میر تھے جو اپنی محنت شاقہ کی حلال روٹی اس طرح کماتے تھے کہ ہاتھ سے کپڑے کی ٹوپیاں بنا کر فروخت کیا کرتے تھے جو **کشمیری ٹوپی** کہلاتی ہے اور عام کشمیری زمیندار یہ ٹوپی زیب سر کئے ہوتے ہیں۔ یہ ٹوپی کشمیریوں کی ایک نمایاں نشانی اور پہچان بھی ہے۔ حضرت رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان ہے ”اَلْكَاسِبُ حَبِيبُ اللّٰهِ“ یعنی

ماہر فن خدا کا پیارا ہوتا ہے اس لئے
 یہاں حبیب اللہ اسم بسمیٰ ہے۔ جو اپنے ہاتھ کی بنائی ہوئی ٹوپیاں فروخت کر کے اپنے اہل
 وعیال کی روزی روٹی کا سامان مہیا کرتے تھے۔ جب گھر میں کوئی کھانے کی چیز موجود نہ ہوتی
 تب بھی اپنے مولیٰ پر پورا توکل رکھتے تھے۔ دادامیاں حبیب اللہ مرحوم کا اسی تعلق سے دعاؤں
 اور توکل علی اللہ کا ذکر ملتا ہے۔ خاکسار کے بھائی خواجہ محمد عبداللہ میر آف راولپنڈی نے مجھ سے
 یہ بیان کیا کہ والدہ صاحبہ نے کہا کہ دادا جان کہا کرتے تھے...

ایک دفعہ کشمیر میں قحط پڑا اناج بہت نایاب ہوا۔ میں (میاں حبیب اللہ میر) کمرے میں
 ٹوپیاں بنارہا تھا دوسرے کمرے سے بیوی نے آواز دی کہ آج گھر میں کوئی اناج نہیں ہے مہمان
 بھی ہیں اب کیا کھائیں میں نے جواباً کہا... آگ جلاؤ اور برتن میں پانی گرم کر لو تو وفادار بیوی
 نے ایسا ہی کیا۔ تھوڑے ہی وقفے کے بعد ایک گاہک کمرے میں داخل ہوا اور کہنے لگا میاں
 حبیب اللہ ترازو لے آؤ میرے پاس چاول ہیں چاولوں کے بدلے مجھے ٹوپیاں دیدو۔ میں نے
 چاول تول کر اس کو ٹوپیاں دے دیں اور گاہک چلا گیا۔ میں نے اپنی بیوی (والدہ خواجہ عبدالرحمن
 صاحب میر) کو آواز دی دیگ میں ابال آیا ہوگا چاول لیکر پکا لو۔ نیز دادا جان اکثر کہا کرتے تھے
 ...ایک دن ہم لوگ بھی ضرور امیر ہونگے یعنی

۔ رنگہ لائے گی ہماری فاقہ مستی ایک دن

میرے خیال میں اللہ تعالیٰ نے اسی محنت شاقہ، نیک نیتی اور خلوص کا یہ بہترین بدلہ عطا کیا
 کہ خواجہ عبدالرحمن جیسا فرشتہ خصلت بیٹا عطا کیا جو امیر ہونے کے باوجود دل کا حلیم تھا اور غریب
 پرور تھا اور دنیوی اعتبار سے آفیسر ہونے کے باوجود عاجزی اور مسکینی کا مجسمہ تھا۔ میاں حبیب
 اللہ میر اہل حدیث تھے اور قرآن و حدیث جانتے تھے۔ آپ کے تین لڑکے خواجہ عبدالرحمن
 صاحب میر ۲، عبدالعزیز صاحب میر ۳، عبدالقادر صاحب میر اور دولڑکیاں ۴، ائمۃ اللہ صاحبہ اور
 ۵، حلیمہ تھیں۔

قبول احمدیت کا ایک معجزانہ نشان

میاں حبیب اللہ میر اور ان کے چھوٹے بھائی عبدالاحد میر کثر اہل حدیث تھے۔ اس گمنام بستی موضع گاگرن میں ان دنوں احمدیت کا پیغام ابھی نہیں پہنچا تھا لیکن اللہ تعالیٰ نے خواب کے ذریعہ میاں حبیب اللہ تک پیغام احمدیت پہنچایا۔ اور بعد میں حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے اشتہار و رسائل کشمیر میں پہنچے جیسا کہ سیرۃ المہدی (مرتب فرمودہ) حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم۔ اے حصہ سوئم روایت نمبر ۶۰۲ میں ذکر آیا ہے۔ جس کے راوی اباجی مرحوم ہیں...

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ خواجہ عبدالرحمن صاحب ساکن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ میرے والد صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ میں پہلے اہل حدیث تھا جب حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے اشتہارات و رسائل کشمیر میں پہنچے تو سب سے پہلے میرے کان میں حضور کا یہ شعر پڑا

مولوی صاحب کیا یہی توحید ہے ☆ سچ بتا کس دیو کی تقلید ہے

سو میں وہاں پر ہی بیعت کے لئے بے قرار ہو گیا اور نفس میں کہا کہ افسوس اب تک ہم دیو کی ہی تقلید کرتے رہے ہیں سو میں نے تم دونوں بھائیوں کو (خاکسار عبدالرحمن میر اور برادر مر عبد القادر) سری نگر میں اپنے ماموں کے پاس چھوڑ کر فوراً قادیان کی راہ لی اور جب یہاں پہنچا تو حضرت مسیح موعود علیہ السلام سے عرض کیا کہ حضور میری بیعت لے لیں۔ حضور نے فرمایا ”بیعت کیا ہے۔ بیعت عبرت ہے۔“ اس کے بعد میری اور چند اصحاب کی بیعت لے لی۔ خاکسار عرض کرتا ہے کہ حضرت صاحب کا یہ فرمانا کہ ”بیعت عبرت“ ہے اس سے یہ مراد معلوم ہوتا ہے کہ بیعت کی حقیقت یہ ہے کہ انسان اپنی گزشتہ زندگی کو ایمان اور اعمال کے لحاظ سے عبرت کا ذریعہ بنا کر آئندہ کے لئے زندگی کا نیا ورق الٹ لے۔

میرے چچا حاجی محمد عبداللہ صاحب میر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا...

”میرے چچا حبیب اللہ صاحب میر مرحوم خواب کی بنا پر براستہ مغل روڈ پیدل چلکر قادیان گئے۔ اور جب حضرت مسیح موعود علیہ السلام کو دیکھا تو فوراً ہی امام الزمان کی حقیقت ان پر آشکار

ہوئی کہ واقعی آپ اپنے دعویٰ میں سچے ہیں پھر قادیان سے ہی امام الزمان کی بیعت کر کے واپس پیدل اپنے گاؤں گاگرن کشمیر پہنچے۔ یہاں پہنچ کر اعلانیہ کہہ دیا کہ میں نے حضرت مرزا غلام احمد قادیانی کو مسیح موعود مان لیا ہے میں ان کی بیعت کر کے آیا ہوں اور احمدیت قبول کر چکا ہوں۔ جو نہی لوگوں کو پتہ چلا کہ میاں حبیب اللہ احمدی ہوا ہے تو چاروں طرف سے سخت مخالفت شروع ہوئی اور مخالفوں نے ہر قسم کی تکلیف دینی شروع کی لیکن پچا ان پڑھ ہونے کے باوجود احمدیت کے حق میں ایسے دلائل ملاؤں کے سامنے پیش کرتے تھے کہ وہ بحث کی مجلسوں سے دم دبا کر بھاگ جاتے تھے اور اپنی اصطلاح میں کہتے تھے کہ میاں حبیب اللہ میر ”کوٹہ“ ہوا ہے۔ یعنی اس نے نیا ہی مذہب اختیار کیا ہے۔ لیکن آپ حقیقی اسلام کو قبول کر کے شاداں و خنداں تھے کہ مجھے اللہ نے یہ توفیق دی کہ جیتے جی ہی اپنی مراد کو پالیا جیسا کہ آپ کے متعلق سیرۃ المہدی جلد چہارم (غیر مطبوعہ) میں یہ روایت درج ہے۔

(۱۲۳۹) بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ میر عبد الرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہمولہ کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ میرے والد صاحب پہلے حنفی تھے پھر اہل حدیث ہوئے اس وقت وہ اپنے دوست مولوی محمد حسین صاحب ساکن آسنور (والد مولوی عبد الواحد صاحب) کو کہا کرتے تھے کہ ہم لوگ اب بڑے موحد ہونے کا دعویٰ کرتے ہیں ممکن ہے کوئی ایسی جماعت اور نکل آئے جو ہم کو بھی مشرک گردانے۔ والد صاحب فرماتے چنانچہ ایسا ہی ہوا کیونکہ ہم لوگ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو مردوں اور پرندوں کا خالق مانتے تھے لیکن جب میرے کانوں میں یہ شعر حضرت اقدس مسیح موعود کا سنا

تھا وہی اکثر پرندوں کا خدا اس خدا دانی پہ تیرے مرجبا
مولوی صاحب کیا یہی توحید ہے سچ کہو کس دیو کی تقلید ہے

اس وقت مجھے ہوش آیا اور میں نے تم دونوں بھائیوں کو سری نگر اپنے ماموں کے پاس چھوڑا اور قادیان پیدل چلا گیا۔ اور وہاں بیعت سے مشرف ہوا الحمد للہ علی ذالک۔

اللہ تعالیٰ نے اس وادی گلگوش میں پہلے ہماری تحصیل کو لگام ضلع اتنت ناگ (اسلام آباد) کشمیر کے مختلف دیہات میں اس باران رحمت (احمدیت) کا نزول فرمایا یعنی موضع آسنور،

کوریل، ریشی نگر، یاری پورہ، شورت، ناصر آباد (کئی پورہ)، گاگرن، ایمر چھ، چک اندورا سے اکثر احباب کو حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے ہاتھ پر بیعت کرنے کا اور صحابی ہونے کا شرف حاصل ہوا۔ یہ زمانہ تقریباً ۱۸۹۴ء سے ۱۹۰۶ء تک کا تھا۔ تاریخ احمدیت کشمیر میں مذکور ہے کہ میاں حبیب اللہ میر نے ۱۹۰۰ء سے قبل ہی بیعت کی تھی اور اسی بستی موضع گاگرن سے محمد میر صاحب اور جمال دین صاحب حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے صحابی تھے۔ ۱۔ راجہ فضل الرحمن خان صاحب ابن حضرت راجہ حیدر خان رضی اللہ تعالیٰ عنہ (یاری پورہ) نے مجھ سے بیان کیا کہ واقعی میاں حبیب اللہ میر جو شیلہ احمدی اور متقی تھے۔ مخالفین احمدیت کو جرأت سے تبلیغ کرنے کا ایک خاص ملکہ حاصل تھا ان کے ساتھ ہمارے گھریلو مراسم تھے۔

میاں حبیب اللہ میر صحابی کے قصبہ شوپیان کے لوگوں کے ساتھ ہمیشہ ہی مذہبی اور ذاتی تعلقات استوار تھے۔ جب آپ احمدی ہوئے بعد ازاں نفرت کرنے کے باوجود وہ لوگ انکی وساطت سے حضرت مسیح موعود علیہ السلام سے دینی مسائل کا استفسار چاہتے تھے۔ سیرۃ المہدی (مرتب فرمودہ) حضرت مزامبیر احمد صاحب ایم۔ اے۔ حصہ سوئم روایت نمبر ۵۷۹ میں ذکر آیا ہے جس کے راوی حضرت والد صاحب ہیں۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ خواجہ عبدالرحمن صاحب ساکن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ میرے والد صاحب نے ایک مرتبہ ذکر کیا کہ جب میں شروع شروع میں احمدی ہوا تو قصبہ شوپیان علاقہ کشمیر کے بعض لوگوں نے مجھ سے کہا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام سے ”صلی اللہ علیک یا رسول اللہ وسلمک اللہ یا رسول اللہ“ کے پڑھنے کے متعلق استفسار کروں یعنی یہ پڑھنا جائز ہے یا نہیں۔ سو میں نے حضرت اقدس علیہ السلام کی خدمت میں اس بارہ میں خط لکھا حضور نے جواب تحریر فرمایا کہ جائز ہے۔ خاکسار عرض کرتا ہے کہ اس استفسار کی غرض یہ معلوم ہوتی ہے کہ چونکہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم وفات پا چکے ہیں تو کیا اس صورت میں بھی آپ کو ایک زندہ شخص کی طرح مخاطب کر کے دعا دینا جائز ہے سو اگر یہ روایت درست ہے تو حضرت مسیح موعود علیہ السلام کا فتویٰ یہ ہے کہ ایسا کرنا جائز ہے اور اسکی وجہ یہ معلوم ہوتی ہے کہ چونکہ آپکی روحانیت زندہ ہے اور آپ اپنی امت کے واسطے سے بھی زندہ ہیں اس لئے آپ کے لئے خطاب کے

رنگ میں دعا کرنا جائز ہے بلکہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے اپنے ایک شعر میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے مخاطب ہو کر آپ سے مدد اور نصرت چاہی ہے چنانچہ فرماتے ہیں ”اے سید الوریٰ مدد دے وقت نصرت است“ یعنی اے رسول اللہ آپ کی امت پر ایک نازک گھڑی آئی ہوئی ہے میری مدد کو تشریف لائیں کہ یہ نصرت کا وقت ہے۔

”مسیح ومہدی کے متعلق حدیث نبوی ”فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُ فَبَايِعُوهُ وَلَوْ حَبْوًا عَلَى الثَّلَجِ فَإِنَّهُ خَلِيفَةُ اللَّهِ الْمَهْدِيُّ“ (ابوداؤد جلد ۲ باب خروج المہدی)

ترجمہ:- اے مسلمانو! جب تمہیں اس کا علم ہو جائے تو فوراً اسکی بیعت کرو خواہ تمہیں برف پر سے گھٹنوں کے بل چلنا پڑے کیونکہ وہ خدا کا خلیفہ مہدی ہوگا۔ اسی طرح آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو اسے پہچان لے ”فَلْيَقْرَأْهُ مِنِّي السَّلَامُ“ اسے میری طرف سے سلام کہے (درمنثور جلد ۲ صفحہ ۴۲۵۔ بحار الانوار جلد ۳ صفحہ ۱۸۳ مطبوعہ ایران)

میاں حبیب اللہ میر مرحوم نے ان احادیث نبویہ کے مطابق عمل کرتے ہوئے پایادہ برف کے اونچے پہاڑوں سے گزر کر مسیح آخر الزماں کے تحت گاہ (قادیان) پر جا کر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا پیغام پہنچایا اور شرح و صدر سے ایمان لائے۔ اللہ اللہ ایمان کا کتنا عظیم مرتبہ ہمارے بزرگوں نے پایا۔ ان میں کس قدر ایمان کا جوش اور ولولہ تھا۔ عام انسان کے لئے ایک دو میل چلنا دو بھر ہوتا ہے لیکن شوق وصال یار کی خاطر میاں حبیب اللہ مرحوم نے کشمیر سے قادیان آنے جانے میں سینکڑوں میل کا سفر محض خدا و رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی اطاعت اور امام آخر الزماں کی زیارت کے لئے پیدل طے کیا۔ ہمارے بزرگوں کی یہ محنت و ریاضت اور صداقت کو پانے کے لئے مصائب و آلام برداشت کرنا یقیناً ہمارے لئے مشعل راہ ہے۔ اللہ تعالیٰ ہمارے بزرگوں کو اعلیٰ مراتب سے نوازے ایسے مخلص مرنے کے باوجود ہمارے لئے زندہ ہیں انکی روح پر خدا کی رحمت ہو آمین۔ خدا رحمت کند ایں عاشقان پاک طینت را۔

الحاج محمد عبد اللہ میر صاحب آف گاکرن نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا!!!

”میرے والد صاحب عبد الاحد میر میاں حبیب اللہ میر کے حقیقی بھائی تھے لیکن وہ بھی مخالفوں کے ساتھ مخالفت کرتے اور اپنے ایک بھائی سے احمدیت کی وجہ سے لا تعلق رہے پھر بھی

چچا ہمیں تبلیغ کرتے رہے میں ان دنوں کسن تھا۔ چچا حبیب اللہ میر تبلیغی جلسوں میں مجھے ساتھ لے جاتے تھے۔ اپنے دوستوں، رشتہ داروں اور خصوصاً قصبہ شویان کے دکانداروں کو احمدیت کا پیغام پہنچاتے تھے میں ان سے مخالفانہ انداز میں کہتا تھا کہ لوگ آپ کی بات مانتے ہی نہیں اب تبلیغ کرنے کا فائدہ کیا لیکن وہ مجھے پیار سے سمجھاتے تھے کہ مجھے حق کی بات یعنی اللہ اور اللہ کے رسول صلعم کے ظن کا مل کا پیغام ان تک پہنچانا ہے میں اپنی جانب سے حجت پوری کرونگا ”وہ اپنی خونہ چھوڑیں گے ہم اپنی وضع کیوں بدلیں“

میری ہمشیرہ جانہ بیگم اور میں اپنے چچا حبیب اللہ میر صحابی کی خدمت کرتے رہے۔ خدمت کرنے پر ہمارے والد صاحب (جو مخالف احمدیت تھے) کو کوئی اعتراض نہ تھا بلکہ خوش ہوتے تھے۔ ان کے نیک برتاؤ، صلہ رحمی کا اور انکے فرشتہ خصلت بیٹے خواجہ عبدالرحمن صاحب میر صحابی کا پاک و صاف اثر ہم دونوں بھائی بہن پر پڑا اور بفضلہ تعالیٰ ہم دونوں نے احمدیت قبول کر لی الحمد للہ۔ میری عمر اس وقت ۹۰ سال ہے۔ ہمارے سب بیٹے بیٹیاں ماشاء اللہ مخلص احمدی ہیں۔“

احمدیت کے یہ فدائی اور شیدائی میاں حبیب اللہ صاحب میر صحابی ۶۳ برس کی عمر میں اپنے مولا حقیقی سے جا ملے۔ انا اللہ وانا الیہ راجعون۔ آپ صوم و صلوٰۃ کے پابند تھے آپ چونکہ موصی بھی تھے آپکا جسد خاکی موضع گاگرن میں ہے اور بہشتی مقبرہ قادیان میں آپکی نسبت کتبہ پر مرقوم ہے بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ یادگار ۲۹۱ میاں حبیب اللہ صاحب ولد میاں ابراہیم صاحب قوم میر ساکنہ گاگرن کشمیر عمر ۶۳ وفات نومبر ۱۹۲۶ء وصیت نمبر ۹۸۳

☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

بسم اللہ الرحمن الرحیم ☆ نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

پیدائش اور پرورش خواجہ عبدالرحمن صاحب میر صحابی ابن صحابی

میاں حبیب اللہ میر نے جو پہلی شادی کی تھی ان کے لطن سے ایک بچہ ۲۸ جنوری ۱۸۹۱ء میں تولد ہوا والدین نے بچے کا نام عبدالرحمن رکھا۔ بڑا ہو کر بوجہ نیک فطرت اور نیک نامی کے عام لوگوں نے ان کو خواجہ عبدالرحمن کے نام سے پکارا۔ ”یاد رہے کشمیر میں ذی عزت اور قابل احترام لوگوں کو ”خواجہ صاحب“ کا لقب دیتے ہیں“ بعد میں جب محکمہ جنگلات میں ریٹج آفیسر کے عہدہ پر فائز ہوئے تو ریجنر صاحب مشہور ہوئے لیکن سب سے اہم اللہ تعالیٰ نے جو افضل و اعلیٰ انعام والقباب آپ کو عطا کیا وہ صحابی ابن صحابی کا شرف ہے۔ یعنی ۱۹۰۱ء میں اپنے والد میاں حبیب اللہ صاحب ساکن گاگرن کے ذریعہ سے قادیان پیدل پہنچ کر بیعت کی۔“

میرے خیال میں ایسے صحابی دنیائے احمدیت میں گنے چنے ہی ہونگے جنکو صحابی ابن صحابی کا اعزاز ملا ہو۔ ذالک فضل اللہ یوتیہ من یشاء۔

غرض حضرت والد صاحب مرحوم کو اللہ تعالیٰ نے جو دنیوی انعامات سے نوازا اس سے زیادہ صحابی کا درجہ پاکر خدمت دین اور اس کے ثمرات اور برکات سے بھی بہرہ ور ہوئے۔

مبارک وہ جو ایمان لایا صحابہ سے ملا جب مجھ کو پایا
وہی مے اسکو ساقی نے پلا دی فسمان الذی اغزی الاعادی

(حضرت مسیح موعود علیہ السلام)

دونوں باپ بیٹے نے حضرت مسیح موعود علیہ السلام کا زمانہ ہی نہیں پایا بلکہ آپ کی شناخت، قربت اور صحبت کی توفیق بھی پائی۔ جیسے سیرۃ المہدی (مرتب فرمودہ) حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم۔ اے حصہ سوم روایت ۸۳۷ میں ذکر ہے جس کے راوی خود والد صاحب مرحوم ہیں !!!

بسم اللہ الرحمن الرحیم: خواجہ عبدالرحمن صاحب متوطن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی خوانگی زندگی بھی اللہ تعالیٰ ہی کے کاموں میں گزرتی تھی ہر وقت تحریر کا کام ہوتا تھا یا غور و فکر اور ذکر الہی کا۔ کبھی میں نے حضور کو اپنے بچوں سے لاڈ کرتے نہیں

دیکھا باوجود کہ ان سے آپکو بہت محبت تھی اور کبھی کسی خادمہ کو کوئی حکم دیتے بھی نہیں دیکھا۔ حضورؐ گھر میں بھی زیادہ کلام نہ کرتے تھے سنجیدہ اور متین رہتے تھے۔ آپ بہت کم سوتے تھے اور بہت کم کھانا کھاتے تھے اور بعض اوقات ساری ساری رات لکھتے رہتے تھے اندرون خانہ میں نہایت سادہ رہتے تھے۔ یہ سب خواگی امور ایسے ہیں جو خدا کے فضل سے میرے دل میں ”کالانش فی الحجر ہیں“ اور بفضل تعالیٰ دنیا کی کوئی نعمت اور کوئی بلا آنحضور علیہ السلام پر ایمان لانے سے مجھے نہیں روک سکتی کیونکہ میں نے سب کچھ اپنی آنکھوں سے دیکھا ہوا ہے۔“

دوران شیرخواری والد صاحب مرحوم اگرچہ اپنی والدہ مرحومہ کی شفقت اور سایہ عاطفت سے محروم ہوئے لیکن آسمان پر اس معصوم بچے کی پرورش اور تعلیم و تربیت کے سامان اللہ تعالیٰ کر رہا تھا۔ وادی کشمیر میں ڈوگرہ حکومت تھی عام لوگ جہالت اور کمپرسی کی حالت میں تھے چند امیر خاندان اپنے بچوں کو کسی مولوی یا پنڈت کی شاگردی میں مذہبی تعلیم یا سعدی کی ”گلستان“ ”بوستان“ کتب سے تعلیم دلواتے۔ غریب کا کوئی پرسان حال نہ تھا۔

اباجی نے اسی تعلیمی اور معاشی افلاس میں آنکھ کھولی ایسے ماحول میں تعلیم کے نور سے ہمکنار ہونا بجز فضل الہی کے کوئی صورت نہ تھی۔ میاں حبیب اللہ میر کے دل میں اس خواہش نے انگڑائی لی کہ کیوں نہ میں تعلیم و تربیت کی خاطر اپنے بیٹے (خواجہ عبدالرحمن میر) کو قادیان چھوڑ آؤں۔ لیکن زادراہ کی ضرورت پڑی کہ گھوڑا گاڑی پر سوار ہو کر اپنے لخت جگر کو قادیان لے جاتے اس کشمکش میں کچھ مدت گزری پھر کتاب عمل سے اس شعر کو پڑھ کر بیٹے کو سفر کیلئے تیار کیا۔

یقین محکم عمل پیہم محبت فاتح عالم ☆ جہاد زندگانی میں یہ ہیں مردوں کی شمشیریں
اگرچہ مسکینی اور غربت اس راہ میں حائل تھی لیکن مایہ ہمت نے ساتھ نہ چھوڑا تو کل علی اللہ کو
اپنا زادراہ سمجھ کر اور فضل الہی کے گھوڑے پر سوار ہو کر اپنے اس کمسن اور معصوم لخت جگر کو اپنے
کندھوں پر اٹھا کر قادیان کا سفر شروع کیا نہ معلوم کتنے دن اور کتنی راتیں پایادہ دشوار گزار
پہاڑوں کو چیرتے ہوئے باپ بیٹے نے سفر کیا ہوگا۔ جب باپ بیٹے کے بوجھ سے تھکا اور
نڈھال ہوا ہوگا تو بیٹا اپنے معصوم اور کمزور ٹانگوں کے سہارے چلکر اور باپ کا ہاتھ پکڑ کر پیر
پنچال کی چوٹیوں کو سر کرتا ہوا ایک انجانے منزل کی جانب رواں دواں تھا۔ حضرت والد صاحب

مرحوم اس سفر کی روئیداد اپنے بچوں کو اس طرح سناتے تھے... ”کشمیر سے قادیان تک کے پیدل سفر میں ہم دونوں (باپ بیٹے) کے پیروں میں چھالے پڑے اور زخموں سے خون بہتا تھا۔ اگرچہ یہ ان دونوں کی ایک کوشش تھی۔

من در چہ خیالم و فلک در چہ خیال ☆ کارے کہ خدا کند بشر را چہ جال

باپ کا دل یہ سوچ کر باغ باغ ہوتا تھا بیٹا قادیان کے روحانی ماحول میں پرورش پائے گا۔ لیکن بیٹے کو کیا معلوم تھا کہ اللہ تعالیٰ نے میرے لئے ایک ایسی راہ کھول دی جس پر چلکر دین و دنیا کی نعمتوں کا وارث بننے والا ہوں جو آخر حالات و واقعات نے ثابت کر کے دکھا دیا یعنی حضرت والد مرحوم صاحب دنیوی علوم سے ہی نہیں بلکہ روحانی علوم سے بھی آشنا اور ہمکنار ہوئے۔ ذالک فضل اللہ یوتیہ من یشاء۔ واللہ ذو الفضل العظیم۔ اسکی تائید میں حضرت ابا جان مرحوم روایت ۱۲۳۷ میں ”سیرۃ المہدی جلد چہارم (غیر مطبوعہ) مرتبہ مرزا بشیر احمد رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں:-

”بسم اللہ الرحمن الرحیم: میر عبد الرحمن صاحب ربیع آفیسر بارہ مولا کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا ”میرے والد خواجہ حبیب اللہ صاحب مرحوم ساکن گاہر ن کشمیر نے کہ جب میں ۹۸-۱۸۹۷ء میں قادیان گیا تو حضرت اقدس مسیح موعود علیہ السلام کی بیعت کرنے کے کچھ عرصہ بعد میں نے حضرت اقدس علیہ السلام سے کشمیر واپس آنے کی اجازت مانگی۔ حضور نے فرمایا کہ ”یہاں ہی ٹھہرو اور قرآن شریف پڑھو“ پھر میں کچھ عرصہ ٹھہرا اور اس کے بعد میں نے حضرت مولانا حکیم نور الدین صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ خلیفۃ المسیح الاول کے ذریعہ درخواست کی کہ میرے دولہ کے سری نگر میں مشرکوں کے پاس ہیں اس لئے مجھے اجازت دی جائے کہ میں ان کا کچھ بندوبست کروں چنانچہ مجھے اجازت دی گئی اور پھر تم دونوں بھائیوں کو (عبدالقادر اور عبد الرحمن) قادیان لے آیا۔ فالحمد للہ علی ذالک۔“

قادیان پہنچ کر اللہ کے فرشتوں نے قبلہ والد صاحب کی سرپرستی اور پرورش کے لئے انتظام کر کے رکھے تھے۔ یعنی حضرت مولوی شیر علی صاحب دنیائے احمدیت کے ایک درخشندہ ستارے گویا منتظر ہی تھے کہ میرے ہاں ایک مہمان آنے والا ہے جس کی پرورش کر کے میں اسکو

اپنا بیٹا بنالوں کا اس دنیا میں بہت کم ایسے لوگ ہوتے ہیں جو غریبوں اور یتیموں کا سہارا بنتے ہیں اور انکی خیر خواہی چاہتے ہیں۔ جب اس کمسن بچے کو بورڈنگ میں داخل کر دیا گیا تو حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ نے یہ پسند نہیں کیا کہ یہ چار پانچ سال کا بچہ بورڈنگ میں رہے۔ اپنے لوازمات زندگی کیونکر نبھاسکے۔ جبکہ اپنے باپ اور رشتہ داروں کا بھی ساتھ نہ رہا اس جذبہ ہمدردی اور شفقت کے تحت اس بچے کو حضرت مولوی صاحب موصوفؒ اپنے گھر لائے۔ اور اسکی پرورش، خورد و نوش اور تعلیم و تربیت کی تمام تر ذمہ داری اپنے ذمہ لی۔ بعض بزرگوں کا کہنا ہے کہ ان دنوں حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ کے یہاں کوئی اولاد نہیں ہوتی تھی پھر اس بچے (حضرت والد صاحب) کو بحیثیت پسر پھر وہ پروان چڑھایا۔ واللہ اعلم بالصواب۔

قادیان میں حصول تعلیم :-

خواجہ صاحب مرحوم نے تعلیم الاسلام ہائی اسکول قادیان میں تعلیم حاصل کی اور اس ننھے پودے کی آبیاری حضرت مولوی صاحب مرحوم کرتے رہے۔ پہلی جماعت سے انٹرنس تک اسی اسکول میں زیر تعلیم رہے اور میٹرک کی سند لی اور آپ اُن طالب علموں میں سے ایک خوش نصیب طالب علم ہیں جنہوں نے امتحان کے موقعوں پر حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے پاس جا کر رخصت طلب کی اور کامیابی کے لئے درخواست دعا کی۔ جیسا کہ سیرۃ المہدی (مرتب فرمودہ) حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم۔ اے حصہ سوم روایت ۸۳۹ میں مذکور ہے جس کے راوی خود حضرت والد صاحب مرحوم ہیں۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم: خواجہ عبدالرحمن صاحب متوطن کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے یہ بیان کیا: ”کہ مارچ ۱۹۰۸ء میں جب ہم طلباء انٹرنس کے امتحان کے لئے امرتسر جانے لگے تو حضرت مسیح موعود علیہ السلام سے رخصت حاصل کرنے کے لئے حضورؐ کے مکان پر حاضر ہوئے جب حضورؐ کو اطلاع کرائی گئی تو دروازہ پر پہنچتے ہی حضورؐ نے فرمایا ”خدا تم سب کو پاس کرے“ اس کے بعد ہم نے یکے بعد دیگر حضورؐ سے مصافحہ کیا۔ ایک مسمی عطا محمد بعد میں دوڑتا ہوا آیا اس وقت حضورؐ ہمیں رخصت فرما کر چند قدم اندرون خانہ میں جا چکے تھے تو عطا محمد مذکور نے حضورؐ کا

پیچھے سے دامن پکڑ کر زور سے کہا ”حضور میں رہ گیا ہوں“ اس پر حضورؐ مڑ کر اس کی طرف متوجہ ہوئے اور مصافحہ کر کے اس کو بھی رخصت کیا۔ یہ دوست ایک سب اسٹنٹ سرجن ہے۔

خواجہ صاحب نے مزید کہا کہ اُس سال ۱۶ طلباء انٹرنس کے امتحان میں شامل ہوئے تھے جن میں سے کئی ایک تو اسی سال پاس ہو گئے اور باقی کچھ دوسرے سال پاس ہوئے۔ اور بعض پھر بھی پاس نہ ہوئے وہ محمد اللہ مسیح موعود علیہ السلام کی دعا سے اچھی حیثیت میں ہیں اور اپنے اپنے کاروبار اور ملازمتوں میں خوش زندگی گزار رہے ہیں۔“

خاکسار کی ملاقات جلسہ سالانہ قادیان پر ہمیشہ مولوی عبدالرحمن صاحبؒ (ناظر اعلیٰ و امیر مقامی) سے ہوتی تھی تو آپ اپنی پرانی اسکول کی یادیں تازہ کر کے مجھ سے اس طرح بیان کرتے تھے ”خواجہ عبدالرحمن میر مرحوم میرے ہم مکتب تھے۔ بچپن ہی سے بہت نیک پارسا، کم گو سادہ طبع اور عجز و انکساری کے پتلے تھے۔ مکتب میں ہم چار لڑکوں کا نام ’عبدالرحمن‘ تھا پھر ہمارے اساتذہ صاحبان کو ہمارے متعلق یہ مشکل پیش آتی تھی اگر ایک کو بلاتے تھے تو چاروں کی توجہ استاد کی طرف مبذول ہوتی تھی۔ پھر اساتذہ کرام نے ہی ہمیں اپنی اپنی مناسبت سے نام کے ساتھ خاص لقب جوڑ دئے یعنی عبدالرحمن جٹ۔ عبدالرحمن کشمیری وغیرہ وغیرہ۔

یہ فضل الہی تو تھا کہ ایک گننام بستی کے ایک غریب لڑکے کو قادیان جیسی جنت نشان بستی میں پرورش کے ساتھ ساتھ رسمی تعلیم، اسلامیات، اخلاقیات اور احمدیت کی تعلیم سے روشناس کر دیا سب سے بڑھ کر والد صاحب مرحوم کو دوران طالب علمی حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے در کی غلامی نصیب ہوئی اور قربت کی وجہ دیارِ مسیح میں گونا گوں جلوے دکھانا بھی قسمت میں تھا۔ اسی لئے حضرت خواجہ صاحبؒ ایام طفولیت اور دوران طالب علمی حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی پاک سیرت کے چشم دید گواہ ہیں آپ ایک طالب علم کو کس پیار اور اخلاص (ایک خط کے جواب میں) سے حوصلہ افزائی فرماتے ہیں جو سیرت مہدی (مرتب فرمودہ) حضرت بشیر احمد صاحب ایم۔ اے حصہ سوئم روایت ۸۳۸ میں مذکور ہے جس کے راوی خود حضرت خواجہ صاحب مرحوم ہیں ”بسم اللہ الرحمن الرحیم: خواجہ عبدالرحمن صاحب متوطن کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ ڈاکٹر گوہر الدین صاحب جب انٹرنس کے امتحان میں پہلی دفعہ ناکام ہوئے تو انہوں نے

میرے روبرو حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی خدمت میں ایک خط لکھا جس میں اپنی ناکامی کا تذکرہ کرتے ہوئے دعا کے لئے التجا کی:

”حضورؑ نے الفت اور محبت سے دلجوئی کے طور پر مندرجہ ذیل جواب خط کے پشت پر ارقام فرمایا ”السلام علیکم ایک روپیہ پہنچا۔ جزاکم اللہ تعالیٰ۔ خدا تمہیں پھر کامیاب کرے۔ اس میں خدا کی حکمت ہے۔ میں تمہارے دین و دنیا کے لئے دعا کروں گا کچھ غم نہ کرو۔“ خدا داری چہ غم داری“ پھر پاس ہو جاؤ گے۔ یہ خط برادر مڈاکٹر صاحب موصوف کے پاس اب تک محفوظ ہے۔ چنانچہ دوسرے سال انٹرنس کے امتحان میں کامیاب ہوئے۔ اور اب بفضل تعالیٰ برہما میں سب اسٹنٹ سرجن ہیں اور بہت عزت کی زندگی گزار رہے ہیں۔ خاکسار عرض کرتا ہے کہ اس خط سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت صاحب اسکول کے بچوں کو بھی کس محبت کے ساتھ یاد فرماتے تھے۔“

حدیث نبوی:- عن عمران رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال انما لا اعمال بالنیات وکل امرء ما نوى (بخاری) حضرت عمر کہتے ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اعمال کا دار و مدار نیتوں پر ہوتا ہے اور ہر انسان کو اسی کا بدلہ ملتا ہے جو اس کی نیت ہوتی ہے۔

والد صاحب مرحوم کو حضرت مولوی شیر علی صاحب مرحوم نے امن و چین کی جو زندگی میسر کی اللہ تعالیٰ کو مولوی صاحب کی یہ ادالپند آئی ہوگی اور انکو اولادِ نینہ سے نوازا۔ مولوی صاحبؒ نے تحدیثِ نعمت کے طور پر اپنے بیٹے کا نام بھی حضرت والد صاحبؒ کے نام پر عبد الرحمن رکھا جو بعد میں ڈاکٹر عبد الرحمن کہلایا۔ اس سے یہ تاثر بھی ملتا ہے کہ فرشتہ خصلت حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ پر بھی اس بچے کا اچھا اور نیک تاثر تھا کہ اسی مبارک نام کو اپنے بیٹے کے لئے پسند فرمایا اور آپ کے ساتھ پیار و محبت بڑھتا رہا اور اس پیار و محبت کو تادمِ مرگ بطریق احسن قائم رکھا۔ اس قربت داری کی وجہ حضرت خلیفۃ المسیح الثانی رضی اللہ عنہ نے والد صاحب کی وفات پر یوں فرمایا: ”خواجہ عبد الرحمن میرا بیٹا سا کن کشمیر فوت ہوئے ہیں۔ انا اللہ وانا الیہ راجعون۔ وہ حضرت مولوی شیر علی صاحب مرحوم کے خصال پر تھے۔ حضورؐ کا یہ فرمانا نہایت پر حکمت معلوم ہوتا ہے جس سے اس حقیقت کی عکاسی ہوتی ہے کہ واقعی خواجہ صاحب مرحوم حضرت مولوی صاحب

موصوفؒ کے خصائل کے ظلال تھے۔

حاجی محمد عبداللہ صاحب میر مزید بیان کرتے ہیں:-

”میں خواجہ صاحب کے پاس بحیثیت ملازم عرصہ زائد تیس سال ساتھ ساتھ رہا میں بہت قریب سے انکی شخصیت سے واقف ہوں۔ ایک دفعہ جب حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ ہمارے پاس گدھی دوپٹہ۔ مظفر آباد کشمیر تشریف لائے تو بھائی خواجہ عبدالرحمن صاحب میر نے خاکسار کو علاقہ دُومیل موضع کو ہی کوٹ درخانہ راجہ فقیر محمد خان صاحب دوماہ حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ کی خدمت کے لئے مقرر کیا۔ میں نے مولوی صاحب موصوف کی دوماہ خدمت کی میں نے یہی دیکھا اور مشاہدہ کیا کہ حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ مرحوم اللہ تعالیٰ کی محبت و اطاعت، صدق و وفا اور انکساری اور عاجزی کے رنگ میں رنگین تھے اور تعلق باللہ اور تعلق بالعباد میں یکتا ہیں۔ اسی رنگ میں میرے بھائی خواجہ عبدالرحمن صاحب میر بھی رنگین تھے۔ اللہ تعالیٰ دونوں کو غریق رحمت کرے اور جنت الفردوس میں اعلیٰ مقام عطا کرے۔ آمین۔

دونوں کے مابین باپ بیٹے کے، استاد و شاگرد کے اور دوستانہ خوشگوار تعلق تھے۔ ایک دوسرے کی عزت و تکریم کے ساتھ ساتھ آپس میں بے تکلفی بھی تھی۔ ایک دفعہ ہم سب بیٹھے تھے بھائی خواجہ صاحب رضی اللہ عنہ نے کہا کہ زبر زیر پیش کافر کی کو بھی قرآن خوانی کے وقت نکال سکتا ہوں اس طرح میں کسی حد تک حافظ قرآن ہوں لیکن حضرت مولوی شیر علی صاحب رضی اللہ عنہ نے بھائی کو بتایا حافظ قرآن وہ ہوتا ہے جس کو اگر کہا جائے کہ قرآن شریف کی فلاں سورۃ سناؤ تو فی الفور وہ سنا سکے پھر خواجہ صاحبؒ کو نصیحت کی کہ آج سے حفظ قرآن کر لو تو تا بعد ارشاد شاگرد نے میرے خیال میں آٹھ پارے قرآن شریف کے حفظ کر لئے تھے ﴿﴾ شاگرد نے جو پایا استاد کی دولت ہے۔

ہم عمر دوستوں کے ساتھ ایک لطفہ:

حضرت والد صاحبؒ کو بعض اوقات اپنے ہم عمر اور ہم مکتب لڑکے قادیان سے باہر نزدیکی گاؤں میں سیر و تفریح کے لئے جاتے تھے اور وہاں جاٹ زمینداروں کے پاس گئے کارس یا گڑ وغیرہ کھاتے پیتے تھے۔ والد صاحب مرحوم نے اپنے ہمعمر بچوں کے ساتھ تھوڑی تھوڑی پنجابی

زبان سیکھ لی تھی لیکن زبان پر عبور حاصل نہ تھا۔ ایک دفعہ ایک سیر کی تفصیل دوسرے دوستوں کو اس طرح سنانے لگے۔ ”ہم پنڈ میں گئے آپ کو یہ کہنا مقصود تھا کہ ہم نے گئے کارس پی لیا۔“ تو پنجابی لفظ استعمال کر کے کہا کہ ”ہم نے گڑ کی ڈانگ (گنا) کارس پی لیا۔ آپ کے دوست بہت ہنسے۔ اور باقی دوستوں کو بھی یہ بات سنائی۔

واقف زندگی کیوں نہ تھے؟:-

حضرت والد صاحب مرحوم کے متعلق کہیں سے یہ معلوم نہ ہو سکا کہ آپ واقف زندگی کیوں نہ تھے۔ یعنی حصول تعلیم کے بعد اپنے آپ کو خدمت دین کے لئے کیوں نہ پیش کیا۔ بلکہ تعلیم سے فارغ ہو کر معاً بعد کشمیر آ کر ملازمت کیوں کی۔ جبکہ آپ عاشق مسیح الزماں اور فدائے احمدیت تھے۔

خاکسار کی حقیر رائے اور عقل و فراست اتنا کچھ بتا سکتی ہے کہ کشمیر میں ان دنوں ڈوگر راج تھا اگرچہ کشمیر میں مسلمانوں کی اکثریت تھی لیکن وہ بے بس تھے۔ زمیندار لوگوں کو بھی جو ناج محنت کر کے زمینوں سے حاصل ہوتا تھا اس کا وافر حصہ بطور باج (جنس) ڈوگر شاہی کو دینا پڑتا تھا لوگوں کی حالت ہر لحاظ بہت ابتر تھی۔ رشوت ستانی کا بازار گرم تھا۔ سرکاری کارندے رشوت لے کر یاد دیکر اپنا الو سیدھا کرتے تھے۔ غرض یہاں کے مسلمان نہ صرف شرک اور بدعت کے شکار تھے بلکہ اپنی معاشی، تعلیمی اور مذہبی حالت میں بھی گرے ہوئے تھے۔ ایسے نظام حکومت اور آلودہ ماحول میں اللہ تعالیٰ کو حضرت خواجہ صاحبؒ کی ذات سے رشوت خور اور بددیانت ملازمان سرکار کو عموماً اور عام مسلمانوں کو خصوصاً عملاً یہ درس دینا مقصود تھا کہ ابھی کچھ لوگ باقی ہیں جو سرور کائنات صلی اللہ علیہ وسلم اور ان کے صحابہ کرامؓ کے نقش قدم پر چلنے والے ہیں اور کانٹوں میں الجھ کر بھی زندگی کی پاک و صاف اور امن و آشتی کی راہ پا سکتے ہیں جو ماشاء اللہ حضرت خواجہ صاحب مرحوم نے اپنی سیرت کردار سے عملاً ثابت کر کے دکھایا۔ دوران ملازمت بلکہ زندگی کے ہر موڑ پر آپ نے اپنے من کو اس مادی دنیا کے جال میں نہیں پھنسا یا بلکہ اپنے آپ کو اسکی کشافوں اور آلائشوں سے پاک رکھا جس کی وضاحت انشاء اللہ آگے ہوگی۔

اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:.. ان اکرمکم عند اللہ اتقاکم، یعنی اللہ کے دربار میں صاحب عظمت وہی ہے جو سب سے زیادہ متقی ہو۔ بفضل تعالیٰ خواجہ صاحب مرحومؒ اپنی عملی زندگی میں ایسے شہسوار ثابت ہوئے کہ آپ کی خدا ترسی، دینداری اور شرافت و دیانت کی داد دی جاتی رہے گی۔

عمل سے زندگی بنتی ہے جنت بھی جہنم بھی ☆ یہ خاکی اپنی فطرت میں نہ نوری ہے نہ ناری ہے حضرت اقدس مسیح موعود علیہ السلام یہ پسند نہیں فرماتے تھے کہ احمدی طلبا عیسائی کالج میں داخل ہوں اس لئے خواجہ صاحب مرحوم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے تعلیم الاسلام ہائی اسکول قادیان میں انٹرنس کے بعد حضور علیہ السلام کی اجازت سے اسلامیہ کالج لاہور میں داخلہ لیا بعد میں علی گڑھ چلے گئے۔ جیسا کہ اس روایت جو سیرت المہدی جلد چہارم (غیر مطبوعہ) سے ظاہر ہے۔ (۱۲۳۱) بسم اللہ الرحمن الرحیم: میر عبد الرحمن صاحب رنج افسر بارہ مولا کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ سیدنا حضرت اقدس مسیح موعود علیہ السلام پسند نہیں فرماتے تھے کہ احمدی طلبا عیسائی کالجوں میں داخل ہوں۔

جب خاکسار اور شیخ عبد الغنی بھیروی حال ای۔ اے۔ بی تعلیم الاسلام ہائی اسکول سے انٹرنس میں بفضل خدا پاس ہوئے اس وقت عبد العلی صاحب موصوف نے مجھے یہ بات لاہور میں بتائی کہ حضرت صاحب کرپن کالج لاہور میں احمدی طلبا کا داخلہ پسند نہیں فرماتے چنانچہ عبد العلی صاحب نے کسی کا نام بھی بتایا تھا کہ اسے حضور نے کرپن کالج لاہور میں داخل ہونے کی اجازت نہیں دی (غالباً فقیر اللہ خان صاحب انسپکٹر نام یا ایسا ہی) خاکسار کو بھی حضور علیہ السلام نے اسلامیہ کالج لاہور ہی میں داخل ہونے کی اجازت دی۔ چنانچہ میں وہاں داخل ہو گیا تھا۔ بعد میں علی گڑھ کالج چلا گیا۔

علیگڑھ میں انٹرمیڈیٹ اور نمازوں کا واقعہ:

تعلیم الاسلام ہائی اسکول قادیان میں انٹرنس پاس کر کے اعلیٰ تعلیم کے لئے حضرت والد صاحب مرحوم نے علیگڑھ مسلم یونیورسٹی میں داخلہ لیا۔ اور وہاں سے ۱۹۱۲ء میں ایف۔ اے پاس کیا۔ علیگڑھ میں جب آپ زیر تعلیم تھے تو حصول علم سے زیادہ ان کو نماز باجماعت التزام

سے ادا کرنے کی فکر تھی۔ وہ جانتے تھے انسانی زندگی کا مقصد اللہ تعالیٰ نے عبادت بجالانا قرار دیا ہے۔ اور عبادت میں سے افضل ترین عبادت نماز ہے۔ حضرت مسیح موعود علیہ السلام فرماتے ہیں:

”نماز آنے والی بلاؤں کا علاج ہے۔ تم نہیں جانتے کہ نیا دن چڑھنے والا کس قسم کی قضاء و قدر تمہارے لئے لائیگا۔ پس قبل اس کے جو دن چڑھے تم اپنے مولا کی جناب میں تضرع کرو۔ کہ تمہارے لئے خیر و برکت کا دن چڑھے۔ (کشتی نوح)

خاکسار کے بہنوئی چودھری مبارک احمد صاحب (حال مقیم کینیڈا) نے مجھ سے بیان کیا حضرت والد صاحبؒ کے متعلق علیگزہ باجماعت نماز ادا کرنے کے بارہ میں حضرت چوہدری غلام محمد صاحب بی۔ اے (علیگزہ) نے فرمایا:

”کہ علیگزہ میں تعلیم کے دوران ہم احمدی طلباء نے یونیورسٹی کے ایک کمرہ میں نماز باجماعت پڑھنے کا انتظام کیا تھا۔ خواجہ عبدالرحمن صاحب میر کی رہائش نماز والے کمرہ سے بہت دور تھی۔ اس طرح پانچوں نمازوں میں خواجہ صاحب کا سارا دن آنے اور واپس جانے میں صرف ہوتا تھا تو چودھری صاحب نے خواجہ صاحب سے کہا کہ آپ اس یونیورسٹی میں حصول تعلیم کے لئے آئے ہیں۔ اس طرح باجماعت پانچوں نمازوں میں شمولیت سے آپ کی تعلیم متاثر ہوگی۔ لہذا آپ صرف ایک وقت کی نماز ہمارے ساتھ باجماعت ادا کریں۔ باقی نمازیں اپنے کمرے میں ادا کیا کریں۔“ خواجہ صاحبؒ نے چودھری صاحب کی نصیحت کو حق بجانب سمجھ کر اس پر عمل کیا۔ اس طرح اللہ تعالیٰ کے پاس بھی سرخرو ہوئے اور تعلیم بھی متاثر نہیں ہوئی۔

یاد رہے کہ چودھری غلام محمد صاحب بی۔ اے۔ (علیگ) جن کا شمار اولین واقفین زندگی میں کیا جاتا ہے آپ نے حضرت خلیفہ اولؒ کی سرپرستی میں سلسلہ کے مختلف شعبوں میں کارہائے نمایاں سرانجام دئے۔

”احیائے موتی“

دوران طالب علمی ایک نشان کے گواہ۔۔۔ (عبدالکریم کا واقعہ اور دُعا کا معجزہ۔ دسمبر ۱۹۰۷ء)

دوران طالب علمی حضرت والد صاحب حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے ایک نشان کے چشم دید گواہ ہیں۔ جو مشہور واقعہ ”عبدالکریم آف یادگیر کو باولے کتنے کا کٹنا اور باولے پن کا علاج نہ ہو سکا۔ پھر حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے عبدالکریم کی صحت یابی کے لئے دُعا کی اور معجزانہ طور پر رو بہ صحت ہوئے۔“ اس واقعہ کا ذکر حضرت مسیح موعود علیہ السلام حقیقۃ الوحی میں صفحہ ۴۸۰ پر ان الفاظ سے شروع فرماتے ہیں:

۵۔ ”پانچواں نشان جوان دنوں میں ظاہر ہوا وہ ایک دُعا کا مقبول ہونا ہے۔ جو درحقیقت احیائے موتی میں داخل ہے۔ تفصیل اس اجمال کی یہ ہے کہ عبدالکریم نام ولد عبدالرحمن ساکن حیدرآباد دکن ہمارے مدرسہ میں ایک لڑکا طالب علم ہے۔ قضا و قدر سے اس کو ایک سگ دیوانہ کاٹ گیا۔۔۔۔۔“

حضرت والد صاحب کو حضور کی مجلسوں میں رسائی تھی۔ اور اس واقعہ کو اخبار الفضل قایان دارالامان (جلد ۱۰۳) بابت ۲۷ فروری ۱۹۳۴ء بعنوان ”عبدالکریم مرحوم آف یادگیر کا ذکر“ میں شائع کروایا۔ آپ لکھتے ہیں: ”جہاں تک مجھے یاد پڑتا ہے ۱۹۰۷ء کے آخری مہینوں میں سے کسی میں ایک روز جبکہ ہم طلباء تعلیم الاسلام ہائی اسکول کے اس وقت کے بورڈنگ کے صحن میں کھیل رہے تھے کہ اچانک بورڈنگ کے غربی پھانک سے جو کہ میاں شیر محمد دوکاندار کی دوکان کے پاس ہے ایک باولہ کُٹنا صحن میں گھس آیا پھانک سے ایک جریب بجانب شرق خاکسار راقم کھڑا تھا۔ جب میں نے کتنے کو دیکھا تو چاہا کہ آگے بڑھ کر اسے ماروں لیکن کسی وجہ سے میں رُک گیا۔ اس سے آگے نصف جریب کے فاصلہ پر میرے کلاس فیلو اخویم ڈاکٹر گوہر الدین صاحب کھڑے تھے۔ انہوں نے پیچھے ہٹ کر اپنے آپ کو بچالیا۔ کتا سیدھا آگے بڑھتا گیا یہاں تک کہ اس جگہ پہنچ گیا جہاں اب مدرسہ احمدیہ بورڈنگ کا کنواں ہے۔ وہاں بہت سے لڑکے کھیل رہے تھے۔ اُن میں سے کتنے نے عبدالکریم پر حملہ کر کے زخمی کر دیا۔

سیدنا حضرت مسیح موعود علیہ الصلوٰۃ والسلام فدائے امی و ابی کو جب اس واقعہ کی اطلاع ملی تو حضور نے منتظمین کے ذریعہ علاج کے لئے عبدالکریم کو کسولی بھجوا دیا۔ علاج ہو جانے کے بعد عبدالکریم صاحب بظاہر کامل صحتیاب ہو کر قادیان واپس آگئے اور ہمارے ساتھ بورڈنگ میں مثل

سابق رہنے لگے۔ لیکن چند ہی روز گزرنے کے بعد ہائیڈروفونیا کی بیماری میں مبتلا ہو گئے۔ مکرم معظم ماسٹر عبدالرحمن صاحب بی اے (سابق سردار مہر سنگھ صاحب) نے ہمیں عبدالکریم کے پاس جانے سے منع فرمایا۔ مبادا کہ کسی کو ان سے نقصان پہنچے۔ جب سیدنا حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی خدمت میں اس بات کی اطلاع کی گئی تو سب سے پہلے حضور علیہ السلام نے معالجین کو حکم دیا کہ کوئی مہلک دوائی نہ دی جائے۔ کیونکہ جب ہلکاؤ کی بیماری ہو جاتی ہے تو چونکہ یہ مرض لاعلاج ہے لوگوں کو نیز مریض کو تکلیف اور دکھ سے بچانے کے لئے ڈاکٹر ایسا کرتے ہیں۔ پھر عبدالکریم کو علیحدہ رکھنے کے لئے تجویز کی گئی۔

مکرم سید محمد علی شاہ صاحب مرحوم ساکنہ قادیان کے مکان کا بالائی حصہ جہاں پہلے ”الحکم“ کا دفتر ہوتا تھا عبدالکریم صاحب مغفوری رہائش کے لئے تجویز ہوا۔ اور ان کو وہاں منتقل کر دیا گیا۔ اخویم مکرم سید ولی اللہ شاہ صاحب (حال دعوت و تبلیغ) اور خاکسار کو کہ ہم دونوں نے برضاء خود خدمات پیش کی تھیں۔ پہرہ پر لگایا گیا۔

ہیڈ ماسٹر تعلیم الاسلام ہائی اسکول کے ذریعہ کسولی تار بجھوا دیا کہ عبدالکریم کو ہلکاؤ ہو گیا ہے کوئی علاج بتایا جائے۔ ڈاکٹر ان کسولی نے جوابی تار دیا کہ

Sorry, nothing can be done for Abdul Karim

یعنی افسوس کہ عبدالکریم کے لئے کچھ نہیں کیا جاسکتا۔ اس پر حضرت مسیح موعود علیہ الصلوٰۃ والسلام فدائے امی و ابی نے خدائے بزرگ، قدیر و برتر کی درگاہ عالی میں بہت اضطراب سے (کیونکہ عبدالکریم ایک دور دراز کے علاقہ کا اور والدین کا اکلوتا بیٹا تھا) اس کی صحت کے لئے دعا کی۔ اور اللہ تعالیٰ نے اپنے پیارے مسیح و مہدی کی دعا کو شرف قبولیت بخش کر عبدالکریم صاحب کو تندرست کر دیا۔

اسی قسم کے لاعلاج مریض انبیاء علیہم السلام نے زندہ کئے۔ علاوہ روحانی مریضوں کے اور اس دہریت کے زمانے میں ہمارے سید و مولا حضرت مسیح موعود علیہ الصلوٰۃ والسلام نے عبدالکریم صاحب کو زندہ کیا۔ احی الموتیٰ باذن اللہ کے بھی یہی معنی ہیں۔ ورنہ جن کی جان قبض ہو چکی ہو نہ کسی نبی نے زندہ کئے اور نہ کر سکتے ہیں۔ اگر کوئی کر سکتے تو سردار دوعالم

حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم بدر کے شہداء کو زندہ کرتے یا جب جنگ احد میں حضرت حمزہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے چچا شہید ہوئے۔ اور آپ کو ان سے نہایت محبت تھی۔ ان کو زندہ کر دیتے۔ یا اپنے بیٹے حضرت ابراہیم کو زندہ فرماتے۔ لیکن کسی کو زندہ نہ کیا۔ کیونکہ آپ ہی کے ذریعہ آیا ہوا خدا کا حکم حقیقی مردوں کی نسبت قرآن شریف میں موجود ہے۔ کہ من ورائہم برزخ الیٰ یوم یبعثون۔

مرحوم و مغفور راقم کے دوست تھے۔ بہت متکسر المزاج، سادہ طبع انسان تھے۔ طالب علمی میں وہ اکثر قرآن پاک کی تلاوت کرتے رہتے۔ رنگ ان کا کالا تھا۔ (مصلیٰ رنگ کا تذکرہ کیا گیا) اور جب ان کو باولے کتے نے کانٹا ان کی عمر ۱۸ سال کی ہوگی۔ جب مرحوم کو ہلکا ہوا تو ذرا سی آہٹ پر چونک پڑتے۔ سانس مشکل سے آتا تھا۔ اور پانی سے ڈرتے تھے اور ذرا شور سے سخت مضطرب ہوتے تھے۔ اللہم اغفر لہ وارحمہ واعف عنہ واکرم وادخلہ الجنة آمین اللہم آمین

خاکسار

عبدالرحمن احمدی ریخ آفیسر ڈاکخانہ کرنا۔ کشمیر

حضرت والد صاحب مرحوم طالب علمی کے دوران قادیان میں نہ صرف علم و ادب کے نور سے منور ہوئے بلکہ خاندان حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے ساتھ والہانہ محبت اور میل جول رہا۔ اس پاک محبت کا اثر آپ کے ضمیر و ضمیر میں تاحیات برابر سرایت پزیر رہا۔ خدمت دین اور خدمت خلق کے لئے آپ ہمیشہ مستعد رہتے تھے۔ اور یہ سب کچھ اپنے لئے شیرین ثمرات سمجھتے رہے۔ بفضل تعالیٰ آپ ان شیرین ثمرات سے لدی ہوئی ٹہنی کے مانند تھے۔ جس پر جھقدار زیادہ پھل ہوتا ہے۔ اسی قدر زیادہ جھک جاتی ہے۔

”نہد شاخ پر میوہ بر سر زمین۔“ خلافت سے وابستگی اور اطاعت امام کو اولین جگہ دیتے تھے اور بزرگان دین کی خدمت کرنا اپنے لئے سعادت اور ہمیشہ ان کے دعاؤں کے طالب رہتے تھے۔ خود دعا گو اور دعاؤں پر کامل بھروسہ تھا۔ جیسے حضرت خلیفۃ المسیح الرابع ایدہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا ”کہ دعاؤں کی قبولیت کے لئے یہ شرط ہے کہ اللہ تعالیٰ کی آواز پر لبیک کہا جائے۔“

کامل اطاعت کا حق ادا نہ کرنے والے کے حق میں خلیفہ وقت کی دعا بھی قبول نہ ہوگی۔“
حضرت خواجہ صاحب کو حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے خاندان کے ساتھ جو ایک خاص
والہانہ عقیدت تھی کبھی جو خدمت کا موقع ملا اس کا عمر بھر فخر حاصل رہا۔ جیسے سیرت المہدی
(مرتب فرمودہ) حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم اے حصہ سوئم روایت ۸۴۰ میں مذکور ہے۔
اس روایت کے راوی خود حضرت والد صاحب مرحوم ہیں:

بسم اللہ الرحمن الرحیم: خواجہ عبدالرحمن صاحب میر متوطن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا
کہ ایک دفعہ جب کہ صاحبزادہ مرزا بشیر احمد (خاکسار مؤلف) ابتدا میں مدرسہ ہائی سکول میں
لوئر پرائمری میں داخل کرائے گئے۔ تو ایک دن حضرت میر ناصر نواب صاحب ہائی سکول کے
بورڈنگ میں تشریف لائے اور حافظ غلام محمد صاحب (سابق مبلغ ماریش) سے فرمانے لگے کہ
حضرت اقدس مسیح موعود علیہ السلام نے میاں بشیر احمد کو بورڈنگ میں داخل کرنے کا حکم دیا
ہے۔ آپ اس کا خیال رکھا کریں۔ خاکسار بھی اس وقت پاس ہی کھڑا تھا۔ میر صاحب نے
میرے متعلق فرمایا کہ یہ میاں صاحب کا بستہ گھر سے لایا اور لے جایا کریگا۔ صاحبزادہ اس کے
بعد دن کو بورڈنگ میں ہی رہا کرتے تھے اور رات کو گھر چلے آتے تھے اور میں بستہ بردار غلام
تھا۔ حضرت ام المؤمنین سلمیٰ علیہا اللہ تعالیٰ ماہوار کچھ نقدی بھی عطا فرماتی تھیں مگر میرا اصل معاوضہ
حضورؐ کی خوشنودی اور دعا تھی۔ حضرت مسیح موعود علیہ السلام صرف اپنے بچوں کی ہی تعلیم و
تربیت نہیں کرتے تھے بلکہ تمام احمدی بچوں سے والہانہ پیار اور ان کی صحت و سلامتی کا خیال بھی
رکھتے تھے۔ اللہ تعالیٰ نے آپ کو علم کا گنج بے بہا عطا فرمایا تھا۔ اور اس حقیقت کا یقین رکھتے کہ
”اسلام میں سچے علم کا وہ مقام تسلیم کیا گیا ہے جو ایمان کے بعد کسی دوسری چیز کو حاصل نہیں۔“
بسم اللہ الرحمن الرحیم

زریعہ معاش:

حضرت والد صاحبؒ کو روزگار کے لئے بھی بہت تنگ و دوکرنی پڑی ہے جس نے
ایک غریب خاندان اور مفلوک الحال گھرانے میں جنم لیا ہو۔ جہاں تعلیم و تربیت کا فقدان اور

وسائل محدود ہوں۔ لیکن۔۔۔۔۔ ”من در چہ خیالم و فلک در چہ خیال کارے کہ خدا کند بشر را چہ مجال۔“ شفیق باپ کی دعا قبول ہوئی اور بیٹے کو بجائے سوئی کے قلم کی روزی نصیب ہوئی۔

آپ قادیان اور علیگڑھ میں تعلیم و تربیت کے زیور سے آراستہ و پیراستہ ہوئے۔ (یاد رہے کہ اگر فضل الہی شامل حال نہ ہوتا تو ان دنوں علیگڑھ یونیورسٹی میں ایک کشمیری طالب علم کا تعلیم پانا۔۔۔ ”کوہ کن کا جوئے شیر لانے سے کم نہ تھا)

حضرت والد صاحبؒ تعلیم سے فارغ ہو کر اپنے مادر وطن کشمیر واپس آئے۔ اور رزق حلال کے لئے تگ و دو شروع کی۔ یہ ایک مسلمہ امر ہے۔۔۔ ”درخت اپنے پھل سے پہچانا جاتا ہے۔“ اسی طرح انسان اپنی عملی زندگی سے پہچانا جاتا ہے۔ نیک اعمال سے ہی آدمی کی عزت، محنت، دیانت اور شجاعت جیسی اچھی صفات نکھر آتی ہیں۔ اور بد اعمالی کے شکار لوگ اپنی عزت و آبرو برباد کر دیتے ہیں۔ اور عذاب الہی کے قریب ہو جاتے ہیں۔ دراصل اللہ تعالیٰ فراخی یا تنگی کے ذریعہ انسان کی صلاحیتوں کا امتحان کرتا ہے۔

کشمیر میں اس وقت ڈوگر حکومت تھی۔ حضرت والد صاحبؒ نے ارباب اقتدار و اختیار کے سامنے ملازمت کے لئے درخواست دی۔ ضرورت کے مطابق حضرت خواجہ صاحبؒ گولدرخ میں ”گرو دار قانون گو“ کا عہدہ سونپا گیا اور مشاہرہ نور و پیہ ماہانہ ملتا تھا۔ بددیانت ملازم سرکار کی پانچوں انگلیاں گھی میں ہوتی تھیں کیونکہ ملازم سرکار کا بہت رعب و داب ہوتا تھا۔ اور عام ملازم رشوت لینا اپنے لئے کوئی عار نہیں سمجھتا تھا۔ نا ہی حق تلفی یا گناہ کا کوئی تصور تھا۔ غرض رشوت کا بازار گرم تھا۔ لیکن حضرت والد صاحبؒ مرحوم اپنے آپ کو اپنے پیرومرشد حضرت مسیح موعود علیہ السلام کا ادنیٰ ترین غلام تصور کر کے رشوت لینا تو درکنار کوئی ناجائز یا خلاف قانون یا خلاف اخلاق کام کرنے کا موہوم خیال تک دل و دماغ میں نہ لاتے تھے۔ بلکہ اپنی تھوڑی سی تنخواہ (مبلغ ۹ روپیہ) کو بہت جانکر حلال و طیب روزی پر ہمیشہ نازاں رہتے تھے۔

اسی بارے میں آپ کے بھائی اور ساتھی چچا محمد عبداللہ صاحب میر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا۔۔۔۔۔ ”تعلیم مکمل کر کے خواجہ عبدالرحمن صاحب میر واپس کشمیر آئے۔ خواجہ صاحب فرمایا کرتے تھے۔۔۔ ”کہ میں پہلے لداخ (کشمیر) میں گرو دار قانون گو کے عہدہ پر کام کرتا رہا۔“

باوجود قلیل تنخواہ کے مجھے ازل سے ہی رشوت سے بلکہ رشوت خور لوگوں سے نفرت تھی۔“
 لدراخ وادی کشمیر سے دور اور جموں و کشمیر کی بہ نسبت بلندی پر واقع ہے۔ سال کے اکثر مہینوں
 میں برف جمی رہتی ہے۔ اور کڑا کے کی سردی ہوتی ہے۔ برف کی وجہ سے راہ آمد و رفت مسدود
 ہوتی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ خواجہ صاحب لدراخ سے ملازمت چھوڑ کر واپس کشمیر آئے۔ چونکہ
 آپ ایف اے پاس تھے سرینگر میں اسلامیہ ہائی سکول میں بحیثیت ہیڈ ماسٹر آپ کو ملازمت
 ملی۔ کچھ مدت کے بعد یہ ملازمت بھی راس نہ آئی۔ کسی اور ملازمت کی روزی کمانا مقدر میں
 تھا۔ اس زمانے میں وادی کشمیر میں ڈوگر شاہی میں پڑھے لکھے اور سند یافتہ بہت کم تھے۔ اس
 لئے ہر محکمہ میں اعلیٰ سند یافتہ شخص کی قدر دانی ہوتی تھی۔ اور میٹرک پاس امیدوار کو تحصیلدار یا اس
 کے برابر کی ملازمت مل سکتی تھی۔

حضرت والد صاحبؒ نے محکمہ جنگلات کے چیف کنسرویٹرس سٹی صاحب کے پاس
 ملازمت کے لئے درخواست پیش کی۔ چند دنوں کے بعد کنسرویٹر موصوف نے حضرت خواجہ
 صاحب کو ”فارسٹ ریجن آفیسر“ کے عہدہ پر تعینات کیا۔ اور تارنٹارمنٹ اسی عہدہ پر فائز رہے۔

حضرت والد صاحبؒ مرحوم کے متعلق محکمہ جنگلات کے ایک اعلیٰ

آفیسر کے تاثرات !!!

حضرت خواجہ صاحبؒ کی وفات ۱۹۵۰ء میں ہوئی۔ گھر میں کوئی زریعہ آمد نہ تھا۔ بڑے دو
 بھائی اور ایک بہن پہلے ہی Partition میں پاکستان چلے گئے تھے۔ اس لئے باپ کا سایہ
 عاطفت سر سے اٹھ جانے کی وجہ خاکسار کی تعلیم بھی متاثر ہوئی۔ لیکن اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم اور
 والدہ صاحبہ مرحومہ و مغفورہ کی ہمت و شفقت نے ساتھ دیا۔ یعنی پرائمری پاس کر کے اپنے
 گاؤں آسنور سے سات میل دور قصبہ شویان کے ہائی سکول میں داخلہ لیا۔ اور چودہ میل کا سفر
 روزانہ آنے اور جانے میں کرنا پڑتا تھا۔ غرض انٹرنس پاس کرنے کے معاً بعد اپنے حالات کے
 پیش نظر والدہ صاحبہ کے فرمان پر خاکسار نے سرینگر محکمہ جنگلات میں ملازمت کے لئے

درخواست دے دی۔

جونہی میری درخواست کنسرویٹر فارسٹس نے دیکھ لی اور مجھے اپنے دفتر میں بلایا خاکسار (حلفاً) یہ بیان کرتا ہے کہ جونہی میں دفتر میں داخل ہوا کنسرویٹر صاحب اپنی کرسی چھوڑ کر میرے پاس آئے اور مجھے گلے لگایا۔ میں حیران و ششدر رہ گیا کہ یہ معاملہ کیا ہے۔ کہاں میں پھٹے پرانے کپڑوں میں ملبوس ایک دیہاتی لڑکا اور کہاں کنسرویٹر فارسٹس۔ غرض کنسرویٹر موصوف نے مجھ سے مخاطب ہو کر کہا کہ ”کیا آپ واقعی خواجہ صاحب (خواجہ عبدالرحمن) کے بیٹے ہیں۔ میں نے جواباً کہا جی ہاں۔۔۔۔۔ میں ان کا سب سے چھوٹا لڑکا ہوں۔ تو ان الفاظ میں حضرت والد صاحب کے متعلق اپنے خیالات کا اظہار کیا۔۔۔

”خواجہ صاحب کو میں بہت قریب سے جانتا ہوں میں نے ان کے ساتھ محکمہ جنگلات میں بہت وقت گزارا ہے۔ اور ان کے ساتھ کام کیا ہے۔ واقعی وہ ایک فرشتہ خصلت انسان تھے۔ میں نے محکمہ جنگلات میں صرف اُس نفس واحد کو دیانت دار اور ایماندار پایا۔ اور میرا خیال ہے کہ اس محکمہ جنگلات میں مستقبل میں بھی خواجہ صاحب جیسا نیک سیرت اور اعلیٰ دیانت دار کوئی نہیں ہوگا۔ اللہ ان کو غریقِ رحمت فرمائے۔“ مردے فقیر بود خدا مغفرت کرے“ آمین۔

یاد رہے منذکرہ کنسرویٹر صاحب مسمی غلام رسول کشتواڑی نے خاکسار کو اس وقت یہ مشورہ دیا کہ تم ایف اے کر لو بعد میں پھر تجھے اپنے باپ کا عہدہ دیا جائیگا۔ میں نے جواباً ان کو کہا کہ خاکسار کے گھریلو حالات ابتر ہو چکے ہیں۔ ہم لوگ روزی روٹی کے محتاج ہیں۔ غرض میری (خوش قسمتی) سے اس وقت محکمہ میں فارسٹر کی کوئی اسامی خالی نہ تھی۔ خاکسار جب واپس گھر پہنچا اور اپنی والدہ صاحبہ کو ساری کہانی سنائی تو والدہ صاحبہ سن کر آبِ دیدہ ہوئی۔ میں نے محکمہ تعلیم میں بھی ملازمت کے لئے درخواست دی تھی۔ بزرگوں کی دعاؤں اور والدہ مرحومہ کی کوشش سے خاکسار کو اپنے ہی گاؤں آسنور میں بحیثیت مدرس متعین کیا گیا۔ اللہ تعالیٰ کا لاکھ لاکھ شکر و ثنا ہے خاکسار نے حتی المقدور محکمہ تعلیم میں اپنا فرض منصبی بطریق احسن سرانجام دیا۔ اور بفضل تعالیٰ اور والد صاحب مرحوم کی نیک دعاؤں سے اٹھتیس سال سروس کے بعد باعزت طور ملازمت سے سبکدوش ہوا۔ الحمد للہ۔

حضرت والد صاحب مرحوم نے ساٹھ (۶۰) سال کی عمر پائی۔ اور میعاد ملازمت تقریباً پینتیس سال رہی اس میں زیادہ عرصہ ریٹج آفیسر کے عہدہ پر فائز رہے۔ عرصہ ملازمت دیانت، محنت، صبر و سکون اور قناعت سے گزارا اور آپ کے پیش نظر زندگی کا یہ مقصد رہا۔

خیرے کن خیرے کن وغنیمت شمار عمر: زراں پیش ترکہ بانگ برآید کہ فلدں نماوند

آپ کی سیرت کردار سے یہ بات ثابت ہوئی ہے کہ آپ نے اس ورلی زندگی میں ایسی ممکن تمنائیں کیں جو سراسر اللہ کی رضا کے لئے تھیں آپ کی زبان پر یہ کلمات روز و شب رہتے تھے۔ ”سب کچھ تیری عطا ہے گھر سے تو کچھ نہ لائے۔“ دوران ملازمت آپ جہاں بھی گئے بلا خوف و خطر اپنے فرض منصبی کو سرانجام دیا۔ یعنی دست با کار دل بایار کو اپنا شیوہ بنایا تھا۔ ٹھیک وقت پر نمازوں کی ادائیگی، دعاؤں کی عادت اور عسر و یسر میں اللہ پر توکل آپکا اوڑھنا بچھونا رہا۔ جنگلات کا ہر وہ ریٹج جہاں آپ نے ڈیوٹی دی ہے وہاں کا چپہ چپہ اور بوٹا بوٹا یہی گواہی دیتا ہے کہ اس مرد مومن نے ہمیشہ ہمارے سائے تلے اللہ کی یاد میں دن گزارے ہیں۔ اور وہاں کے لوگوں کے تاثرات خاکسار نے قارئین کی دلچسپی اور افادہ کے لئے اس کتاب میں پیش کئے ہیں۔ وباللہ التوفیق۔ حضرت خواجہ صاحب مرحوم نے جہاں جہاں ڈیوٹی انجام دی ہے۔ آپ کی ڈائری کے مطابق اس کا احوال یوں ہے۔۔۔

1۔ آپ قادیان کے بعد علیگڑھ سے واپس کشمیر غالباً 1912ء میں آئے ہیں۔

2۔ 1913ء سے لیکر 1915ء تک بحیثیت ”گردوار قانون گو“ علاقہ لداخ میں اور بحیثیت ہیڈ ماسٹر اسلامیہ ہائی اسکول سری نگر کشمیر میں رہے۔

3۔ 1916ء سے لیکر 1920ء تک آپ کی ڈیوٹی بحیثیت ڈیپارٹمنٹ آفیسر ہندواڑہ، اور اوڑی کشمیر میں رہی۔

4۔ 1921ء میں آپ کی ڈیوٹی بحیثیت ڈیپارٹمنٹ آفیسر سمندری باغ سری نگر میں رہی۔

5۔ 1925ء سے لیکر 1929ء تک حضرت خواجہ صاحب کی ڈیوٹی بحیثیت ریجنل جنگلات کرناہ (کشمیر) جاگراں وغیرہ میں رہی۔

6۔ 1930ء میں آپ سپیشل ریجنل ڈوروشاہ آباد ریٹج (کشمیر) رہے۔ اور ہیڈ آفس اننت

ناگ (اسلام آباد) میں تھا۔ 1932ء میں آپ کی ڈیوٹی بحیثیت ریجن آفیسر اچھامل، کوٹھار کشمیر میں رہی

7-1933ء سے لے کر ۱۹۳۵ء تک آپ کی ڈیوٹی کرناہ بانڈی، مظفر آباد (کشمیر) میں رہی۔

8-1936ء سے لیکر 1937ء تک آپ ریجن آفیسر کھٹائی، اوڑی کشمیر رہے۔

9-1940ء میں آپ کی ڈیوٹی بحیثیت ریجن آفیسر حمل ریجن، بارہ مولہ کشمیر میں رہی۔

10-1941ء میں آپ ریجن آفیسر دو میل کشمیر رہے۔

11-1944ء میں آپ ریجن آفیسر بمقام گڈی خاص (جموں) میں رہے۔

12- اس کے علاوہ ویری ناگ کو کرناگ (کشمیر) میں بحیثیت ریجنر جنگلات پانچ سال

رہے۔

13- علاقہ نور آباد (کو لگام کشمیر) کم از کم دو سال ریجن آفیسر رہے۔ اور ہیڈ کوارٹر اکہال میں تھا۔ یاد رہے حضرت خواجہ صاحب مرحوم کا گاؤں موضع آسنور بھی علاقہ نور آباد میں آتا ہے۔ بزرگوں نے مجھ سے بیان کیا کہ خواجہ صاحب اپنے رشتہ داروں اور گاؤں والوں کو جنگل کا نقصان کرنے نہیں دیتے تھے۔ البتہ تحت قانون رعایتی قیمت پر بعد (موس) مہر جنگلات لگا کر اور درخت کی پیمائش کر کے دیدیتے تھے۔

گاؤں کے ایک قریبی رشتہ دار نے ان دنوں کا خواجہ صاحب کے متعلق دیانت کا ایک لطیفہ سنایا۔۔۔ ”کہ جب پھوپھا جان (خواجہ عبد الرحمن صاحب ریجنر) نزدیکی جنگل کے دورہ پر آئے۔ میں ایک سرسبز درخت کی ڈالیاں کھاڑی سے کاٹ رہا تھا۔ پھوپھا جان میری طرف آئے مجھے یہ خوش فہمی تھی کہ ریجنر صاحب میرے پھوپھا لگتے ہیں۔ مجھے کچھ رعایت دیدیں گے۔ جب وہ میرے قریب آئے میں نے درخت کے اوپر سے السلام علیکم کہا تو آپ نے ولیم السلام کہہ کر مجھے درخت سے نیچے اترنے کے لئے کہا۔ جب میں نیچے اُترتا تو آپ نے میرے کان پکڑ کر میری پٹائی کی۔ اور فرمایا کہ اس سرسبز درخت کی ڈالیاں کیوں کاٹ دیں۔ میں شرمندہ ہوا۔ اس کے بعد غصہ سے کہا کہ اب لکڑیاں جمع کر کے ایک گٹھا بناؤ۔ پھر آپ نے جیب سے ایک

سرکاری چالان بگ (رسید بگ) نکال کر اس لکڑی کے گٹھے کا عوضانہ موازی چار آنے رسید کاٹ لی۔ تاکہ قیمت داخلہ خزانہ سرکار ادا ہو۔ اور مجھے تنبیہ کر کے بتایا کہ اب گیلی مٹی لا کر کاٹی ہوئی ڈالیوں کی جگہ لگا دو اور میں نے ایسا ہی کیا۔“

اگرچہ یہ ایک معمولی سا واقعہ ہے لیکن اس سے آپ کی امانتداری اور فرض منصبی کا علم ہوتا ہے۔ تاہم علاقہ کے بعض لوگوں نے حضرت خواجہ والد صاحب کی رشتہ داری، شرافت اور سادہ مزاجی کا ناجائز فائدہ جنگل سے اٹھانا چاہا۔ ان حالات کے پیش نظر ایک مخلص اور ذی عزت رشتہ دار خواجہ عبدالرحمن صاحب ڈار مرحوم رئیس نور آباد ساکنہ آسنور نے حضرت والد صاحب سے مشورہ دیا کہ آپ اپنے علاقہ سے دور کہیں اپنی تبدیلی کروالیں۔ تاکہ آپ کی ذات پر کوئی الزام نہ آنے پائے۔ چنانچہ حضرت خواجہ صاحب دوسرے رتج میں تبدیل ہوئے۔ یاد رہے کہ حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب ڈار مرحوم حضرت والد صاحب کی بہت عزت و احترام کرتے تھے۔ خواجہ ڈار صاحب موصوف میری والدہ صاحبہ مرحومہ کے چچا زاد بھائی اور بہنوئی بھی تھے۔ اس لئے دونوں کو آپ سے بھی والہانہ محبت تھی۔

رشوت سے بیزاری!!!

راجہ فضل الرحمن خان صاحب نے مجھ سے بیان کیا۔۔۔ ”کہ رینجر صاحب کی ڈیوٹی علاقہ کوٹھار (اسلام آباد) میں بحیثیت ڈیمارکیشن آفیسر تھی۔ محکمہ ڈیمارکیشن حدود و جنگلات اور لوگوں کی زرعی زمین کی حد بندی کا کام کرتا ہے۔ معاشرہ میں رشوت کی ریل پیل تھی۔ علاقہ کے سرکردہ لوگوں نے حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میر کو رشوت دینے کا منصوبہ بنایا تاکہ ان لوگوں کی ناجائز زمین محفوظ رہتی۔ اس زمانہ میں چاندی کا سکہ (روپے) تھا۔ اُن سرکردہ لوگوں نے ہر دیہاتی سے روپیہ جمع کر لئے اور ایک خوبصورت چمڑے کی تھیلی میں بند کر کے علی الصبح رینجر صاحب کے پاس آئے اور روپیوں کی تھیلی آپ کے سامنے رکھ دی۔ جونہی خواجہ صاحب نے یہ تھیلی دیکھی وہ اس معاملہ کو بھانپ گئے۔ اور اُن لوگوں سے کہا کہ اس تھیلی میں کیا ہے۔ سرکردہ لوگوں نے کہا کہ یہ آپ کے لئے نذرانہ ہے۔ آپ ہماری زرعی زمین کے ساتھ زیادہ حصہ

جنگلات کی حد بندی سے ہمارے لئے محفوظ رکھ لیں۔ حضرت خواجہ صاحب نے ان لوگوں کو غصہ سے کہا یہ نذرانہ نہیں رشوت ہے۔ میں کوئی بھی چیز نہیں لیتا۔ اور اس تھیلی کو باہر رکھو اور کل نمبر دار کی معیت میں ان سب لوگوں کو ساتھ لاؤ جن سے یہ روپیہ وصول کیا ہے۔ اُس کے بعد تمہاری بات سنوں گا۔ دوسرے دن سب گاؤں کے لوگ جمع ہوئے اور نمبر داروں کے ذریعہ سبھوں کو اپنا اپنا چاندی کا روپیہ واپس دلوا دیا۔ پھر لوگوں سے مخاطب ہو کر فرمایا۔۔۔ ”میں رشوت خور افسر نہیں ہوں۔ رشوت لینا اور دینا اللہ اور اللہ کے رسولؐ نے حرام قرار دیا ہے۔ لوگوں نے شرمندہ ہو کر گریبانوں میں اپنے سر ڈالے۔ پھر خواجہ رینجر صاحب نے غریب پروری اور حق العباد کے جذبے کے تحت اُن سب لوگوں کو بتایا کہ میں اپنی طرف سے تم غریبوں کی سفارش حکومت وقت سے قانون کے تحت کروں گا۔ تاکہ تمہاری زرعی زمین متاثر نہ ہونے پائے۔“

یہ وہ روح ہے جو احمدیت نے ان میں ودیعت کی تھی۔ آپ عملاً اور فطرتاً اس روح کو زندگی بھر اختیار کئے ہوئے تھے۔ جس کی نشاندہی اللہ اور اس کے رسولؐ نے کی تھی حضرت والد صاحب کی طبیعت حرام کمائی، ناجائز دولت اور دنیاوی جاہ و جلال سے ہمیشہ متنفر رہی۔

آپ کے ساتھی چچا محمد عبد اللہ صاحب میر آف گاگرن نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا ایک دفعہ خواجہ رینجر صاحب کے ریج میں ایک بڑا ٹھیکیدار جنگل ساکن ہرناگ کشمیر کام کر رہا تھا۔ اس نے بددیانتی سے جنگل میں اپنے آدمیوں سے ایسے درختاں کٹوائے جن کی مذکورہ ٹھیکیدار کو محکمہ کی اجازت نہیں تھی۔ حضرت رینجر صاحب نے رنگے ہاتھوں ان کو پکڑ لیا۔ اور آفیسر بالا کے نوٹس میں لایا۔ جب ٹھیکیدار کو علم ہوا کہ رینجر صاحب (خواجہ عبد الرحمن صاحب میر) نے میرے خلاف رپورٹ کی ہے تو ٹھیکیدار نے کسی آدمی کے ذریعہ خواجہ رینجر صاحب کو گیارہ ہزار روپیہ بطور رشوت دینا چاہا لیکن خواجہ صاحب نے اس آدمی کو کہا کہ اگر بددیانت ٹھیکیدار گیارہ لاکھ روپیہ بھی دیگا تو بھی میں جھوٹی گواہی یا غلط رپورٹ نہیں لکھوں گا۔ غرض تحقیقات کے بعد ٹھیکیدار مذکور کو جنگل کی چوری ثابت ہوئی اور وہ بلیک لسٹ میں آ گیا اور ہمیشہ کے لئے جنگل کے ٹھیکہ سے محروم ہو گیا۔

حضرت والد صاحب مرحوم نے محکمہ جنگلات میں اپنی ایک علیحدہ انفرادیت قائم کی تھی۔

چپراسی سے لیکر چیف کنسرویٹر تک آپ جانے مانے دیانت دار، ایماندار، اور پاکباز مشہور تھے۔ اپنے ششہ خصائل کی وجہ سے آپ کو ”درویش“ بھی کہتے تھے۔ سب مسلمان، ہندو اور سکھ عیسائی آپ کو عزت کی نظروں سے دیکھتے تھے۔ آفسران اور ماتحت عملہ پر آپ کا قدرتی رعب سا تھا اور سب اس بات کے معترف تھے کہ یہ انسان حرام کھانے والا نہیں، چور اور بددیانت کی سرپرستی کرنے والا نہیں۔ حسد اور کینہ رکھنے والا نہیں، لوٹ مار کا حامی نہیں اور بدعہد نہیں بلکہ اپنے دین اور دنیاوی قوانین کی حفاظت کرنے والا اور اس کے مطابق زندگی گزارنے والا ایک باعمل سچا مسلمان ہے۔ محکمہ جنگلات میں حضرت خواجہ صاحب مرحوم کو آفسران بالا ایسے رینجوں میں تبدیل کرتے تھے جہاں جنگلات میں ٹھیکہ کا کام چل رہا ہوتا کیونکہ اس رینج میں لاکھوں روپیہ کا ٹھیکہ ہونے کی وجہ روپے پیسے کی ریل پیل رہتی تھی۔ بددیانت ملازم اور ٹھیکیدار جنگل ہاتھ مارنے کی کوشش کرتے تھے۔ لیکن حضرت خواجہ صاحب اپنی قوت ایمان سے ان کا مقابلہ کرتے تھے اور دیانت داری سے اپنی ڈیوٹی سرانجام دیتے تھے۔ اور دیانت اور قانون کے دائرے سے کسی کو بھی نکلنے کی اجازت نہیں دیتے تھے اس طرح اپنا فرض انجام دیتے تھے۔ حضرت خواجہ صاحب کے متعلق عبدالسلام صاحب ٹاک سابق صدر جماعت احمدیہ سرینگر کشمیر کے تاثرات۔۔۔۔۔ خاکسار کی درخواست پر محترم ٹاک صاحب نے حضرت خواجہ صاحب کی سیرت کے چند پہلو پر روشنی ڈالی اور بقول ان کے ”تعمیل ارشاد میں یہ عاجز حضرت خواجہ عبد الرحمن صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ اپنے ان ایام کے کچھ واقعات اپنی یادوں کے دھنسنے سے نکال کر پیش خدمت کرنے کا شرف حاصل کر رہا ہے۔ جو ایام میں نے مرحوم کی صحبت میں گزارے ہیں۔ اور ان کی کچھ خدمت کرنے کی اللہ تعالیٰ نے توفیق عطا فرمائی۔ مجھے اس پر جائز فخر ہے اور یہ میرا ایک اچھا سرمایہ ہے جو بزور بازو کوئی حاصل نہیں کر سکتا۔“ تانہ بخشند خدائے بخشند۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ سن ۱۹۳۱ء یا ۱۹۳۲ء عیسوی کی بات ہے میری عمر بارہ یا تیرہ سال تھی۔ میں اسلامپور، ڈل سکول انت ناگ (اسلام آباد) میں چھٹی جماعت میں زیر تعلیم تھا یہاں میرے بہنوئی خواجہ احمد ڈار صاحب مرحوم ان دنوں بقید حیات تھے اس گھر میں احمدیت ان کے

والد بزرگوار حاجی عبدالرحیم صاحب ڈار مرحوم کے ذریعہ آئی تھی۔ کہا جاتا ہے کہ مرحوم حاجی صاحب جب گھر سے بارادہ حج بیت اللہ شریف تشریف لے جانے لگے تو انہوں نے ایک خواب دیکھی جس میں انہیں بتایا گیا کہ مسیح محمدی علیہ السلام کا ظہور ہو چکا ہے۔ چنانچہ روایت کے مطابق مرحوم کو جب پتہ چلا کہ مسیح موعود علیہ السلام کی بعثت قادیان میں ہوئی ہے تو وہ پہلے قادیان گئے اور وہاں بیعت سے مشرف ہو کر حج کا سفر اختیار کیا۔ اور واپسی پر اپنے ظاہری اثر و رسوخ اور پاک نفسی کی بدولت اچھے خاصے حلقہ اثر میں احمدیت کی تبلیغ کی۔ وہ کب فوت ہوئے اس کا خاکسار کو علم نہیں۔ البتہ یہ گھر قدرتی طور پر علاقے بھر کے احمدیوں کی آماجگاہ تھا۔ اس کا میرا ذاتی مشاہدہ ہے یہاں تک کہ جمعہ کی نماز کا اہتمام بھی ان کے گھر کے سب سے بڑے اور وسیع کمرے میں ہوتا تھا۔ اور مجھے یاد ہے مرحوم سید محمد شاہ صاحب سیفی آف بیج باڑہ اور مرحوم مولوی عبدالواحد صاحب فاضل آف آسنور جمعہ پڑھایا کرتے تھے۔ سید محمد شاہ صاحب سیفی مرحوم جو محکمہ تعلیم میں استاد کی حیثیت سے کام کرتے تھے۔ غالباً اپنی ملازمت کے سلسلے میں یہاں تھے۔ اور مرحوم عبدالواحد صاحب فاضل تو باقاعدہ مرکزی طرف سے یہاں بہ حیثیت مبلغ تعینات تھے۔ اللہ ان کی مغفرت فرمائے۔ آمین۔ واقعی تبلیغ کا حق ادا کرتے تھے اس تمہید سے میری غرض صرف اتنی ہے کہ اس حقیقت کو اجاگر کر سکوں کہ یہ گھر انہ اس زمانے میں تبلیغ کا مرکز تھا۔ اور اسی وجہ اگر بہ سلسلہ ملازمت کسی احمدی کی تبدیلی یہاں ہو کر تھی یا کوئی باہر کا مہمان آ جاتا تو سب سے پہلے اس گھر میں حاضری دینی ضروری ہوتی تھی۔ اور یہ عاجز اپنی پڑھائی کے سلسلہ میں اسی گھر میں قیام پذیر تھا۔

غالباً اسی سال کی بات ہے حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب آف آسنور جو حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے صحابی تھے اور محکمہ جنگلات میں ریجن آفیسر تھے اپنی ملازمت کے تعلق میں یہاں تبدیل ہو کر تشریف لائے اور اسی گھر کے ایک چھوٹے کمرے میں رہائش اختیار کی۔ اس مکان کی مکانیت کافی تھی۔ لیکن آج کی طرح نلکوں کا پانی نہیں بہتا تھا اور نہ گھر میں آج کی طرح ہاتھ روم ہوا کرتے تھے۔ صحن میں البتہ ایک بیت الخلا تھا جسے روز صبح کے وقت ایک صفائی کرنے والا صاف کر لیا کرتا تھا اس کرپچاری کو کشمیری میں وائل کہتے ہیں۔ مرحوم خواجہ صاحب

رات کو تہجد کے لئے اٹھا کرتے تھے اور ظاہر ہے کہ آدھی رات کو ان کے لئے چشمے سے پانی دی پر وضو کے لئے جانا تکلیف والا یطابق کے مترادف تھا اس لئے مجھے گھر والوں کی طرف سے یہ ڈیوٹی سونپی گئی کہ رات کو سونے سے پہلے ان کے کمرے میں پانی کا لوٹا بھرا رہے۔ چنانچہ میری خوش قسمتی سے کئی ماہ تک خواجہ صاحبؒ کی اس خدمت کی سعادت حاصل رہی۔ ذالک فضل اللہیۃ من یشاء۔

فالحمد للہ علیٰ ذالک۔ مرحومؒ نے میری اس حقیر خدمت کے بدلے میں میرے لئے کیا کیا دعائیں مانگی ہوگی۔ اس کا اندازہ صرف اس خاکسار ہی کو ہے جن کے شیریں ثمرات سے میں عمر بھر مستفیض رہا۔ اور بفضلہ اب بھی ہوں ان کے کمرے میں کھانا پہنچانا بھی میرے فرائض میں شامل رہا۔ میرا صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے عادات نہایت سادہ اور ایک حقیقی مومن کے شایان شان تھے۔ لباس بہت سادہ لیکن نہایت صاف ستھرا پہنا کرتے تھے۔ قمیض عموماً کھدر کی ہوا کرتی تھی۔ سر پر سفید طرے دار شملہ والی پگڑی پہنا کرتے تھے۔ کھانے پینے میں بھی نہایت سادگی برتتے تھے۔ صاحب خانہ کی مالی حالت ان دنوں بہت اچھی تھی۔ اس لئے کھانا اوسطاً اچھا بنتا تھا۔ لیکن ہمہ مرحومؒ نہایت کم خور تھے۔ معمول کے کھانے کے علاوہ میں نے انہیں بے جا تکلفات کرتے نہیں دیکھا۔

اس گھر میں پہلے بھی مرحومؒ کے ہمنام اور ایک ریخ آفیسر صاحب کبھی مقیم رہے تھے۔ اور ایک دن ان صاحب نے اپنے اثر و رسوخ کے تحت اپنے ڈیوٹی کے علاقے سے کافی ہیزم سوختنی مفت لا کر دی تھی۔ یہ تجربہ شاید گھر والوں کے ذہن میں موجود تھا واللہ اعلم بالصواب اور غالباً اسی پس منظر کے پیش نظر گھر والوں نے خواجہ صاحبؒ سے بھی جلانے کی لکڑی کی فرمائش کی۔ مرحومؒ نے بات تو سن لی لیکن اپنے علاقے میں ڈیوٹی پر جانے کے باوجود بھی اس پر عمل کرنے میں اتنی دیر کر دی کہ گھر والوں نے مجھے ان کے ڈیوٹی کے علاقے میں انہیں یاد دہانی کرانے کے لئے بھیج دیا۔ اچھا بل اسلام آباد سے قریب اوس کلومیٹر کے فاصلے پر ہے۔ دور اس علاقے میں ان کی ڈیوٹی تھی۔ یہاں پہنچنے پر پتہ چلا کہ موصوف اچھا بل سے قریب چار کلومیٹر دور کوٹھہار میں قیام پذیر ہیں۔ میں وہاں گیا تو دیکھا کہ مرحومؒ ایک بڑے مکان کے ایک بڑے کمرے میں تشریف فرما

ہیں۔ اور ان کے سامنے بیس پچیس کے قریب آدمی بیٹھے ہیں۔ جب مجھے دیکھا تو پاس بلا کر آنے کی وجہ دریافت فرمائی۔ میں نے یاد دہانی کرائی مجھے رخصت کر دیا لیکن مجھے یاد نہیں یاد دہانی کرانے پر انہوں نے مجھ سے کیا فرمایا میں واپس آ گیا۔ تیسرے یا چوتھے دن قریباً دس آدمی ان کے علاقے سے اپنے کندھوں پر لکڑی کے چھوٹے چھوٹے گٹھے لے کر صحن میں داخل ہو گئے۔ جب ان سے پوچھا گیا کہ یہ لکڑی کیسی ہے۔ اور پھر کوئی قیمت دینی ہے۔ تو انہوں نے کہا کہ ریختہ صاحب نے ہم کو ایسا کرنے کے لئے کہا ہے۔ اور فی گٹھا چھ آنے کے حساب سے قیمت بھی ادا کر دی ہے۔ اب یہاں یہ بات قابل ذکر ہے کہ جنگل کے نزدیک رہنے والے لکڑیوں کے گٹھے قصبے میں بیچنے کے لئے لایا کرتے ہیں۔ اور بیس پچیس کلو وزن کی گٹھے کی عام قیمت چار آنے ہوا کرتی تھی۔ ان ایام میں شخصی راج کیوجہ عام طور پر کشمیر میں غربت و افلاس کا دور دورہ تھا اس لئے غریب لوگ دس دس پندرہ پندرہ کلو میٹر سے ایسی لکڑی لا کر چار آنے میں بچکر اپنے گھر کے لئے سودا سلف خرید لے جایا کرتے تھے۔ اور جو لکڑی مرحوم نے چھ آنے فی گٹھا کے حساب سے خرید کر بھیجی تھی اس کا وزن فی گٹھا بہ مشکل دس پندراں کلو تھا میں اس کا چشم دید گواہ ہوں۔ مرحوم صاحب خانہ کو جب اس واقع کا پتہ چلا تو اسے سخت دکھ اور افسوس ہوا کہ مرحوم کو تکلیف دے کر پیسے کا ضیاع کر دیا۔

ایک دن خواجہ صاحب نے مجھے اور صاحب خانہ کے بیٹے کو جو مجھ سے دو درجے نیچے پڑھتا تھا۔ اپنے دفتر میں واقع جنگلات منڈی اسلام آباد کشمیر آنے کی دعوت دی۔ سکول سے واپسی پر ہم چار بجے کے بعد ان کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ ان کے دفتر کا ماحول پاکیزہ اور صاف ستھرا تھا سبزہ زاروں اور پھولوں کی کیاریوں کے درمیان دفتر کی عمارت اتنی خوبصورت لگتی تھی۔ جیسے انگٹھی میں زرد جڑا ہوا ہے میرے ذہن میں وہ نقشہ اب بھی محفوظ ہے۔ مرحوم لان میں عصر کی نماز پڑھ رہے تھے۔ نماز سے فارغ ہونے پر مجھے یاد نہیں کہ انہوں نے ہمارے ساتھ کیا باتیں کیں البتہ ہمیں رخصت کرتے وقت ایک ایک پیسہ عنایت فرمایا۔ کہ جا کر اس کا گڑ کھائیں تو اس واقعہ کی حلاوت اب بھی میرے تحت الشعور میں قائم ہے۔ اور جب بھی ان واقعات پر یادوں کے دریچوں سے نظر پڑتی ہے تو بے اختیار مرحوم کے حق میں رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دعا نکلتی

ہے۔ مرحومؒ زیادہ دیر اسلام آباد میں نہیں رہے۔ یہاں سے غالباً جلد ہی ان کی تبدیلی کسی اور جگہ ہوئی۔ واللہ اعلم بالصواب۔ اللہ تعالیٰ اعلیٰ علیہم میں ان کے درجات بلند فرماتا رہے۔ آمین خاکسار احقر العباد۔ عبد السلام ٹاک صدر جماعت احمدیہ سرینگر کشمیر۔

چچا محمد عبد اللہ صاحب میر حضرت والد صاحب مرحوم کے چچا زاد بھائی تھے۔ لیکن دوران ملازمت رفاقت اور جذبہ احمدیت کی وجہ انہیں اپنا رگا بھائی سمجھتے تھے۔ عام لوگوں اور ہم سب بھائی بہنوں کو یہی خیال تھا حالانکہ ہمارے جو سگے چچا تھے وہ ایک غیر احمدی اور بد زبان شخص تھے۔ ان کے ساتھ خواجہ والد صاحب کے زیادہ تعلقات نہیں تھے۔ لیکن سگے بھائی کے ناطے ان کی مدد کرتے تھے۔ جن لوگوں نے حضرت والد صاحب کے ساتھ کوئی احسان، مدد، اور خدمت کی ان کے ساتھ آپ نے تاحیات خوشگوار تعلقات رکھے ان کی قلم، سخن اور درمے مدد کی رشتہ داری و دستداری کی ہمیشہ قدر کی۔ دشمنوں کے ساتھ بھی ایسا برتاؤ کیا کہ وہ بھی نرم ہو کر شرم سار ہو گئے بقول کسے۔۔۔

آسائش دو گیتی تفسیر ایں دو حرف است : بادوستان مروت بادشمناندارا

چچا جان نے ایام طفولیت سے ہی حضرت خواجہ صاحبؒ کی ریٹائرمنٹ تک ساتھ دیا۔ اور خدمت کی نیز ان ہی کی بدولت احمدیت قبول کی۔ فخر اہم اللہ احسن الجزاء گو چچا محمد عبد اللہ صاحب میر کے والد مخالف احمدیت تھے۔ چچا جان نے مڈل سکول شویان میں ابتدائی تعلیم حاصل کی۔ آپ بچپن ہی سے بہت جفاکش، زندہ دل، اور مرجان مرنج طبیعت رکھتے تھے۔ پھر سونے پر سہاگہ کے طور حضرت والد صاحبؒ کی نیک سیرت اور پاک طینت نے اپنا اثر دکھایا۔ جیسے پھول پھول سے رنگ لیتا ہے۔ اسی طرح چچا کی دنیا بھی بدل گئی۔ کثر اہل حدیث ہونے کے باوجود آپ نے معجزانہ طور احمدیت کو گلے لگایا۔ آپ بہت شریف الطبع، صوم و صلوة کے پابند، نظام احمدیت کے وفادار اور خادم دین تھے۔ اپنی جماعت موضع گاگرن شویان، صوفن نامن اور مانلو وغیرہ کے مجلس عاملہ کے ہمیشہ عہدہ دار رہے۔ سکرٹری مال اور صدر جماعت زیادہ عرصہ رہے۔ آپ ماشاء اللہ ہمارے خاندان کے فرد اول ہیں جو حج بیت اللہ سے فیضیاب ہوئے۔ حج بیت اللہ سے مشرف ہونے کے دو سال بعد ہی

اپنے مولا حقیقی سے جا ملے اور اپنے آبائی گاؤں گاگرن میں مدفون ہیں۔ انا اللہ وانا الیہ راجعون۔

چچا جان کی کہانی اپنی زبانی

چچا جان مرحوم نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا۔ ”میرے والد عبدالاحد میر کو اپنے بھائی میاں حبیب اللہ میر صاحبی کے ساتھ احمدیت کیوجہ عمر بھر جھگڑا رہا۔ اپنے بھائی کو لاکھ سمجھانے اور تبلیغ حق کا کوئی اثر نہ ہوا بلکہ الٹا چچا میاں حبیب اللہ صاحب میر کو کہتے رہے کہ تم باپ دادا کے دین سے منحرف ہوئے۔ میرا تمہارے ساتھ کوئی تعلق نہیں لیکن ساتھ ہی مجھے ہمیشہ اپنے چچا میاں حبیب اللہ صاحب مرحوم کے ساتھ اچھا برتاؤ قائم کرنے کے لئے تاکید کرتے تھے۔ میں بہت کم سن تھا۔ لیکن چچا مجھے اپنے ساتھ لیکر لوگوں کو تبلیغ کرتے تھے۔ گو میں ان دنوں اہلحدیث تھا۔ لیکن جب حضرت خواجہ صاحب مرحوم یعنی اپنے فرشتہ خصلت چچا زاد بھائی کے پاس رہنے لگا تو مجھے قبول احمدیت کی توفیق مل گئی۔ آپ نے مجھے لڑکپن سے ہی ماں باپ سے زیادہ پیار دیا اور ساتھ ہی ماہوار معقول مشاہرہ بھی دیتے رہے۔ جس سے میرے والدین کا گزارہ ہوتا تھا وہ بھی خوش تھے اور بفضلہ تعالیٰ ہم نے ایک دوسرے کا ساتھ اس خوش اسلوبی سے دیا کہ لوگوں کا اب تک یہی خیال ہے کہ یہ سگے بھائی تھے۔ الحمد للہ

حضرت خلیفۃ المسیح الثانی حضرت بشیر الدین محمود احمد صاحب کا ورود مسعود کو کرناگ کشمیر

میں!!!

چچا جان مرحوم مزید اپنے تحریر میں بیان کرتے ہیں۔۔۔

”کہ حضرت خواجہ صاحب کی ڈیوٹی کو کرناگ (کشمیر کی مشہور صحت افزاء مقام جہاں بیٹھے پانی کے بہت چشمے نکلتے ہیں) میں تھی۔ ایک دفعہ حضرت مصلح موعودؑ بمع اہل و عیال کو کرناگ تشریف آور ہوئے۔ خواجہ صاحب مرحوم نے پہلے ہی حضور کے قیام کا انتظام ڈاک بنگلہ میں کیا ہوا تھا۔ جو ڈاک بنگلہ کو کرناگ (چشمہ) سے اوپر آدھ میل کے فاصلے پر جنگل میں تھا۔ یہ بہت ہی پر فضاء اور خوبصورت جگہ تھی۔ حضور نے اس کو بہت پسند فرمایا۔ کیونکہ اس بنگلہ کے ہر سو سرسبز درخت جو آسمان سے باتیں کرتے دکھائی دیتے تھے۔ میں (محمد عبداللہ میر) ان دنوں

احمدی نہ تھا۔ لیکن چھوٹا ہونے کی وجہ سے اور حضرت خواجہ صاحب مرحومؒ کے فرمان کے مطابق حضور ایدہ اللہ تعالیٰ کی خدمت کرتا تھا۔ یعنی خدمت کے لئے حضور کے پاس ڈاک بنگلہ میں میری آمد و رفت رہتی۔ دودھ، مرغ اور اشیائے ضروری مہیا کر کے ان کی خدمت میں پیش کرتا۔ اور کبھی کبھی حضورؐ کے پیر بھی دباتا تھا۔ میں اگرچہ احمدی نہ تھا لیکن ایک غیبی طاقت نے میرے دل میں حضور ایدہ اللہ تعالیٰ کی عزت و عظمت اور پیار کا جذبہ پیدا کیا۔ میرا ایمان ہے کہ حضورؐ نے میرے لئے نہ معلوم کتنی دعائیں کی ہوں گی جس کی بدولت میں بعد تحقیقات و مطالعہ حلقہ بگوش احمدیت ہوا اور بفضل تعالیٰ احمدی ہونے پر مجھے فخر ہے۔ الحمد للہ۔

حضرت بھائی خواجہ صاحبؒ مرحوم حضرت خلیفۃ المسیح الثانی کی از حد عزت کرتے تھے۔ اور قیام کو کرناگ دن رات ان کا پورا پورا خیال رکھتے تھے۔ حضورؐ کی تشریف آوری پر پھولے نہیں سمائے اور موزوں وقتوں پر حضورؐ کے پاس جاتے تھے۔ اور ان کی مہمان نوازی کو اپنے لئے سعادت سمجھتے تھے۔

حضور اید اللہ تعالیٰ چند دن کو کرناگ میں رہ کر شاید واپس سرینگر تشریف لے گئے۔ اور بعدہ حضورؐ سرینگر سے آسنور تشریف لائے۔ ہم دونوں بھائی بھی آسنور پہنچے (موضع آسنور میں بھائی خواجہ صاحبؒ کا گھر تھا) جماعت احمدیہ آسنور نے حضور اید اللہ تعالیٰ کا پر تپاک استقبال کیا۔ سب بستی والے حضور انور کے درود پر جھوم اُٹھے۔ آسنور میں حضورؐ کے ساتھ بڑے بڑے علماء بھی تشریف لائے تھے۔ حضرت سید زین العابدین صاحبؒ بھی تھے۔ انہوں نے خاکسار (محمد عبداللہ میر) کو کہا کہ اس وقت سنہری موقعہ ہے۔ حضورؐ بہ نفس نفیس آسنور میں تشریف فرما ہیں۔ آج ہی ان کے ہاتھ پر بیعت کرو۔ لیکن میں نے جواب دیا میں ابھی تحقیقات کر رہا ہوں۔ غرض چند ایام کے بعد حضورؐ واپس تشریف لے گئے۔

حضرت خواجہ صاحبؒ مرحوم کی ڈیوٹی شاہ آباد برنگ (نزد دیری ناگ کشمیر) میں تھی۔ مکرم عبد العزیز صاحب ساکنہ ایمر پچھ یاری پورہ بحیثیت فار سٹر تعینات ہو کر حضرت رنجبر صاحب کے پاس بغرض ٹریننگ آئے۔ چونکہ احمدی تھے۔ ہم سب اکٹھے کھاتے پیتے رہے۔ مکرم عبدالعزیز صاحب ایک جو شیلہ احمدی تھے۔ اور میرے ساتھ اکثر اوقات احمدیت پر بحث کرتے تھے۔

ایک دفعہ مجھے کہا کہ ”تم احمدی کیوں نہیں بنتے جب کہ خواجہ صاحب تمہارا بھائی ایک فرشتہ خصلت احمدی ہے۔ تمہارے لئے ایک کامل نمونہ ہیں۔ اسی دوران سوتے وقت موصوف نے مجھے مخاطب ہو کر ایک پتے کی بات کہہ دی۔

”محمد عبداللہ نیند بھی ایک موت ہے۔ اس وقت ہم تینوں سو جائینگے اور فرض کریں صبح خواجہ صاحب اور میں نیند سے بختیریت بیدار ہو جائیں گے اور آپ فوت شدہ ہوں گے۔ آپ اللہ تعالیٰ کو روز قیامت کیا جواب دیں گے۔ جب کہ امام مہدی آئے ہیں۔ اور آپ نے اس کی بیعت نہیں کی۔“

اس بات نے مجھے سخت متاثر کیا اور جھوڑ دیا میں بستر میں بیٹھا ہوا تھا پھر اٹھ کر غسل خانے میں وضو کر کے شرح صدر سے بیعت فارم پڑ کیا۔ اور لفظ فی میں بند کر کے حضرت خلیفۃ المسیح الثانی کی خدمت میں بذریعہ ڈاک بھیج دیا۔ اور سونے سے پہلے دو رکعت نفل ادا کئے۔ اور دعائیں کیں۔ میری بیعت کرنے پر حضرت خواجہ صاحب بھی بہت خوش ہوئے اور ہم تینوں سو گئے۔

اسی رات پچھلے پہر میں نے خواب دیکھا کہ ”حضرت خواجہ صاحب اور میں ایک عالی شان مکان میں مقیم ہیں۔ میں اس مکان کے باہر آیا اور باہر ایک وسیع میدان نظر آیا۔ اور اس میدان کے ایک دور کے سرے سے مولوی عبدالغنی صاحب فرزند مولوی انور صاحب اہل حدیث ساکنہ شویان کشمیر گھوڑے پر سوار ہو کر میری طرف آرہے ہیں۔ میرے پاس پہنچ کر ہی گھوڑے سے نیچے اتر گئے۔ اور السلام علیکم کہہ کر میرے ساتھ مصافحہ کیا۔ اور ہم دونوں نیچے زمین پر بیٹھ گئے۔ مولوی صاحب موصوف نے جیب سے ایک امبری سرخ سیب نکالا اور مجھے دیا۔ جو نہی سیب میں نے ہاتھ میں لیا تو مجھے محسوس ہوا کہ یہ سیب اندر سے سڑ گیا ہے۔ اور بوسیدہ ہے۔ میں نے فوراً یہ سیب مولوی صاحب کو واپس دیا۔ اور ان کے انکار کے باوجود میں نے اس کو سڑا ہوا سمجھ کر ان کی جھولی میں واپس ڈال دیا۔ اپنی فراست کے مطابق میں نے اس خواب کی یہ تعبیر کی چونکہ میں پہلے اہل حدیث تھا۔ اور مولوی صاحب بھی اہل حدیث تھے۔ انہوں نے مجھے خواب میں سڑی گلی چیز کی پیشکش کی جو اندر سے کھوکھلا اور باہر سے خوبصورت تھی۔ لیکن میں نے لینے سے انکار کیا۔ حضرت خواجہ صاحب مرحوم پچھلے پہر نماز تہجد میں مصروف تھے۔ فارغ ہونے پر میں

نے ان کو اپنی خواب سنائی۔ اور تعبیر طلب کی۔ بھائی صاحب نے فرمایا۔۔۔ ”چونکہ آپ دونوں پہلے اہل حدیث تھے۔ مولوی صاحب نے تم کو اپنا نمونہ پیش کیا۔ یعنی باہر سے سرخ و صاف اور اندر سے بوسیدہ۔ خواجہ صاحب نے مجھے مبارک باد دی کہ تم نے سڑا ہوا سیب واپس کر دیا اب امام وقت کو قبول کر کے تم معرفت الہی کا تازہ پھل ہمیشہ کھاتے رہو گے۔ یاد رہے کہ حضرت خواجہ صاحب نے کبھی مجھے زور زبردستی نہیں کی بلکہ ہمیشہ پیار و اخلاق سے تبلیغ کرتے رہے۔ میرے دل نے تو بہت پہلے احمدیت کو قبول کر لیا تھا۔ لیکن بیعت کرنے کے تعلق میں شیطان وسوسے ڈالتا رہتا تھا۔ مکرم عبدالعزیز صاحب کی بات نے یہ سارے وسوسے دور کئے یعنی ”اگر نیند میں موت آئی پھر اللہ کو کیا جواب دو گے۔“

اہل حدیث اگرچہ ظاہر طور پر شرک اور بدعات سے اجتناب کرتے ہیں۔ لیکن بعض نامناسب عادتوں کو چھوڑتے بھی نہیں ہیں۔ جیسا کہ اس روایت ۳۴۲ سیرۃ المہدی جلد دوم ص ۲۹-۳۰ پر رقم ہے۔۔۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ خواجہ عبدالرحمن صاحب متوطن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ خط بیان کیا کہ میرے والد میاں حبیب اللہ صاحب بیان کرتے تھے کہ ایک دفعہ مجھے نماز میں حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے ساتھ کھڑے ہونے کا موقع ملا اور چونکہ میں احمدی ہونے سے قبل (ابھی اہل حدیث) تھا میں نے اپنے پاؤں اپنا پاؤں حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے پاؤں کیساتھ ملانا چاہا، مگر جب میں نے اپنے پاؤں آپ کے پاؤں کے ساتھ رکھا تو آپ نے اپنا پاؤں کچھ اپنی طرف سرکا لیا جس پر میں شرمندہ ہوا اور آئندہ کے لئے اس طریق سے باز آ گیا۔ خاکسار (حضرت مرزا بشیر احمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ) عرض کرتا ہے کہ فرقہ اہل حدیث اپنی اصل کے لحاظ سے ایک نہایت قابل قدر فرقہ ہے۔ کیونکہ اس کی وجہ سے بہت سے مسلمان بدعات سے آزاد ہو کر اتباع سنت نبوی سے مستفیض ہوئے ہیں۔ مگر انہوں نے بعض باتوں پر اس قدر نامناسب زور دیا ہے۔ اور اتنا مبالغہ سے کام لیا ہے۔ کہ شریعت کی اصل روح سے وہ باتیں باہر ہو گئی ہیں۔ اب اصل مسئلہ تو یہ ہے کہ نماز میں دو نمازیوں کے درمیان یونہی فالتو جگہ نہیں پڑی دینی چاہئے۔ بلکہ نمازیوں کو ملکر کھڑا ہونا چاہئے۔ تاکہ اول تو بے فائدہ جگہ ضائع نہ جاوے۔ دوسرے بے ترتیبی

واقعہ نہ ہو۔ تیسرے بڑے آدمیوں کو یہ بہانہ نہ ملے کہ وہ بڑائی کی وجہ سے اپنے سے کم درجہ کے لوگوں سے ذرا ہٹ کر الگ کھڑا ہوسکیں وغیرہ ذالک۔ مگر اس پر اہل حدیث نے اتنا زور دیا اور اس قدر مبالغہ سے کام لیا ہے کہ مسئلہ ایک مضحکہ خیز بات بن گئی ہے۔ اب گویا ایک اہل حدیث کی نماز ہو نہیں سکتی۔ جب تک وہ اپنے ساتھ والے نمازی سے کندھے سے کندھا اور ٹخنہ سے ٹخنہ اور پاؤں سے پاؤں رگڑاتے ہوئے نماز ادا نہ کرے حالانکہ اس قدر قرب بجائے مفید ہونے کے نماز میں خواہ مخواہ پریشانی کا موجب ہوتا ہے۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم

شادی وغیرہ!!!

موضع آسنور کشمیر میں احمدیت --- موضع آسنور میں ۱۸۹۴ء سے ہی احمدیت کا سورج طلوع ہو چکا تھا۔ یہ خدائے بزرگ و برتر کا فضل و احسان ہی تھا۔ کہ امام مہدی کی آواز ہر سعادت مند روح تک ہر سمت پہنچ رہی تھی۔ حضرت خواجہ عمر ڈار صاحب صحابی (رئیس آسنور) قادیان سے بیعت کر کے آئے تھے۔ اور اس بستی کے سعید الفطرت لوگوں نے احمدیت قبول کی۔ ابتدا میں مولوی محمد ابراہیم صاحب مرحوم، حضرت حسن شاہ اخون مرحوم، حضرت محمد شعبان صاحب رشی مرحوم۔ حضرت مولوی حبیب اللہ صاحب مرحوم (حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میر صحابی جو موضع گاگرن سے آئے) حضرت مولوی غلام محمد صاحب مرحوم حضرت انور صاحب ملک مرحوم اور حضرت فقیر محمد صاحب بھٹی مرحوم قابل ذکر اصحاب احمد ہیں۔ ان کے معاً بعد جو اس نور سے منور ہوئے۔ انشاء اللہ ان کا ذکر خیر تفصیل سے آگے آئیگا۔ اُن دنوں بزرگان کا اثر ساری بستی میں چھایا ہوا تھا۔ حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے الہام کے مطابق ”میں تیرے دلی محبوب کا گروہ بڑھاؤں گا“۔ اس وقت ماشاء اللہ موضع آسنور و موضع کوریل کی آبادی اتنی بڑھ گئی ہے کہ مکینوں کے پرانے مکان ناکافی ہو گئے۔ اور دور دور تک مکانات تعمیر ہوئے ہیں اور دنوں احمدی بستیاں ملکر ایک فعال جماعت قائم ہے۔ اور اس سے ڈیڑھ کلومیٹر دور ایک پوری بستی موضع رشی نگر بھی ہے۔ اس طرح بفضلہ تعالیٰ یہ

ایک احمدی ربّی قائم ہو چکا ہے ان ایام کا موضع آسنور کی مناسبت سے ایک دلچسپ اور ایمان افروز واقعہ قارئین کے لئے پیش خدمت ہے۔

حضرت عمر و گے چوپان کا مخالف احمدیت کو لا جواب کرنا!!

موضع آسنور کو ریل کے قرب میں ایک پرانا اور بڑا گاؤں منرگام ہے۔ جہاں اہل حدیث اور حنفیہ مسلک کے لوگ رہتے ہیں۔ ہمارے گاؤں والوں کے ساتھ ان کے راہ و رسم وغیرہ ہیں۔ اس گاؤں میں ایک متمول خاندان (متو) ذات کا ہے۔ ان کی حضرت عمر ڈار صاحب صحابی کے خاندان کے ساتھ قربت اور رشتہ داری بھی تھی۔ بزرگوں نے ان کو احمدیت کا پیغام اس زمانے میں پہنچایا تھا لیکن وہ ہمیشہ مخالف ہی رہے۔ ان ہی ایام کا ایک دلچسپ واقعہ بزرگوں نے مجھ سے بیان کیا۔۔۔ کہ موضع آسنور کا ایک معمر چوپان حضرت عمر و گے صاحب مرحوم قبول احمدیت کے بعد ایک دفعہ منرگام گیا۔ وہاں ایک رئیس مکرم خلیل متو صاحب شان و شوکت کے ساتھ مجلس میں بیٹھے تھے۔ اور عمر و گے مرحوم کو اپنے پاس بلایا اور کہا کہ حضرت خواجہ عمر ڈار صاحب علم قرآن اور احادیث نبویؐ سے واقف ہیں اور مذہبی آدمی ہیں۔ اس نے احمدیت قبول کی لیکن تم جیسے ان پڑھ اور چوپان نے احمدیت کو کیوں کر قبول کیا۔ اُس ان پڑھ آدمی لیکن صاف دل چوپان نے جواباً کہا۔۔۔۔۔ ”دیکھو خواجہ عمر ڈار صاحب ایک رئیس اور کاروباری آدمی ہیں۔ میں ہمیشہ اس کی دوکان سے نمک، کھانڈ، کپڑا اپنی ضروریات کی اشیاء ادھار لیتا ہوں۔ اور واپسی میں جنسی اشیاء از قسم اون، گھی اور بھیڑ وغیرہ قیمتاً دے دیتا ہوں۔ اور اپنے پاس پوری یادداشت کے ساتھ حساب رکھتا ہوں۔ سال میں جب بھی اس کے ساتھ حساب فہمی کی۔ حساب میں کبھی مجھے ایک پیسہ کا فرق بھی نہیں پڑا اس لئے میں نے خواجہ عمر ڈار صاحب کے کہنے پر اسی لئے احمدیت قبول کی کہ جب اس شخص نے دنیاوی حساب میں ایک پیسے کی لالچ نہ کی تو مذہبی معاملے میں اس کو مجھ سے کیا لالچ تھی۔ اس دیا ننداری اور صاف گوئی کیوجہ میرے دل نے یہ گواہی دی کہ یہ شخص دین کے معاملے میں بھی مجھے ہرگز دھوکہ نہیں دیگا۔ یقیناً امام مہدی کا پیغام سچا ہے اور میں نے احمدیت قبول کی

صاف دل کو کثرت اعجاز کی حاجت نہیں ☆ اک نشان کافی ہے گردل میں ہو خوف کردگار

شادی اور حضرت خواجہ صاحبؒ کی عائلی زندگی کا نمونہ !!

حضرت والد صاحب مرحومؒ تعلیم سے فارغ ہو کر اپنے وطن کشمیر واپس آئے اور ڈوگر اعہد حکومت میں ریج آفیسر کے عہدہ پر فائز ہوئے۔ اور دین دار رشتہ کی تلاش میں آپ کی نظر جستجو موضع آسنور میں جا ٹھہری۔ اور الہی تقدیر کے مطابق خواجہ غلام رسول صاحب ڈار مرحوم المعروف (لسی ڈار) ساکنہ آسنور کشمیر نے حضرت والد صاحب (خواجہ عبدالرحمن صاحب میر) ساکنہ گارن کو بحیثیت خانہ داماد اپنے گھر آسنور لے آئے یاد رہے کہ غلام رسول ڈار مرحوم حضرت خواجہ عمر ڈار صحابی ساکنہ آسنور کے چھوٹے بھائی تھے۔ اس طرح حضرت والد صاحبؒ کی شادی صاحبہ بیگم (خاکسار کی والدہ صاحبہ) کے ساتھ آسنور کے اس ممتاز خاندان میں ہوئی۔ صاحبہ بیگم اپنے بھائی بہنوں میں چھوٹی تھی۔ ماشاء اللہ یہ رشتہ دونوں خاندانوں کے لئے باعث راحت و برکت ثابت ہوا۔ والدہ صاحبہ مرحومہ تقریباً دس سال تک اپنے والد صاحب کے گھر میں رہی بعد میں اسی گاؤں میں اپنا علیحدہ گھر تعمیر کیا۔ دونوں میاں بیوی بہت نفاست پسند تھے۔ اپنے گھر کو چار دیواری سے محفوظ کر لیا تھا۔ اور صحن کے بڑے پھانک پر جلی حروف میں لکھا تھا۔ ”بلا اجازت اندر آنا منع ہے۔“ ان دنوں گاؤں کے ماحول میں ایسا ماحول پیدا کرنا کچھ عجیب سا لگتا تھا۔ لیکن والد صاحبؒ ہمیشہ اسلامی شعار کی پابندی سختی سے کرواتے تھے۔ اور بفضل الہی گھر میں اسلامی ماحول کا فرما تھا۔ والدہ صاحبہ کو حضرت خواجہ صاحب جیسے نیک فطرت، منکسر المزاج اور باعزت روزگار والے شریک حیات ملے اور تادم آخر اپنی ازدواجی زندگی کو پیار و محبت کے خوبصورت پھولوں سے آراستہ و پیراستہ بنادیا۔ اور پر مسرت اور کامیاب زندگی نصیب ہوئی۔ الحمد للہ۔ دونوں نے ایک دوسرے کے حقوق و فاداری اور لگن سے سرانجام دئے۔ واجبی آداب زندگی کو ہمیشہ ملحوظ خاطر رکھا اور اولاد کی صحیح تعلیم و تربیت کی۔ حق اللہ اور حق العباد کو اپنا نصب العین بنا کر اپنے گھر کو جنت بنایا۔ والدہ صاحبہ اور اس کے رشتہ داروں کے ساتھ ملاطفت، حسن سلوک اور پیار و محبت حضرت والد صاحبؒ مرحوم کا طرہ امتیاز تھا۔ اور صحیح معنوں میں آنحضرت صلی اللہ

علیہ وسلم کے ارشاد کا عملی نمونہ پیش کرتے تھے۔

”خیر کم خیر کم لاہلہ“

تم میں سے بہترین انسان وہ ہے جو اپنے اہل و عیال کے لئے باعث خیر ہو۔

حضرت والد صاحبؒ مرحوم نے اپنی فارغ البالی کے بعد اپنے اہل و عیال، قریبی رشتہ داروں اور غربا کا ہر طرح سے خیال رکھا۔ اپنے عمر رسیدہ والد بزرگوار اور سرسبز رگوار کی بہت عزت و تکریم کرتے تھے زمانہ پیری و ضعفی میں ان کا سہارا بنے رہے۔ خاکسار کی خالہ خورشیدہ بیگم مرحومہ کو ہمیشہ کہہ کر پکارتے تھے۔ خالہ مرحومہ بہت فہم و فراست اور مخلوق خدا سے پیار و محبت کرنے والی نیک خاتون تھیں۔ سب برادری اور رشتہ دار اس کو پیار سے لالہ کہتے تھے۔ آپ صوم و صلوة کی بہت پابند تھیں۔ ہمارے والدین نے بڑے لڑکے ڈاکٹر عبدالمنان صاحب میر مرحوم کی شادی خالہ صاحبہ کی لڑکی امۃ الحسنیٰ سے کی تھی جو پہلے ربوہ پاکستان میں بود و باش کرتے تھے۔ بعد میں بچوں کی وجہ جرمنی چلے گئے بھائی جان مرحوم جرمنی میں ہی فوت ہوئے۔ اور بہشتی مقبرہ ربوہ میں مدفون ہیں۔ غیر احمدی حقیقی بھائی کے ساتھ حسن سلوک۔

حضرت خواجہ صاحبؒ مرحوم کا ایک غیر احمدی بھائی عبدالعزیز میر جو اپنے آبائی گھر موضع گاگرن میں رہتا تھا۔ احمدیت کے خلاف اور بھائی کے نام ہمیشہ دشنام طرازی کرتا رہتا تھا لیکن حضرت والد صاحبؒ مرحوم صبر سے کام لیتے تھے۔ لیکن جب وہ حضرت مسیح الموعودؑ کے خلاف بدزبانی کرنے لگتا تھا۔ تو آبائی پورے جلال سے اُس کا مقابلہ کرتے تھے۔ چونکہ چچا عید العزیز غربت کا مارا تھا اسلئے صلہ رحمی کے تحت آبائی نے اُس کی صرف نقدی اور جنس کے لحاظ سے ہی اعانت نہیں کی بلکہ حسن سلوک کا یہ عالم تھا کہ اپنی (گاگرن میں) آبائی منقولہ وغیرہ منقولہ جائداد اپنے اس مخالف بھائی کو بلا معاوضہ دیدی۔ اور اپنی اولاد کو وصیت کی کہ میرے بعد عبدالعزیز سے کسی چیز کی مانگ نہ کریں۔ میں نے اس کی غربت کیوجہ اور حقیقی بھائی کیوجہ اپنا اثاثہ اس کو سونپ دیا ہے۔

خاکسار کو ایام طفولیت میں حضرت والد صاحبؒ مرحوم اپنے ساتھ اپنے آبائی گاؤں گاگرن ساتھ لے جایا کرتے تھے۔ اور کہتے تھے کہ مجھے اس گاؤں اور گھر سے اس لئے پیار و محبت ہے کہ

میرے والدین یہاں بود و باش کرتے تھے اور ہمیشہ چشم پر نم ہو کر ان کے لئے دعائے مغفرت کرتے تھے۔ اور خاکسار کو اپنے آبائی قبرستان میں اندازاً اپنے والدین کی قبریں دکھاتے تھے اور کہتے تھے کہ میرے بعد میرے والدین کے مزار پر ہمیشہ دعائے مغفرت کر لیا کرنا۔ والدہ مرحومہ کو اپنے والد خواجہ غلام رسول صاحب ڈار مرحوم نے تقریباً چالیس کنال زرعی زمین ہبہ کر دی تھی۔ پھر حضرت والد صاحب مرحوم نے موضع آسنور و منرگام میں مزید زمین خرید لی تھی۔ آپ کو پھلوں کا باغ لگوانے میں بہت دلچسپی تھی۔ اپنے گھر کے ارد گرد ہر قسم کے میوے مختلف موسموں میں مہیا ہوتے تھے۔ کشمیر میں اس زمانے میں سیبوں کا بادشاہ یعنی خاص الخاں سیب امبری مانا جاتا تھا۔ اور بیرون ملک بھی اس کی کافی مانگ تھی۔ لیکن رفتہ رفتہ امبری سیب کی جگہ ڈیلیشن سیب نے لے لی۔ اور امری نایاب ہوا۔ ہمارے علاقہ کو آج بھی میووں کے باغات کی معقول آمدنی ہے۔ یعنی مہاراجی، ڈیلیشن، فوکھلا، امریکن، اور اخروٹوں کے باغات ہیں۔

پیارے والد صاحب مرحومہ!!

حدیث شریف میں رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان ہے جس مسلمان عورت کا خاوند اس حالت میں فوت ہوتا ہے کہ وہ اپنی بیوی سے خوش تھا تو ایسی عورت خدا کے فضل سے جنت میں جائیگی۔

حضرت والد صاحب مرحوم کی وفات موضع آسنور (کشمیر) میں ۷ ستمبر ۱۹۵۷ء میں ہوئی اور والدہ صاحبہ مرحومہ کی وفات ربوہ (پاکستان) میں ۲۹ دسمبر ۱۹۷۲ء میں ہوئی۔ یعنی پورے چوبیس سال اور بائیس دن کے بعد والدہ صاحبہ مرحومہ بھی اپنے مولا کے حقیقی سے جاملی۔ انا اللہ وانا الیہ راجعون۔

اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ ان کے درجات بلند فرمائے اور اعلیٰ علیین میں جگہ نصیب ہو۔ آمین۔ خاکسار کی والدہ کا نام صاحبہ بیگم تھا اپنی بستی کے لوگ اپنے کیا پرانے بھی اس کے حسن سلوک اور پیار و محبت کی وجہ سے صاحبہ پھوپھی یا صاحبہ دید (صاحبہ پھوپھی یا صاحبہ ماں) کے

ناموں سے پکارتے تھے۔ اکثر لوگوں نے مجھ سے بیان کیا کہ سب رشتہ دار، اور برادری کے افراد ان کے پاس آکر سکون و راحت محسوس کرتے تھے۔ آپ بفضلہ تعالیٰ صوم و صلوة کی پابند، صدقہ و خیرات میں پیش پیش اور قانع و شاکر خاتون تھیں۔ بچوں کو ہمیشہ دونوں میاں بیوی ہر وقت فرما برادری، خدا ترسی اور دینی باتوں کی ترغیب دیتے تھے۔ خاکسار اس بات کا یقینی شاہد ہے کہ جب حضرت والد صاحب مرحوم گھر میں نماز ادا کرتے تھے ہم سب بچوں کو ہمہ ہماری والدہ صاحبہ کے باجماعت نماز کا اہتمام کرواتے۔ پیاری والدہ مرحومہ نے کوئی مروجہ تعلیم حاصل نہیں کی تھی لیکن قرآن پاک کی تلاوت ہم سبوں کو کرواتا تھی۔ قرآن خوانی اور تلفظ سے واقف تھی۔ گھر میں قرآن خوانی کا یہ عالم تھا کہ میری بڑی ہمشیرہ لمتہ الرحیم صاحبہ نے جس کی عمر اس وقت دس سال تھی اپنے ماموں زاد بھائی مکرم غلام رسول ڈار مرحوم جس کی عمر تیس سال کے قریب تھی کو پہلے قاعدہ یسرا القرآن پھر قرآن پاک پڑھوایا۔ پھر بھائی میری کم سن بہن کو اپنا استاد مانتا رہا۔

والدہ صاحبہ مرحومہ گھر میں گائیں پالنے کا بہت شوق رکھتی تھیں۔ ان سے دودھ حاصل کر کے اپنے مصرف میں لاتی تھی۔ نیز ہمسائیوں اور رشتہ داروں کو بھی دیتی تھیں۔ اس میں ہم بھائی بہن بھی ان کی مدد کرتے تھے۔ اس طرح ہم سب بھائی بہنوں کو گائیں۔ بھینسیں اور بھیڑ پالنے کا شوق ورثہ میں ملا ہے۔ بلکہ حضرت والد صاحب مرحوم نے اپنی اولاد کے لئے چند نصائح تحریراً رکھی ہیں۔ جن میں ایک نصیحت یہ بھی ہے کہ ہمیشہ گھر میں بھیڑیں پالا کرو۔ کیونکہ ہمارے آقا و متاع حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے بھیڑ بکریاں پالی ہیں۔ اس کام میں برکت ہے۔ اگر خدا نخواستہ کبھی غربت آئے۔ بھیڑیں بچ کر اپنی ضروریات پوری کر لیا کرنا۔ قرض اٹھانے سے دور بھاگنا چاہئے۔ والدہ صاحبہ مرحومہ تعلق باللہ اور تعلق بالعباد پر کاربند رہی۔ خوشی اور غم کے موقعوں پر سبوں کا ساتھ دیتی تھی۔ غرض ان کا وجود ہم سب کے لئے قابل رشک اور قابل تقلید ہے۔ آپ اپنے آبائی گاؤں آسنور سے 1970ء میں پاکستان اپنے بچوں ڈاکٹر عبد المنان میر، خواجہ محمد عبد اللہ میر، لمتہ الرحیم اور لمتہ اللہ کے پاس چلی گئیں۔ اور زائد چار سال ان کے ساتھ گزارے اور ۱۹۷۴ء میں ان کی وفات ربوہ میں ہوئی اور ربوہ میں ہی مدفون ہیں۔ خدا

مغفرت کرے۔ آمین۔

حضرت مصلح موعودؑ کے پاس والدہ صاحبہ کی شکایت حضرت والد صاحبؑ کے متعلق۔۔۔۔

حضرت والد صاحبؑ کی معقول آمدنی کے باوجود بعض اوقات گھر میں تنگ دستی کا عالم بھی ہوتا تھا۔ کیونکہ آمدنی کا بیشتر حصہ چندہ عام، خاص تحریکات، غربا کی مدد اور اعانت اور بعض رشتہ داروں کے ضروریات پورے کرنے میں صرف ہوتا تھا جس سے گھریلو اخراجات متاثر ہوتے تھے۔ ان ہی تنگ دستی کے دنوں میں ایک دفعہ والدہ مرحومہ نے اباجی کی شکایت خلیفہ وقت حضرت مصلح موعودؑ کے پاس کی۔ اس بارے میں بھائی خواجہ محمد عبداللہ صاحب میر آف راولپنڈی نے مجھ سے بیان کیا۔ ”ایک دفعہ کا ذکر ہے کہ والدہ صاحبہ مرحومہ کو جب بچوں اور گھریلو ضروریات پورے نہیں ہوئے تو آپ نے حضرت مصلح موعودؑ کی خدمت میں حضرت والد صاحبؑ مرحوم کے خلاف شکایت کی کہ ”خواجہ صاحب چندہ وغیرہ کی ادائیگی پر تنخواہ کا زیادہ حصہ ختم کرتے ہیں۔ اور گھر میں تنگ دستی رہتی ہے آپ ان کو سمجھائیں۔“ پھر حضرت مصلح موعودؑ نے اباجی کو اس امر کی طرف ضرور توجہ دلوائی ہوگی۔ بھائی جان بیان کرتے تھے بعد ازاں جب بھی میری (خواجہ محمد عبداللہ صاحب میر) کی ملاقات حضور سے ہوتی تھی۔ تو مزاجاً مجھے فرماتے تھے کہ اپنی والدہ صاحبہ سے دریافت کر لینا کہ اب خواجہ صاحب زیادہ چندہ تو نہیں دیتے۔ اللہ اللہ یہ ہمارے آباء و اجداد کی دینی قربانیوں کا پیمانہ تھا اپنی معقول آمدنی کے باوجود ملا تو روزی نہ ملا تو روزہ۔ کے مترادف حال تھا۔ اس طرح ہمارے بزرگ دین کو دنیا پر مقدم رکھتے تھے۔

اولاد کی تعلیم و تربیت

قرآن کریم نے حضرت اسماعیل علیہ السلام کی ایک بڑی قربانی یہ بیان فرمائی ہے کان یا مرہلہ بالصلوٰۃ۔ (سورۃ مریم رکوع ۴) یعنی وہ اپنے بیوی بچوں اور رشتہ داروں کو نماز کی تاکید کیا کرتے تھے۔ تاکہ خدائے واحد کی حکومت ہمیشہ قائم رہے۔ اور ہمیشہ کے لئے نماز اور زکوٰۃ

کا سلسلہ جاری رہے اور یہی ہر مؤمن کا کام ہے۔ اور فرض ہے کہ جہاں وہ اپنی اولاد کی نیک تربیت سے کبھی غافل نہ ہو وہاں وہ اللہ تعالیٰ سے دعائیں بھی کرتا ہے۔ اور خود ان کا معلم بنے اور انہیں اس قابل بنائے کہ وہ ہمیشہ اسلام کا جھنڈا اونچا رکھیں اور محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا نام بلند کرتے رہیں۔۔۔ (تفسیر کبیر سورۃ الفرقان ص ۱۸۴)

بفضلہ تعالیٰ حضرت والد صاحب مرحومؒ بھی وہ خوش نصیب صحابی تھے جو اپنے آقا حضرت مسیح موعود علیہ السلام بانی سلسلہ احمدیہ کے طفیل اعلیٰ درجے کے معلم تھے اور انہوں نے اپنے حوصلہ و ہمت سے دین و دنیا کا علم بلند رکھا۔ اور اپنے بچوں کو بھی نیکی اور تقویٰ کے سانچے میں ڈالنے کی ہر ممکن کوشش کی۔ سیرت المہدی حصہ سوئم (مرتب کردہ) حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم اے روایت ۵۱۹ میں فرماتے ہیں۔۔۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب کشمیر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ ایک دفعہ چودھری حاکم علی صاحب نے ان سے ذکر کیا کہ میں نے مسیح موعود علیہ السلام سے سنا ہے کہ اللہ تعالیٰ ایک ولی کو بھی خراب اولاد کی بشارت نہیں دیتا چہ جائیکہ مسیح موعود علیہ السلام کو ایسی خبر دے۔ یہ حضور علیہ السلام اپنی اولاد کے حق میں فرماتے ہیں کہ وہ برے نہیں ہونگے بلکہ متقی اور صالح ہونگے۔ کیونکہ خدا تعالیٰ نے ان کی نسبت بشارت دی ہے۔

خاکسار عرض کرتا ہے کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے اس اصول کو اپنی کتب میں بھی بیان کیا ہے مگر میں (حضرت مرزا بشیر احمدؒ مولف) جب اپنے نفس میں نگاہ کرتا ہوں تو شرم کی وجہ سے پانی پانی ہو جاتا ہوں۔ کہ خدا تعالیٰ ہمارے جیسے کمزور انسان کی پیداوار کو بھی بشارت کے قابل خیال کرتا ہے۔ پھر اس وقت اس کے سواء سارا فلسفہ بھول جاتا ہوں۔ اللہم لا مانع اعطیت ولا معطى منعت۔

حضرت ام المؤمنین رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا اپنے بچوں کی طرح حضرت والد صاحبؒ مرحوم کے ساتھ پیار و شفقت اور تربیت کا ذکر ملتا ہے۔ سلسلہ کے جید اور خدا رسیدہ بزرگوں کی شاگردی اور خدمت کا شرف آپ کو ملا تھا اس ماحول اور تعلیم و تربیت کی چھاپ حضرت خواجہ

صاحبؒ کی شخصیت سے عیاں تھی۔ بزرگوں کی دعائیں اپنے لئے ایک انمول اثاثہ سمجھتے تھے۔ مؤمن کی ایک علامت یہ بھی ہے کہ وہ دعا کرتا ہے کہ خدایا میری نسل کو متقی اور پرہیزگار بنانا اور مجھے توفیق دینا کہ میں اپنی اولاد کی صحیح تربیت کر کے صالحات و باقیات چھوڑوں۔ ماشاء اللہ حضرت والد صاحبؒ مرحوم نے بھی اپنی اولاد کے متعلق دینی و دنیوی ترقیات کے لئے بہت دعائیں کی ہیں۔ آپ نے اپنی حلال کمائی سے بچوں کے وہ سب لوازمات پورے کئے جو ایک شفیق باپ کے شایان شان ہوتے ہیں۔ انہوں نے اپنے مقدور کے مطابق سب بچوں کو دینی و دنیوی تعلیم و تربیت سے بہرہ ور فرمایا۔ موضع آسنور میں رہائش کے لئے ایک سادہ مکان بنایا۔ زرعی زمین خریدی، قادیان میں تعمیر مکان کے لئے تین کنال زمین خرید کے رکھی تھی جو گردش زمانہ کی زد میں آکر ضائع ہوئی۔ اپنے آبائی گاؤں موضع گاگرن کی منقولہ و غیر منقولہ جائیداد اپنے غریب بھائی کو بلا معاوضہ سونپ دی۔ بڑے دولڑکوں کی شادیاں اسلامی حدود میں سرانجام دیں۔ قادیان میں اپنے تین بچوں کو حصول تعلیم کے لئے بھیجا تھا۔ سادہ ڈھنگ سے گھر گرہستی کو آراستہ کیا۔

چار پشتوں تک اولاد!!

یہاں پر خاکسار تھوڑی نعمت کے طور پر آپ کی اولاد کے بارے میں مختصر حالات زندگی وغیرہ بیان کرنے کی خواہش محسوس کرتا ہے۔ ہمارے والدین کو اللہ تعالیٰ نے سات بچے عطا فرمائے تھے۔ چار لڑکے اور تین لڑکیاں۔ ذالک فضل اللہ یوتیہ من یشاء۔ ماشاء اللہ حضرت خواجہ صاحبؒ مرحوم کی اس وقت چوتھی پشت چل رہی ہے۔ خاکسار یہاں پر صرف دو پشتوں کا مختصر ذکر کرنے جا رہا ہے۔

(۱) ڈاکٹر عبد المنان صاحب میر

آپ آسنور کشمیر میں پیدا ہوئے۔ اور جرمنی میں پھر ۸۵ سال وفات پائی آپ نے ابتدائی تعلیم پرائمری سکول آسنور میں حاصل کی۔ پھر تعلیم الاسلام قادیان میں تعلیم و تربیت مکمل کر

کے کچھ مدت ضیاء الہریس قادیان میں اور میڈیکل سے واسطہ رہا۔ ۱۹۴۷ء میں پاکستان منتقل ہوئے۔ وہاں موضع جبن ضلع سرگودھا میں میڈیکل پریکٹس پر مشتمل رہا۔ میر ذات سے تعلق کی وجہ سے لوگ آپ کو شاہ جی بھی کہتے تھے۔ اور والہانہ عقیدت رکھتے تھے۔ لیکن آپ کا ایمان یہ تھا کہ حضرت والد صاحب مرحوم کی دعاؤں کی برکت سے اللہ تعالیٰ نے آپ کے علاج معالجہ کے طریقے میں دست شفاء کی تاثیر رکھی ہے۔ آپ بفضلہ تعالیٰ صوم و صلوٰۃ کے پابند، فرائض احمدیت اور موصی تھے۔ ہر معمولی سے معمولی کام کرنے میں عاز نہیں سمجھتے تھے۔ اور ہر فن مولا بھی تھے۔ آپ خوش پوش، سنجیدہ طبع، ہنس مکھ، کم گو اور بہت جفاکش تھے۔

ربوہ دارالصدر غربی میں اپنا مکان بنا کر بچوں کی صحیح تعلیم و تربیت کی۔ آپ کی شریک حیات آپالمتہ الحیٰ صاحبہ بقید حیات اپنے بچوں کے ساتھ جرمی میں ہیں۔ وہاں بچوں کو سیرنا القرآن، قرآن پاک اور دینیات اور جماعتی کاموں میں منہمک ہیں۔ آپ خاکسار کی خالہ زاد بہن بھی ہیں۔ جرمی اور ہالینڈ میں ڈاکٹر بھائی عبدالمنان صاحب مرحوم کے تین لڑکے عبدالکریم رحمٰن، عبدالحق رحمٰن، عبدالمجید رحمٰن اور ایک لڑکی لمتہ الباسطہ زوجہ مکرم عبداللطیف صاحب میر ہیں۔ لاہور پاکستان میں دولڑکیاں لمتہ الواسع اہلیہ مکرم رشید خالد صاحب ایم ایس سی اور لمتہ السمع اہلیہ مکرم محمود احمد صاحب ہیں۔ چوتھی لڑکی لمتہ الکریم صاحبہ لودھرا پاکستان میں ہے۔ ماشاء اللہ سب بچے اپنے باپ دادا کے نقش قدم پر چلنے والے، فارغ البال اور احمدیت کے شیدائی ہیں۔ سب خدمت دین میں پیش پیش ہیں۔ ڈاکٹر صاحب مرحوم کے سب بچے صاحب اولاد ہیں۔ ہر ایک کے تین سے پانچ تک بچے ہیں۔ الحمد للہ۔ اور خاندان میں سب پر امنی سے لے کر ایم ایس سی تک تعلیم یافتہ ہیں۔ سبوں کی مالی حالت بہتر ہے۔ ہاں آپ کا پہلا لڑکا عبدالکریم ۱۹۴۷ء کے پر آشوب سال میں گھر کے بجائے ریفیو جی کیمپ میں تولد ہوا۔ یاد رہے کہ ڈاکٹر صاحب مرحوم قادیان میں شعائر اللہ کی حفاظت کے لئے پہلے منتخب شدہ نوجوانوں میں شامل تھے۔ نہ معلوم پھر کس مجبوری کی وجہ سے یا بزرگوں کے حکم سے پاکستان چلے گئے۔ واللہ اعلم بالصواب۔

خواجہ محمد عبداللہ صاحب میر:

آپ بفضلہ تعالیٰ بقید حیات راولپنڈی پاکستان میں مقیم ہیں۔ آپ آسنور کشمیر میں پیدا ہوئے۔ حضرت والد صاحب کی دلی خواہش کی وجہ سے بڑے بھائی کے ہمراہ تعلیم و تربیت قادیان میں حاصل کی۔ تقسیم ملک کے بعد پاکستان چلے گئے۔ پہلے موضع ججن میں الاٹ شدہ مکان میں سکونت رہی۔ آپ تجارت پیشہ آدمی تھے۔ آپ کی شادی محترمہ رشیدہ بیگم بنت مکرم میاں محمد صدیق صاحب مرحوم دودھان گلوب سے ہوئی۔ یعنی آپ محترم میاں محمد صدیق صاحب بانی مرحوم کے ہم زلف ہیں۔ بھابھی رشیدہ صاحبہ بہت نیک خاتون اور اپنے کمزور شوہر کی بہت خدمت کرنے والی ہے۔ کاروبار کے چکر میں ججن سے ربوہ اور ربوہ سے راولپنڈی چلے گئے۔ یہاں بڑی دیر تک جنرل سٹور کا شغل کرتے رہے۔ اور مستقل طور پر پنڈی ہی میں سکونت پذیر ہیں۔ آپ دنیائے احمدیت میں جانے پہچانے آدمی ہیں۔

جلسہ سالانہ قادیان پر ہر ملک کے دوست احباب اور شناسائی آپ کو پیار سے گلے لگاتے رہے۔ خلیفہ وقت حضرت مرزا طاہر احمد صاحب ایدہ اللہ تعالیٰ سے بہت قربت ہے۔ ۱۹۹۱ء میں جب حضور قادیان تشریف لائے تو مسجد اقصیٰ میں کشمیریوں کی ملاقات حضور سے کرنی تھی۔ بھائی جان بھی خاکسار کے پہلو میں بیٹھے تھے۔ حضور پر نور جب تشریف لائے تو بھائی جان کو دیکھ کر امیر صاحب کشمیر سے کہنے لگے کہ یہاں کشمیریوں کے ساتھ پاکستانی بھی بیٹھے ہیں بھائی جان تاڑ گئے۔ تو آپ نے حضور ایدہ اللہ سے عرض کی حضور پہلے میں کشمیری ہوں پھر پاکستانی۔ تو حضور مسکرائے۔ بھائی خواجہ محمد عبداللہ صاحب کو اپنے مادر وطن کشمیر سے حد درجہ محبت ہے۔ جب کشمیر کی بات یا کسی رشتہ دار کی ملاقات ہوتی ہے۔ ہمیشہ جدائی کے غم میں وفور جذبات سے پرغم ہوتے ہیں۔ اور تمنا کرتے ہیں۔ پہنچتی یہ خاک وہیں جہاں کی خمیر تھی۔ اگرچہ آپ کی طبیعت میں تیزی ہے۔ لیکن پیار و محبت کے سمندر میں ایک روانی بھی ہے۔ ماشاء اللہ آپ کے چھ بیٹے خواجہ ثناء اللہ میر۔ خواجہ مطیع اللہ میر۔ خواجہ برکت اللہ میر۔ خواجہ ظفر اللہ میر۔ خواجہ نصر اللہ میر۔ خواجہ محمد احمد میر ہیں۔ اور دو بیٹیاں منعمہ رانا۔ اور ریحانہ ہیں۔ ماشاء اللہ سب

صاحب اولاد ہیں۔ دولڑکیاں اور خواجہ نصر اللہ میر بیرون ملک میں ہیں جو احمدیت کے فدائی اور خلیفہ وقت کے تابعدار ہیں۔

۳) خواجہ عبدالسلام صاحب میر۔ آپ ڈولر کشمیر میں پیدا ہوئے۔ اور آجکل اپنے آبائی مکان موضع آسنور میں سکونت پزیر ہیں۔ آپ بوجہ خرابی صحت زیادہ پڑھ لکھ بھی نہ سکے۔ آج بھی جسمانی تواکمزور ہیں۔ پہلے قادیان میں ایک فیکٹری میں کام کرتے تھے۔ پھر اپنے گاؤں میں ہی کھیتی باڑی کا کام کرتے رہے۔ باغبانی آپ کا خاص مشغلہ ہے۔ سیبوں کا باغ بنانے میں ماہر ہیں۔ جو آپ کا ذریعہ معاش بھی ہے۔ آپ کی شادی ماموں زاد بھائی کی لڑکی حلیمہ بیگم سے ہوئی۔ آپ کے تین لڑکے عبدالؤمن، میر، عبدالوکیل، میر، عبدالقدوس میر اور دولڑکیاں لمٹہ السلام زوجہ محمد عبداللہ اور شمیمہ بیگم زوجہ محمد صدیق ٹھوکر ہیں۔ سب بچے آباد اور صاحب اولاد ہیں۔ ہمارے والدین مرحومین کو آپ کے ساتھ زیادہ ہمدردی و شفقت تھی۔ بھائی صاحب سادہ طبیعت کے مالک ہیں۔ قادیان دارالامان کے ساتھ بہت انس ہے۔

۴) لمٹہ الرحمن صاحبہ۔ حضرت والد صاحبؒ کی ڈیوٹی جن ایام میں کوکرناگ کشمیر میں تھی یہ پہلی لڑکی پیدا ہوئی۔ اس لئے یہ والدین کی جیتی اور لاڈلی بیٹی تھی۔ اور گرلز اسکول آسنور میں تعلیم حاصل کی۔ آپ کی شادی اپنے ہی خاندان میں خواجہ سعید احمد ڈار صاحب سے ہوئی۔ جو پہلے مدرس پھر اردو کے لیکچرار تھے۔ آپ کے دو بچے ہیں۔ فرید احمد اور بشری۔ عزیزم فرید احمد ڈار مدرس ہے ماشاء اللہ دونوں صاحب اولاد ہیں۔ اور احمدیت کے فدائی ہیں۔ ہمشیرہ لمٹہ الرحمن صاحبہ نے اپنے والدین مرحومین اور ساس سسر کی بہت خدمت کی۔ اللہ تعالیٰ سب کو اجر عظیم عطا فرمائے۔ آمین

۵) لمٹہ الرحیم صاحبہ: آپ موضع آسنور کشمیر میں پیدا ہوئی۔ اور آج کل اسلام آباد پاکستان میں مقیم ہیں۔ ابتدائی تعلیم پرائمری اسکول آسنور میں حاصل کی۔ پھر حضرت والد صاحبؒ مرحوم کے فرمان پر اپنے بڑے دو بھائیوں کی سرپرستی میں پہلے قادیان میں بعد ازاں ربوہ میں اپنی تعلیم مکمل کی۔ partition میں بھائیوں کے ساتھ پر آشوب حالات میں پاکستان چلی گئی۔ وہاں خاندان حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے چند افراد کے عمل دخل سے آپ کی شادی

مکرم چودھری مبارک احمد صاحب اعوان ایم ایس سی سے ہوئی۔ مبارک صاحب نے آڑے وقت اور دشوار گزار حالات میں اپنی تعلیم مکمل کر کے اپنے بہن بھائیوں کی بہت ذمہ داریاں بطریق احسن سرانجام دیں۔ پھر حکومت پاکستان میں ”سائنسی اور صنعتی ادارہ“ میں اچھے عہدہ پر فائز رہے۔ ۱۹۸۵ء میں اپنے فرائض سے سبکدوش ہونے کے بعد وقف عارضی میں غانا (افریقہ) چلے گئے لیکن بوجہ خرابی صحت واپس آنا پڑا۔ آپ دونوں میاں بیوی بہت نیک پارسا صوم و صلوة کے پابند خدمت دین میں پیش پیش اور جفاکش ہیں۔ کہتے ہیں درخت اپنے پھل سے پہچانا جاتا ہے۔ آپ دونوں نے تعلیم و تربیت کے سنہری اصولوں کو اپنا کر اپنی اولاد کو زیور علم سے آراستہ و پیراستہ کیا ہے۔ پرورش اور اعلیٰ تعلیم دلوانے میں کوئی دقیقہ فروگذاشت نہیں کیا۔ آپ کی ایک لڑکی بشری اہلیہ انعام الہی کو اللہ تعالیٰ نے غیر معمولی زہانت سے نوازا ہے۔ پاکستان میں ایم ایس سی کیا پھر حکومت امریکہ سے اس کو فیلوشپ عطا ہوئی۔ اور آپ نے امریکہ میں نباتات کے شعبہ میں p.h.d کی۔ اس پیاری بچی کا کہنا ہے کہ میرے نانا خواجہ عبدالرحمن صاحب صحابی ریخ آفیسر کشمیر نے بدرجہ اتم ایمانداری اور جانفشانی سے جنگلات کے اشجار کو پیار و محبت کے پانی سے سیراب و شاداب کیا تھا۔ اس خلوص کا نعم البدل آپ کی نواسی کو شعبہ نباتات میں ہی ملا۔ الحمد للہ۔

ہمشیرہ ائمۃ الرحیم کے دولڑکے خالد محمود اور طارق محمود انجینئرنگ میں ڈگری یافتہ ہیں۔ اور شاہد محمود نے گریجویشن کی ہے۔ دوسری لڑکی صفیہ اہلیہ شیخ خلیل احمد صاحب نے بھی گریجویشن کر کے امور خانہ داری کو اپنا شغل بنایا ہے۔ اس طرح سب بچے آباد اور صاحب اولاد ہیں۔

۶۔ خاکسار عبدالوہاب میر

موضع آسنور میں پیدا ہوا۔ ایام طفولت میں ہی باپ کا سایہ سر سے اٹھ گیا۔ مصائب و مشکلات میں انٹرنس پاس کر کے محکمہ تعلیم میں بحیثیت مدرس ملازمت اختیار کی۔ اور ابتداء میں ماہانہ مشاہرہ مبلغ ۵۰ روپے ملتا رہا۔ مالی لحاظ سے گھر کی حالت ابتر ہو چکی تھی۔ ہوش سنبھالتے ہی خاکسار بفضلہ تعالیٰ اپنی پیاری والدہ مرحومہ اور بھائی بہنوں کا سہارا بنارہا۔ پیاری والدہ

مرحومہ نے ہر آڑے وقت میں میرا ساتھ دیا۔ اور خاکسار نے ان کے ہر جذبے کا احترام کیا۔ اور یہ بات پورے یقین سے کہنے میں فخر محسوس کرتا ہوں کہ اللہ تعالیٰ کے فرمان کے مطابق ولا تنہرہما اُف کبھی ان کے سامنے اُف تک نہیں کیا۔ بلکہ حتی المقدور خدمت کی۔ پاکستان میں اپنے بچوں سے کہا کرتی تھی۔ کشمیری زبان میں۔ ”وہاب چھ میا نین ہمیں بند یار“ وہاب (خاکسار) میرے آڑے وقتوں کا دوست رہا۔ نہ معلوم میرے والدین نے مجھ احقر العباد کے لئے کتنی دعائیں کی ہوں گی جن کی بدولت بفضلہ تعالیٰ خاکسار مع بچے اس زندگی کی دوڑ میں کامیاب رہا۔

”وہ زباں لاؤں کہاں سے جس سے ہو یہ کاروبار“

والدہ مرحومہ نے مجھے دنیا کی اونچ نیچ، صبر و تحمل، اور محنت مشقت جیسے صعوبت گزار مراحل سے نہ صرف روشناس کیا بلکہ ان کا عادی بھی بنایا۔

”گلشن پرست ہوں مگر گل ہی نہیں عزیز ☆ کانٹوں سے بھی نباہ کئے جارہا ہوں میں۔

حضرت والد صاحبؒ کی وفات ہم سبھوں کے لئے ایک ناقابل برداشت صدمہ ہی نہیں تھا بلکہ ایک خلا بھی پیدا ہوا۔ آپ نے ہم چھوٹے چھوٹے بچوں کے لئے کچھ پس انداز بھی نہیں کر رکھا تھا۔ بڑے دو بھائی پہلے ہی پاکستان چلے گئے تھے۔ زمین جائیداد پر لوگوں اور کاشتکاروں کا بے جا عمل دخل تھا۔ ملکی حالات ابتر۔ یہ ماحول میرے لئے ایک چیلنج ہی تو تھا۔ لیکن اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم کا طالب اور محنت و مشقت کو گلے لگایا۔ ماں کی مامتا نے ڈھارس بندھائی اور بفضلہ تعالیٰ چند ہی سالوں میں حالات ٹھیک ہو گئے۔ دو بہنوں اور بڑے بھائی کی شادیاں بھی ہوئیں۔ آخر میں خاکسار کی شادی سلیمہ نیاز صاحبہ بنت سید قطب الدین صاحب مرحوم سے ہوئی۔ اور ماشاء اللہ کامیاب زندگی بسر ہوئی۔ ہم دونوں نے ہر معاملے میں ”خیر الامور اوسطہا“ کے تحت سب کام سرانجام دئے۔ اپنے پیشہ (مدرسی) سے سچی لگن رہی۔ جو بھی تھوڑا بہت علم میرے پاس تھا خلوص اور محنت سے اس سرمایہ کو نئی پود تک پہنچایا۔ اللہ نے اس کا نعم البدل اس دنیا میں اس رنگ میں عطا کیا کہ میرے دو بیٹے بفضلہ تعالیٰ بہت محنتی، شریف اور شائستہ ثابت ہوئے۔ ماشاء اللہ دونوں ڈگری یافتہ انجینیر ہیں۔ چھوٹے بچے عزیز شہاب الرحمن طاہر نے سول

انجینئرنگ میں بفضلہ تعالیٰ کالج کے فائنل امتحان میں فیسٹ پوزیشن حاصل کی۔ جس کی خبر بدر اخبار اور الفضل انٹرنیشنل میں آئی تھی۔ نیز یونیورسٹی کشمیر کے کانویشن کے موقع پر صدر جمہوریہ ہند نے عزیز کو امتیازی ٹیٹول کیٹ وغیرہ عطا کی۔ الحمد للہ الحمد للہ۔ اس سے بھی بڑا تحفہ (طلائی تمغہ) جو عزیز کو ملا وہ حضور ایدہ اللہ تعالیٰ بنصرہ العزیز کی جانب جلسہ سالانہ قادیان پر مرحمت ہوا۔ اور ماہانہ مشکوٰۃ قادیان میں یہ خبر اس طرح شائع ہوئی۔

انعامی تمغہ

اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے عزیز شہاب الرحمن ابن عبد الوہاب صاحب میر آف آسنور کشمیر کو سول انجینئرنگ میں نمایاں کامیابی کے لئے حضور انور ایدہ اللہ تعالیٰ بنصرہ العزیز کی طرف سے دئے جانے والے حضور انور کے دستخط شدہ تفسیر صغیر اور طلائی تمغہ کا مستحق قرار دیا گیا۔ عزیز کے دادا خواجہ عبد الرحمن صاحب میر اور پڑدادا خواجہ حبیب اللہ صاحب میر دونوں حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے صحابی تھے۔ یہ تمغہ جلسہ سالانہ قادیان کے تیسرے روز ۱۵ نومبر کو دوسرے اجلاس میں آپ کو حضرت صاحبزادہ مرزا وسیم احمد صاحب ناظر اعلیٰ قادیان کے مبارک ہاتھوں عطا ہوا۔ فالحمد للہ علیٰ ذالک

عزیز شہاب الرحمن میر نے کشمیر یونیورسٹی سے سول انجینئرنگ میں اول پوزیشن حاصل کی ہے۔ اللہ تعالیٰ یہ اعزاز آپ کے خاندان اور سب افراد جماعت کے لئے باعث برکت بنائے۔ آمین۔ (ماہانہ مشکوٰۃ قادیان جنوری ۲۰۰۰ء جلد ۱۹ شمارہ ۱)

بڑا چھینیب الرحمن الیکٹرک انجینئر ہے۔ اس کی شادی لمتہ الحفیظہ ایم اے بنت مکرم میر غلام رسول صاحب آف یوری پورہ سے ہوئی۔ غرض اللہ تعالیٰ کے فضل اور بلند شان اور حضرت والد صاحب کی نیک دعاؤں کا ثمرہ ہے ورنہ میری بساط کیا ہے۔ من آئم کہ من دائم۔ اللہ تعالیٰ ہماری نئی پود کو خدمت دین اور خدمت خلق کی توفیق عطاء فرمائے۔ آمین۔

۷۔ ہمشیرہ لمتہ اللہ: یہ ہماری سب سے چھوٹی بہن ہے۔ جو موضع آسنور میں پیدا ہوئی۔ ابتدائی تعلیم و تربیت سکول میں اور گھر میں حضرت والد صاحب نے کی۔ والدہ صاحبہ مرحومہ کے

ساتھ اپنے بھائیوں کے پاس پاکستان چلی گئی۔ وہاں اس کی شادی مکرم خواجہ نذیر احمد صاحب

سے ہوئی۔ جو بہت ہی نیک عبادت گزار، خاموش طبع، دوست احباب اور رشتہ داروں کے ہمدرد اور سختی ہیں۔ آپ فیکٹری ایریاء ربوہ میں سکونت پزیر ہیں۔ ماشاء اللہ۔ آپ اپنے بچوں کے ساتھ خوش و خرم ہیں۔ سب بچے لائق و فائق اور وفادار ہیں۔ آپ کے دو بچوں نے گریجویشن کی ہے۔ اور سب برسر روزگار ہیں۔ الحمد للہ۔

آپ کے تین لڑکے اعجاز احمد، مظفر احمد، اور مبشر احمد ہیں۔
مسلم شریف کی حدیث ہے:

اذا مات الانسان يقطع عنه عمله الا من ثلثه من صدقة
جارية او علم ينتفع به ولد صالح يدعوا له۔

یعنی جب انسان فوت ہو جاتا ہے۔ تو اس کے سب عمل ختم ہو جاتے ہیں۔ بجز تین کاموں کے صدقہ جاریہ۔ وہ علم جس سے فائدہ اٹھایا جائے۔ نیک اولاد جو اپنے فوت شدہ والدین کے حق میں ہمیشہ دعا گور ہے۔

انشاء اللہ قارئین کو اس کتاب کے مطالعہ سے حضرت والد صاحب مرحوم کی سیرت کے ہر پہلو پر غور کرنے سے یہ اندازہ ہوگا۔ کہ واقعی مرحوم و مغفور مندرجہ بالا حدیث کی تینوں خوبیوں کے مصداق تھے۔

بچوں کے ساتھ شفقت: حضرت خواجہ صاحب کو اپنے بچوں کے ساتھ پدرانہ پیار و محبت کا ہونا ایک فطری عمل تھا۔ آپ عام بچوں کے ساتھ بھی شفقت و محبت سے پیش آتے تھے۔ اور اپنے آقا کے اسوہ حسنہ پر عمل پیرا تھے۔ حدیث نبوی ہے:

وعن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال قبل البنی صلی اللہ
علیہ وسلم الحسن بن علی رضی اللہ عنہ۔ فقال الاقرع بن

جالس ان لی عشرة من الولد ما قبلت منهم احدا۔ فقال رسول
اللہ من لا یرحم لا یرحم (متفق علیہ) بخاری مسلم جلد اول

ترجمہ: حضرت ابو ہریرہؓ کی ایک روایت ہے کہ وہ کہتے ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے حسن بن علی (اپنے نواسے) کو چوما تو پاس بیٹھے اقرع بن جالس ہتھی نے کہا کہ میرے تو دس بچے ہیں لیکن میں نے کسی ایک کو کبھی نہیں چوما۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کی طرف دیکھا اور فرمایا۔۔۔ ”جو رحم نہیں کرتا اس پر رحم نہیں کیا جائیگا۔“

اس واقعہ سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ آنحضور صلی اللہ علیہ وسلم کا دل بچوں کے پیار و محبت سے معمور تھا۔ بزرگوں نے مجھ سے بیان کیا ہے کہ حضرت خواجہ صاحب مرحوم چھوٹے بچوں کو پیسہ دو پیسے یا اس سے زیادہ دیا کرتے تھے۔ اس لئے بچے بھی آپ سے مانوس تھے۔ حتیٰ کہ بچوں کو بھی پہلے السلام علیکم کا تحفہ پیش کرتے تھے اور مسکراتے ہوئے ان کا حال احوال پوچھتے تھے۔ السلام علیکم کے متعلق حضرت مسیح موعود علیہ السلام کا شیوہ قابل تقلید ہے۔ جیسے سیرۃ المہدی حصہ سوئم (مرتب کردہ) حضرت مرزا بشیر احمد ایم اے روایت ۶۰۷ میں مذکور ہے۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم

”خواجہ عبدالرحمن ساکنہ کشمیر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا۔ جب کبھی کوئی شخص حضرت مسیح موعود علیہ السلام کو السلام علیکم کہتا تھا تو حضور علیہ السلام عموماً اس کی طرف آنکھ اٹھا کر دیکھتے اور محبت سے سلام کا جواب دیتے۔“ حضرت والد صاحب مرحوم کی سادہ مگر پر عظمت شخصیت کے سب مداح ہیں۔ ہر شناسائی ملاقات کے وقت آپ کو درخواست دعا کرتا تھا۔ آپ جواباً ان کو نماز پڑھنے اور خود دعائیں کرنے کی تاکید فرماتے تھے۔ اور انشاء اللہ میں بھی دعا کرونگا۔ کہہ کر ان کو رخصت کرتے تھے۔ بزرگوں کا بیان ہے کہ آپ کی ملاقات سے سکون قلب حاصل ہوتا تھا۔ بعض مصائب و آلام میں تخفیف ہوتی تھی۔ مکرم راجہ فضل الرحمن صاحب ساکنہ یاری پورہ (جوا بھی بقید حیات ہیں) نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا ”کہ میرے والد صاحب کہا کرتے تھے کہ راجہ ولی محمد خان صاحب کو رینجر صاحب سے بہت عقیدت تھی۔ راجہ صاحب مرحوم کہا کرتے تھے کہ جب بھی مجھے کوئی دنیوی رنج و غم یا جسمانی تکلیف ہوتی ہے۔ اس دوران جب میں رینجر صاحب مرحوم کو خواب میں دیکھتا ہوں۔ حلفاً میں اپنی تکلیف کو ہلکا محسوس کرتا ہوں۔“

اپنے بچوں کو بچپن ہی سے نماز باجماعت کی ترغیب دیتے تھے۔ اور بعض اوقات نمازوں کی لاپرواہی پر سزا بھی دیتے تھے۔ مکرم ملک عبدالرحمن صاحب ساکنہ آسنور نے مجھ سے بیان کیا کہ جب خواجہ صاحب باہر اپنی ڈیوٹی پر جاتے تھے اور مجھے بلوا کر میری یہ ڈیوٹی رکھتے تھے کہ آیا میرے بچے میری عدم موجودگی میں مسجد میں باجماعت نمازیں ادا کرتے ہیں؟ ڈیوٹی سے واپسی پر مجھے رپورٹ دینی پڑتی تھی۔ اس تربیت کا اثر ماشاء اللہ آپ کی اولاد میں مؤثر بن رہا ہے۔ بفضلہ تعالیٰ آپ کی سب اولاد نمازی ہے۔ الحمد للہ۔

خواجہ عبدالغفار صاحب ڈار سابقہ ایڈیٹر (اصلاح سرینگر) نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا!! خواجہ عبدالرحمن صاحب میر مرحوم کا ایک تعارف کرانا ضروری ہے۔ جس سے یہ معلوم ہوگا کہ وہ راقم الحروف (خواجہ عبدالغفار صاحب ڈار) کے نہ صرف بزرگ تھے۔ بلکہ رشتہ داری میں پھوپھا لگتے تھے۔ تفصیل اس اجمال کی یہ ہے کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے ماننے والوں کے درمیان باہم رشتہ اخوت تھا۔ اس کی بے شمار مثالیں ایسی ہیں۔ کہ دیگر جگہوں پر ہمیں ایسی دنیوی رشتوں میں بہت کم ہی ملتی ہے۔ گاہگرن کے ایک غریب احمدی حضرت میاں حبیب اللہ صاحب میر کے یہ فرزند خواجہ عبدالرحمن صاحب میر جب تعلیم سے فراغت کے بعد اپنے وطن آئے تو میرے دادا حضرت خواجہ عمر ڈار صاحب مرحوم رئیس آسنور کے چھوٹے بھائی خواجہ غلام رسول ڈار المعروف (لسی ڈار) نے انہیں اپنی ایک صاحبزادی محترمہ صاحبہ بیگم صاحبہ کا نہ صرف رشتہ دیا بلکہ انہیں خانہ داماد بنا کر اپنی جملہ جائیداد کا 1/5 حصہ کا مالک بھی بنا دیا۔ اس طرح ان کی مستقل سکونت اور بود و باش آسنور میں رہی۔ دوران ملازمت محکمہ جنگلات وادی کشمیر کے علاقہ کوکرنانگ۔ تحصیل بارہمولہ، علاقہ حمل اور تحصیل کرناہنگ ڈار وغیرہ مقامات میں بطور ریجن آفیسر ملازمت کرتے رہے۔ ڈوگرہ عہد میں محکمہ جنگلات میں ساری عمر رشوت نہیں لی حتیٰ کہ حیرت انگیز بات یہ ہے کہ جب کہ ایسے ملازموں کا اس زمانے میں کم از کم دوروں کے درمیان اپنی روٹی کھانے کا رواج نہ تھا۔ مگر وہ اپنے ملازم سے اپنا کھانا بنواتے اور ہمیشہ ہی عمر بھر رزق حلال پر زندگی گزارتے رہے۔

خاکسار کے ساتھ گزرے ہوئے واقعات جن کا میں چشم دید شاہد ہوں ان کا تفصیل سے

احاطہ کرنا میرے لئے بہت مشکل ہے۔ مگر اس وقت مجھے ایک دلچسپ بات یاد آئی۔ وہ یہ کہ ایک دفعہ خاکسار کو علاقہ حمل تحصیل بارہمولہ میں ان کے ساتھ دورہ کرنے کا موقع ملا۔ کشمیری پنڈتوں کے ایک گاؤں صنم میں کشمیری لیڈر مرزا محمد افضل بیگ کے بھائی غلام قادر بیگ سے ملاقات ہوئی۔ اس خاندان کے ساتھ ہمارے خاندانی تعلقات بھی تھے۔ اور باہم کوئی تکلف نہ تھا۔ کہنے لگے آپ کو بتاؤں کہ یہاں کے لوگ خواجہ رینجر صاحب کے متعلق کیا کہتے ہیں۔ دریافت کرنے پر کہنے لگے کہ میں نے ان کے بارے میں جس کسی سے دریافت کیا تو اس نے یہ کہا۔ ”کہ ہمارے ان تمام جنگلات میں کوئی بھی درخت جنگل ایسا نہیں جس کے نیچے خواجہ صاحب نے نماز ادا نہ کی ہو۔ ان کی نماز گزاری سبھوں کے لئے قابل تقلید ہے۔ پھر خواجہ صاحب انتہائی طور پر نماز باجماعت کا اہتمام کرتے تھے۔ چنانچہ ان کے رفیق سفر محمد عبداللہ صاحب میر کو ہمیشہ ہی ان کے ساتھ باجماعت نمازیں ادا کرنے کی سعادت حاصل رہی۔ وہ کہتے ہیں کہ مجھے انہی کی دعاؤں نے نوازا۔ اور ان کی خدمت کے صلے میں اللہ تعالیٰ نے عمر کے آخر میں بچوں کی جانب سے خوشیاں دکھائیں۔ اور خوشحالی دی۔ اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ محمد عبداللہ صاحب میر آف گاگرن کی اولاد اب بھی اپنے گاؤں موضع گاگرن میں جماعت کی نمائندگی کرتی ہے۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم

حضرت خواجہ صاحب مرحومؒ کے شمائل و اخلاق

اسلام کی تعلیمات کا نچوڑ اس کے نام کے اندر ہی پایا جاتا ہے۔ اس نام کے اندر ہی امن، شانتی اور سلامتی کا پیغام ہے۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے مسلم کی تعریف یوں فرمائی ہے مسلمان وہ ہے جو قولاً و فعلاً دوسروں کو تکلیف نہ دے۔ اسی طرح اصل میں ”انسان“ ہے۔ یعنی دو محبتوں کا مجموعہ۔ ایک محبت اس کی اپنے خالق و مالک اللہ تعالیٰ کے ساتھ ہے اور اس کی ادائیگی یعنی حق اللہ اور اللہ کی خوشنودی حاصل کرنے کے لئے بنی نوع انسان کے ساتھ محبت کرنا اور اس کے حقوق کو بجالانا حق العباد ہے۔

”فرشتوں سے بڑھ کر انسان بننا ☆ مگر اس میں لگتی ہے محنت زیادہ“

خدا تعالیٰ کی راہنمائی کے ماتحت چلنے والا انسان غیر معمولی انعامات سے نوازا جاتا ہے۔ حضرت والد صاحبؒ مرحوم کا بھی اپنے خالق حقیقی کے تابع ہر قول و فعل ہوتا تھا۔ آپ نے بچپن سے لے کر بڑھاپے تک زندگی کے مختلف ادوار کو محبت کے تقاضوں کے تابع رکھا۔ عام بچوں کو ماں کی مانتا نصیب ہوتی ہے۔ لیکن اباجی مرحوم اس مانتا اور سایہ عاطفت سے بچپن میں مرحوم ہوئے تھے۔ لیکن شفقت پدری نے ساتھ نہ چھوڑا۔ بہن بھائیوں کے پیار سے بھی دوری رہی۔ اس طرح ہمیشہ نئے نئے لوگوں سے واسطہ پڑا اور ہر موڑ پر حالات کے ساتھ سمجھوتہ کرنا پڑا۔ لیکن محبت، عبادت، محنت اور اخلاق سے ہر خار زار میدان کو جیت لیا۔ اس طرح دائرہ محبت وسیع ہوتا گیا۔ اخلاق کی تکمیل جب بام عروج کو چھو لیتی ہے یا جو لوگ اپنے دامن کو اس دنیا میں گناہوں اور لغزشوں سے بچا کر مرضی مولا کے تابع اپنی زندگی بسر کرتے ہیں متقی یا پرہیزگار کہلاتے ہیں۔

ہر ایک نیکی کی جڑ یہ اتقا ہے

اگر یہ جڑ رہی سب کچھ رہا ہے

(حضرت مسیح الزمان علیہ السلام)

جیسے اللہ تبارک و تعالیٰ نے قرآن پاک میں ایسے لوگوں کے متعلق فرمایا ہے

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَ

طَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝

(ترجمہ) اور ان مؤمنوں کے پہلوؤں کے بستروں سے الگ ہو جاتے ہیں (یعنی تہجد کی نماز پڑھنے کے لئے) اور وہ اپنے آپ کو اس کے غذاؤں سے بچنے کے لئے اور اس کی رحمتوں کو حاصل کرنے کے لئے پکارتے ہیں۔ اور جو کچھ ہم نے ان کو دیا ہے اس میں سے خدا کی راہ میں خرچ کرتے رہتے ہیں۔ (السجدہ ۳۲، آیت ۱۷)

خاکسار اس بات کا چشم دید گواہ ہے کہ حضرت والد صاحبؒ مرحوم رات کا آرام بہت کم بستر پر کرتے تھے۔ میں نے ہمیشہ آپ کو آخری شب کے اوقات نماز تہجد میں اللہ کے حضور رقت

وعاجزی سے دیکھا۔ اور دن کو پانچ نمازوں کے علاوہ نوافل بھی التزام سے ادا کرتے تھے۔

حضرت مولوی عبدالرحیم صاحب نیر مرحوم کا ایمان افروز خواب۔۔۔

میرے بڑے بھائی خواجہ محمد عبداللہ صاحب میر آف راولپنڈی نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ حضرت مولوی عبدالرحیم صاحب نیر ہمارے گھر آسنور میں تشریف فرما تھے۔ ہم دونوں بھائی قادیان سے گرمیوں کی چھٹیاں گزارنے کے لئے گھر آئے تھے۔ ایک دن صبح کی اذان ہوئی نیر صاحب مرحوم نماز کے لئے اٹھے اور ساتھ ہی ہمارے کمرے کے دروازے کو کھٹکھٹایا اور فرمایا۔۔۔

”اٹھو۔ اٹھو نماز پڑھو۔ خدا کی قسم میں نے فرشتوں کو تمہارے باپ کی چھت پر حمد و ثنا کے گیت گاتے دیکھا۔“

شکل و صورت حضرت والد صاحب مرحومؒ

حضرت والد صاحب مرحوم کا رنگ گندمی تھا۔ تمام خدو خال معیاری خوبصورتی لئے ہوئے تھے۔ آنکھیں سفید مائل لیکن دلکش، کتابی چہرہ، قد خاصا لمبا لیکن جسم نحیف، پروقار تیز تیز قدم اٹھاتے تھے لیکن اکڑ کر چلنا جانتے ہی نہیں تھے۔ حضرت خواجہ صاحب مرحومؒ کی ایک تصویر خاکسار کو مشکل سے دستیاب ہوئی۔ اول تو ان دنوں فوٹو گرافی کا زیادہ رواج نہیں تھا۔ دوئم خاکسار کا خیال ہے کہ آپ کو فطرتاً تصویر کھنچوانے کی رغبت بھی نہیں تھی۔ البتہ ایک پمفلٹ کے سرورق پر قبر مسیح کی تصویر Jesus an Cachemire اور ساتھ ہی ابا جی بھی کھڑے ہیں۔ (یاد رہے قبر مسیح حضرت خواجہ صاحب مرحومؒ کے مادر وطن کشمیر میں بمقام خانیاں سرینگر میں ہے۔) ایک تصویر جو بہم ہوئی ہے دیکھنے والے آپ کی شبیہ دیکھ کر آپ کی سیرت کا اندازہ لگا سکتے ہیں۔ دانت مصفیٰ اور چمکدار تھے۔ اور چہرہ پر سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے مطابق داڑھی اور جوانوں کو ہمیشہ داڑھی رکھنے کی تاکید فرماتے تھے۔

چند مخصوص عادات

خاکسار چھوٹا ہی تھا کہ حضرت والد صاحب مرحوم ملازمت سے سبکدوش ہوئے۔ بوڑھاپے کے آخری ایام میں رات کی نظر کمزور ہوئی تھی۔ اور دن کو بھی قدرے سہارے کی ضرورت پڑتی تھی۔ اس لئے خاکسار کو ساتھ لیکر نماز ظہر و عصر باجماعت ادا کرنے کے لئے مسجد آسنور میں جاتے تھے۔ یعنی ظہر کے بعد عصر کی نماز تک مسجد میں ہی قرآن پاک کی تلاوت و مطالعہ تفسیر صغیر و کبیر و دینی کتابوں کا مطالعہ فرماتے رہتے تھے۔ نماز عصر پڑھ کر میرے ساتھ گھر آتے تھے۔ دن میں بہت دفعہ وضو کرتے تھے۔ لوٹے میں پانی لیکر پہلے بیت الخلاء جاتے تھے۔ واپسی پر دو تین دفعہ مٹی سے ہاتھ صاف کرتے تھے۔ پھر بیٹھ کر لوٹے سے تھوڑا تھوڑا پانی لیکر اطمینان سے وضو فرماتے تھے۔ اور دوران وضو مسواک بھی کرتے تھے۔ اگر کسی وقت مسواک دستیاب نہ ہوتا کسی بار پھولوں کی ٹہنیوں کو مسواک بنا کر دانت صاف کرتے تھے۔ تاکہ سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی تکمیل ہو۔ اور حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے متعلق روایت نمبر ۸۴۱ میں آپ فرماتے ہیں خواجہ عبدالرحمن صاحب متوطن کشمیر نے مجھ سے بیان کیا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام گھر میں جب رفع حاجت کے لئے پاخانے میں جاتے تھے تو پانی کا لوٹا لازماً ساتھ لے جاتے تھے۔ اور اندر طہارت کرنے کے علاوہ پاخانہ سے باہر آکر بھی ہاتھ صاف کرتے تھے۔

خاکسار عرض کرتا ہے۔ کہ حضرت صاحب کا طریق تھا کہ طہارت سے فارغ ہو کر ایک دفعہ سادہ پانی سے ہاتھ دھوتے تھے۔ اور پھر مٹی مل کر دوبارہ صاف کرتے تھے۔

(سیرۃ المہدی حصہ سوم صفحہ 242 مرتبہ حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم اے)

خاکسار نے حضرت والد صاحب مرحوم کو بر فباری اور سرد ترین موسم میں نماز کے وقت بعض اوقات ٹھنڈے پانی سے وضو کرتے دیکھا ہے۔

موسم سرما کی خشکی اور سرد ہوا کی وجہ سے ہاتھ پاؤں میں چاک ہوتے تھے۔ اور خون بھی بہنے لگتا تھا ان زمیوں میں درد بھی ہوتی تھی۔ لیکن درد ہونے کے باوجود ہر نفل اور فرض نماز کے وقت تازہ وضو کر لیتے تھے۔

اک درد ہی تو ہے جو مطاع حیات ہے ☆ جاؤ کہ مجھ کو درد کا درماں نہیں قبول

خاکسار یہ بات بتادینا چاہتا ہے کہ حضرت والد صاحب مرحوم کو گھنٹوں نماز تہجد و نوافل اور

نمازیں ادا کرتے وقت احساس سردی، بھوک یا اور کوئی دنیوی احساس کا خیال نہیں رہتا تھا۔ یعنی مست و مگن ہو کر عبادت بجالاتے تھے۔ اس طرح آپ کی عبادت طہارت اور نفاست کا ایک منفرد امتزاج تھا۔ اللہ تعالیٰ آپ کو کروٹ کروٹ جنت نصیب کرے آمین۔

لباس

حضرت والد صاحب مرحوم ایسی باغ و بہار طبیعت کے مالک تھے۔ خود بھی بشارت رہتے تھے اور اہل خانہ یا اہل مجلس کو بھی بشارت رکھتے تھے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ”مَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ“ کہ میں تکلف کرنے والوں سے نہیں۔ حضرت خواجہ صاحب مرحوم لباس پہننے میں بے تکلف تھے۔ البتہ پاک و صاف ہونا لازمی تھا۔ والدہ صاحبہ اور چچا محمد عبداللہ صاحب میر نے مجھ سے بیان کیا کہ آپ دوران ملازمت کوٹ، پتلون یا کوٹ برز جس پہنتے تھے۔ لیکن گھر میں عام طور پر شلوار قمیض پہنتے تھے۔ کھدر کے کپڑے بھی آپ کو بہت پسند تھے۔ خاکسار نے اباجی کو بعد ریٹائرمنٹ شلوار قمیض، واسکٹ اور گرم اچکن پہنتے دیکھا۔ اُن کی ایک گرم اچکن خاکسار نے بھی استعمال کی۔ سر پر عمامہ (گجڑی) پہنتے جو کبھی کبھی ٹسر کا بھی ہوتا تھا اور ٹوپی بھی پہنتے تھے۔ لباس سادہ مگر صاف ستھرا ہونا لازمی یعنی خوش پوش پاؤں میں جرابیں پہنتے تھے۔ بعض اوقات جرابوں اور کپڑوں کی مرمت خود کرتے میں نے دیکھا ہے۔ جوتی موسم کے لحاظ سے پہنتے تھے۔ اباجی کی سادگی کی دو باتیں لباس کے بارے میں آپ کی اولاد اور لوگوں نے بیان کیں۔ جو آپ کو اپنے محسن اور سر پرست بزرگ حضرت مولوی شیر علی صاحب مرحوم سے ورثہ میں ملی ہوئی تھیں۔ جس روحانی باپ کے گھر میں آپ نے عرصہ دراز تک پرورش اور نشوونما پائی تھی دونوں کی سادگی کا یہ عالم ہوتا تھا کہ پاجامہ کا ایک پائینچہ ٹخنے کے اوپر اور دوسرا نصف ساق تک ہوتا تھا۔ اور بے خبری کے عالم میں اباجی کے واسکٹ کے ٹٹن بے ترتیبی سے بند کئے ہوتے تھے۔ اس طرح دونوں کی یہ شریفانہ اور اسلامی شان بطور یادگار ہے۔ جیسے حضرت خواجہ صاحب کی وفات پر حضرت مصلح موعودؑ نے فرمایا۔۔۔۔۔

”خواجہ عبدالرحمن صاحب کشمیری فوت ہوئے ہیں۔ آپ بہت عابد و زاہد اور نیک فطرت

تھے۔ آپ حضرت مولوی شیر علی صاحب کے خصائل پر تھے۔“۱

حضرت والد صاحبؒ مرحوم کی نفاست پسندی کے بارے میں غیر از جماعت دوست حاجی غلام قادر صاحب ملک ساکنہ کھڈ ہانچی پورہ نے مجھ سے بیان کیا کہ ہم دوران طالب علمی پیدل قصبہ شویان حصول تعلیم کے لئے جاتے تھے۔ کبھی کبھار خواجہ رہنمائی صاحب مرحوم گھوڑے پر سوار ہو کر ہمارے ہم سفر ہوتے تھے۔ ہم ان کے ساتھ ساتھ چلتے تھے۔ وہ پیار و شفقت سے ہمارا حال و احوال پوچھتے تھے۔ اور تبلیغ بھی کرتے تھے۔ کبھی شفقت سے کوئی چیز خرید کر یا نقدی دے کر ہماری حوصلہ افزائی فرماتے تھے۔ اور ہم بچے بہت خوش ہوتے تھے۔ نیز حاجی صاحب موصوف آسنور کے ایک نیک صالح بزرگ حضرت مولوی حبیب اللہ صاحبؒ مرحوم کے متعلق بھی بیان کرتے ہیں کہ ”یہ دونوں بزرگ بہت پرہیزگار، دیانت دار، اور عبادت گزار تھے۔ ان کے جسموں اور کپڑوں سے ایک خاص قسم کی مومناہ خوشبو آتی تھی۔ وہ خوشبو میں نے عمر بھر کہیں کسی فرد میں محسوس نہیں کی۔“

”آسمان ان کی لحد پر نور افشانی کرے۔ سبزہ نور ستہ اس گھر کی نگہبانی کرے“ ۴مین۔

خوراک!!

انگریزی میں ایک سبق آموز بات ہے۔ Eat to live, not live to eat. یعنی زندگی کا مقصد صرف پیٹ بھر کر کھانا نہیں۔ بلکہ اتنا ہی کھانا کھایا جائے جس سے زندگی برقرار رہے۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت کے مطابق پوری بھوک لگنے پر کھانا تناول کیا جائے۔ اور چار لقموں کی ابھی بھوک ہو کھانا چھوڑ دیا جائے۔ اس میں حفظان صحت کے اصول اور بقائے نفس کا گہرا فلسفہ دونوں چیزیں مضمر ہیں۔ حضرت والد صاحبؒ مرحوم کو کھانے پینے کے معاملے میں حلال و حرام اور طیب و غیرہ کا معاملہ ملحوظ رہتا تھا۔ آپ ہر قسم کا حلال کھانا شوق سے کھاتے تھے۔ کسی خاص کھانے کے گرویدہ نہ تھے۔ جیسے سیر ہوئے۔ (امیر مہتمول) لوگوں کے گھر میں یا باہر اعلیٰ کھانے کا انتظام کرواتے ہیں۔ اور پر شکم ہو کر دنیاوی مسرت سے لطف اندوز ہوتے ہیں۔ لیکن حضرت خواجہ صاحبؒ ادنیٰ کھانے کو بھی نعمت سمجھ کر کھاتے تھے۔

”اے سیر ترانان جوی خوش نہ نمائد۔ معشوق من است آنچہ بہ نزدیک تو زشت است“
خاکسار نے کبھی آپ کو کسی کھانے یا سالن کے متعلق گھر والوں یا گھریلو خدمت گار کو ڈانٹتے
نہیں دیکھا۔ نا ہی کسی دوسرے گھر کے کھانے کی عیب جوئی کی۔ دوران ملازمت ہمیشہ اپنے
گھریلو ملازم سے روٹی بنوا کر کھاتے تھے۔

تاکہ کہیں حرام خوری کی لغزش نہ ہو۔ گھر میں سمجھوں کے لئے جو کھانا پکتا تھا۔ حضرت ربینگر
صاحب بھی خوشی سے تناول فرماتے تھے۔ ہمیشہ بہت کم کھانا کھاتے تھے۔ ہر دورے پر اپنے
ماحت ملازمین اور خدمت گاروں کے ساتھ کھانا کھاتے تھے اور بعض اوقات اس مصرعہ کی عملی
تفسیر ان کو سمجھاتے تھے یعنی۔۔

”خوردن برائے زیستن و ذکر کردن است“

جب گھر میں مہمان آتے تھے۔ خوشی محسوس کرتے تھے۔ خصوصاً جب اپنے ہم عصر احباب یا
مرکزی نمائندے قادیان سے تشریف لاتے تھے ان کو گھر میں ٹھہرا کر مہمان نوازی کر کے اپنے
لئے عطائے کردگار سمجھتے تھے۔

”اے برادر مہمان رانیک دار۔ ہست مہمان از عطائے کردگار“

اور مہمانوں کے ساتھ کھانا خود بھی کھاتے تھے۔ چائے پینے کے زیادہ عادی نہ تھے۔
مشروبات پسند فرماتے تھے۔ یہاں پر یہ بات قابل ذکر ہے کہ کشمیری لوگ شاید محنت شاقہ یا
موسمی اثرات کی وجہ سے زیادہ کھانے کے عادی ہوتے ہیں۔ اسی وجہ سے کھانے کے موقعوں پر
روحانی اور عظیم شخصیتیں اس امر کا احترام کرتی تھیں نہ کہ کم ظرف لوگوں کی طرح تذلیل و تضحیک۔
ہمارے آقا و بطحاء حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے کشمیریوں کی اس عادت کا کیسے احترام کیا
ہے۔ جیسے سیرۃ المہدی حصہ سوم (مرتب فرمودہ) حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم اے
روایت ۸۲۴ میں ذکر آتا ہے۔۔۔۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔

خواجہ عبدالرحمن صاحب ساکنہ کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ میرے والد صاحب
اور شیخ غلام رسول صاحب متوطن کشمیر بیان کرتے تھے کہ ابتداء میں حضرت مسیح موعود علیہ السلام

باہر ایک دسترخوان پر جملہ احباب کے ساتھ کھانا تناول فرماتے تھے۔ اور اس صورت میں کشمیری اصحاب کو بھی اسی مقدار میں کھانا ملتا تھا جتنا کہ دیگر اصحاب کو اس پر ایک دن مسیح موعود علیہ السلام نے کھانے کے منتظم کو حکم دیا کہ کشمیر کے لوگ زیادہ کھانے کے عادی ہوتے ہیں۔ ان کو بہت کھانا دیا کرو۔ اس پر ہمیں زیادہ کھانا ملنے لگا۔“

چند عادات !!!

بعض افراد نے مجھ سے بیان کیا جنہوں نے حضرت والد صاحبؒ مرحوم کے سفر و حضر میں ساتھ دیا ہے کہ آپ لوازمات سفر میں ہمیشہ چھڑی چاقو سوئی دھاگہ لوٹا۔ نارنج عینک ضروری کپڑے اور کچھ نقدی ساتھ رکھنا ضروری سمجھتے تھے۔ خاکسار اس بات کا عینی شاہد ہے کہ آپ کو خشک مغزیات بھی بہت پسند تھے۔ گھر میں یہ چیزیں مثلاً کھجور۔ ناریل۔ بادام اور کشمش موجود رکھتے تھے۔ خود بھی کھاتے تھے اور ہمسفروں کو بھی کھلاتے تھے۔ پانی کو سرمایہ حیات کا درجہ دیتے تھے۔ پانی یا دودھ رک رک کر پیتے تھے۔ اور وضو کے استعمال میں بہت کم پانی لاتے تھے۔

طب کے ساتھ بھی دلچسپی تھی۔ حضرت مولوی نور الدین صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ خلیفہ اول کی (طب کے متعلق) کتابوں کا مطالعہ کر کے تھوڑا تھوڑا علاج بھی کرتے تھے۔ دوائی بنا کر اپنے استعمال میں بھی لاتے تھے اور ضرورت مندوں کو بھی دیتے تھے۔

حلال خوری کے دو چھوٹے واقعات !!

۱) مکرم عبدالرحمن صاحب نایک (پہاڑی) ساکنہ آسنور نے مجھ سے بیان کیا ایک دفعہ ہم اخروٹ اتار رہے تھے اتنے میں خواجہ صاحب مرحوم شو بیان یا سرینگر سے واپس آرہے تھے اور ان کا راستہ اخروٹ کے درختوں سے گذرتا تھا۔ جب یہاں قریب پہنچے تو ہم سے مخاطب ہوئے کہ کس قدر اخروٹ اٹھالوں ہم نے کہا۔ ”حضرت جتنے بھی آپ چاہیں اٹھالیں لیکن آپ نے فرمایا کہ سب شرکاء کو بلاؤ۔ وہ سب پاس ہی کھڑے تھے سبوں نے بہ یک زبان ہو کر کہا کہ ہم خوشی سے آپ کو اخروٹ دیتے ہیں۔ تب آپ نے چند دانے اٹھائے اور جزاکم اللہ کہہ کر چلے گئے۔

(۲) چچا محمد عبداللہ صاحب میر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا ایک دفعہ بھائی خواجہ صاحب ریخ کو اثر سے باہر کہیں ڈیوٹی پر چلے گئے۔ میں ایک پانی کے نالہ کی جانب سیر کے لئے گیا۔ اس نالہ میں مچھلیاں تھیں۔ میں نے پانی میں اتر کر ایک دو کلو مچھلیاں پکڑ لیں اور ریخ کو اثر پر لیکر صاف کر کے پکائیں۔ اس روز ہمارے ہاں ایک مہمان بھی آیا تھا۔ کھانا کھانے سے قبل ہی خواجہ ریخ صاحب مرحوم کو مچھلیوں کا پتہ چلا اور مجھ سے پوچھا کہ یہ مچھلیاں کہاں سے لائے ہو میں نے جواب دیا فلاں نالہ سے پکڑ لایا ہوں۔ آپ نے فوراً کہا کہ وہاں ساتھ ہی ایک سرکاری تروٹھ (مچھلیوں کا فارم) بھی ہے۔ ہو سکتا ہے کہ پانی کے بہاؤ سے اس سرکاری نالے کی مچھلیاں اس نالے میں آئی ہو جہاں تم لائے ہو۔ جو سرکاری ملکیت ہے۔ میں نے اور مہمان نے خواجہ صاحب مرحوم کو بہت کچھ کہا کہ ایسا نہیں ہوگا۔ لیکن آپ نہیں مانے اور کہا۔۔۔ محمد عبداللہ میرے لئے کوئی دوسرا سالن پکا لینا اور آپ نے وہ مچھلیاں بالکل نہ کھائیں۔

طرز بود و باش!!! غالباً حضرت خواجہ صاحب مرحوم نے اپنا مکان ۱۹۳۳ء کے وسط میں بذریعہ ماموں عبدالرزاق صاحب ڈار بمقام آسنور بنوایا تھا۔ کیونکہ اس سے پہلے ایک عرصہ تک اپنے سسرال میں ہی رہے۔ مکان کے لئے خاکسار کے نانا خواجہ غلام رسول ڈار (لسی ڈار) نے آپ کو ایک پرسکون اور خلوت کی جگہ دیدی تھی۔ حضرت والد صاحب مرحوم نے اپنے مناسب حال عہدہ کے کوئی کوٹھی یا بنگلہ تعمیر نہیں کروایا بلکہ ایک سادہ اینٹوں کا مکان جسکے تین اطراف میں دالان ہیں لیکن اس سادہ سے مکان کو اباجی جیسے باخدا مکین کا شرف حاصل رہا بلکہ آپ کے رفقاء دوست احباب اور بزرگان دین نے بھی اس مکان کو ٹھہرنے کا شرف بخشا ہے۔ جیسے حضرت مفتی محمد صادق صاحب، حضرت مولوی عبدالرحیم صاحب نیر، حضرت میر محمد اسحاق صاحب، حضرت مولوی حضرت سرور شاہ صاحب اور حضرت اسد اللہ صاحب خان وغیرہ۔ ان بزرگوں کا تقویٰ اور طہارت، خدمات دین اور علمی اور تبلیغی کمالات مشہور عالم ہیں۔ بلکہ جماعت احمدیہ کا بہت بڑا سرمایہ ہے۔ ان بزرگوں کی جو خط و کتابت حضرت والد صاحب مرحوم سے رہی ہے۔ انشاء اللہ قارئین اس کتاب کے آخر میں پڑھ سکیں گے۔ اللہ ان کو جنت میں اعلیٰ مقام عطا فرمائے آمین ”کم خور کم خواب و کم گفتار باش“ ان تینوں باتوں

کا خاکسار (حضرت والد صاحب کے متعلق) یعنی شاہد ہے۔ آپ زمین پر یا چارپائی پر بہت کم سوتے تھے۔ اور بہت کم باتیں کرتے تھے اور بہت کم کھانا کھاتے تھے۔ پھلوں اور پھولوں کے بہت شوقین تھے۔ گھر کے صحن میں پھولوں کی کیاریاں بنوائی تھیں اور پھلوں کے درخت مثلاً سیب، بادام، اخروٹ، آلو بخارا، انگور اور ناشپاتی وغیرہ گھر کے پہلو میں لگوائے تھے۔ سبز گھاس پر بیٹھنا بہت پسند کرتے تھے۔ مکان کے پچھواڑے میں چار دیواری کے اندر ایک آب جو چلتی تھی۔ جس کا صاف شفاف پانی اونچائی سے گر کر غسلخانہ میں آتا تھا۔ گھر کے نزدیک ایک گاؤں خانہ بھی بنوایا تھا۔ اور گھر میں ہمیشہ دودھ کی بہتا رہتی تھی۔

شہد آپ کا من بھاتا کھا جاتا تھا۔ جس میں اللہ نے شفاء رکھی ہے۔ مکان کی دیواروں میں شہد کی لکھیوں کے چھتے (گھر) رکھے تھے۔ جن سے ہمیشہ شہد حاصل ہوتا تھا۔ اور آپ کے سب بچے شہد کے دلدادہ ہیں۔ اسوہ حسنہ کو عملی طور پر اپنانے اور آنحضرت صلعم سے محبت اور فدائیت کا یہ عالم تھا کہ چھوٹی چھوٹی باتیں جو آنحضرت صلعم سے واسطہ ہیں ان پر عمل کرنا اپنا جزو ایمان سمجھتے تھے۔ بھائی خواجہ محمد عبداللہ صاحب میر نے مجھ سے بیان کیا۔ کہ ایک دفعہ قادیان سے مہمان آئے تھے۔ ان کو سیر و تفریح کرانے کے لئے نزدیکی صحت افزاء مقام ”آبشار اہر بل“ لے گئے۔ بعد طعام مہمان کرام عمدہ صابون سے ہاتھ صاف کر رہے تھے۔ اور اباجی پاک مٹی سے ہاتھ صاف کرھتے نظر آئے۔ مہمانوں نے آپ سے کہا۔ آپ صابن لیجئے مٹی کیوں استعمال کر رہے ہیں حضرت والد صاحب مرحوم نے جواب دیا۔ کہ میں اس تھرڈ کلاس چیز (صابون) سے صفائی نہیں کرتا میں وہ اعلیٰ قسم کی چیز (مٹی) استعمال کر رہا ہوں جو بادشاہوں کے بادشاہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے استعمال کی ہے۔ خاکسار نے بھی اکثر آپکو مٹی سے ہاتھ صاف کرتے دیکھا ہے۔ اسی طرح آپ گھر میں اعلیٰ اناج ہونے کے باوجود ایک ادنیٰ قسم کا اناج (جس کو کشمیری میں تر مباء یعنی گرم جیسا لداخ میں کھائی جاتی ہے) کی روٹی بنوا کر بعض اوقات کھاتے تھے تاکہ اللہ تعالیٰ کی ہر نعمت کا شکر ادا ہو۔

طرز کلام

حضرت والد صاحب مرحومؒ عاجزی انکساری کے پیکر تھے۔ طرز کلام میں سادگی اور صاف گوئی تھی۔ خوبیوں کے جامع لوگ خدا کو پانے کیلئے پہلے خود خاک میں ملتے ہیں منادے اپنی ہستی کو اگر کچھ مرتبہ چاہیے

کہ دانہ خاک میں ملکر گل و گلزار ہوتا ہے

آپ ہمیشہ مقصد کی بات کیا کرتے تھے۔ بلا ضرورت آپ سے کوئی بات بھی نہیں کر سکتا تھا جب بھی بولتے تھے حلیم طبعی، اور سنجیدگی سے کلام کرتے تھے۔ گھر میں داخل ہوتے وقت یا گھر سے جاتے وقت اونچی آواز میں اسلام علیکم کہنے کی عادت تھی اور سبوں کو ایسا کرنے کی نصیحت کرتے تھے۔ عام لوگوں نے مجھ سے بیان کیا کہ حضرت خواجہ صاحب مرحوم ہمیشہ سلام کرنے میں پہل کرتے تھے۔ جیسے آنحضرت صلعم نے فرمایا ”سلام کو رواج دو جس سے تمہارے دلوں کی کدورت دور ہو سکے“ کلام میں تصنع، تکلف اور تکبر کی کوئی علامت نہ تھی۔ بد زبان لوگوں کو شرافت سے بولنے کی نصیحت فرماتے تھے۔ ہمیشہ سچ اور انصاف کی بات دو ٹوک کہتے تھے۔ خیر الامور اوسئھا کے مطابق آپ کے حرکات و سکنات میں ہمیشہ ایک مؤمنانہ وقار اور ٹھہراؤ معلوم ہوتا تھا۔ آپ کی زبان ہر وقت درود و اذکار سے تر رہتی تھی۔

حضرت مسیح موعودؑ سے جب کوئی شخص دریافت کرتا تھا۔ کہ کوئی وظیفہ بتایا جائے تو آپ نصیحت فرماتے ”کہ کثرت سے استغفار اور درود شریف پڑھا کرو۔ یہی وظیفہ ہے اور اس میں بڑی برکت ہے۔“

جیسے سیرت المہدی حصہ چہارم (غیر مطبوعہ) مرتب فرمودہ حضرت بشیر احمد صاحب ایم اے روایت 1227 میں ذکر آتا ہے۔۔۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم

میر عبد الرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہ مولہ کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا۔ مجھ سے میرے والد حبیب اللہ صاحب مرحوم و مغفور ساکن گاگرن کشمیر نے ایک دفعہ حضرت اقدس مسیح موعود علیہ السلام سے کسی نے دریافت کیا۔ حضور! درود شریف کس قدر پڑھنا چاہئے؟ حضورؑ نے فرمایا: ”تب تک پڑھنا چاہئے کہ زبان تر ہو جائے۔“

درد و شریف کی عظمت اور دعاؤں کی برکت سے مشکلات کا حل !!!

مکرم منشی محی الدین صاحب محرر مال ساکنہ بارہمولہ نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ۔۔۔ ”ایک دفعہ دوران ملازمت راقم (محی الدین) شامت اعمال کی وجہ ملازمت سے معطل کیا گیا۔ مشاہرہ بند ہونے کی وجہ گھر میں تنگ دستی اور مشکلات پیدا ہوئے۔ کہتے ہیں ”ملا کی دوڑ مسجد تک“ راقم خواجہ ربینگر صاحب کے پاس گیا اور اپنی معطلی اور تنگ دستی کا حال سنایا۔ اور ساتھ ہی درخواست دعا کی۔ خواجہ صاحب مرحوم نے میری کچھ مالی مدد فرمائی اور ساتھ ہی فرمایا ”درد و شریف کثرت سے پڑھا کرو خصوصاً مغرب اور عشاء کی نمازوں کے بعد اور ہر نماز کے بعد اللہ تعالیٰ کے حضور یہ دعا مانگا کرو۔

اللہم انی اعوذ بک من الهم والحزن واعوذ بک من العجز
والکسل واعوذ بک من البخل والجبن وغلبة الذین وقہر
الرجال۔“

راقم (محی الدین) نے خواجہ ربینگر صاحب کی نصیحت پر عمل کیا۔ چند ہی روز کے بعد بفضلہ تعالیٰ (راقم) کی ملازمت بحال ہوئی۔ جو درد و شریف کی عظمت اور حضرت خواجہ صاحب کی دعاؤں کی برکت کا کرشمہ تھا اور میری مشکل آسان ہوئی۔ راقم کا ایمان ہے کہ آپ کی دعائیں ضرور قبول ہوتی تھیں۔

مرغوب سواری !!

اُس زمانے میں کشمیر میں عام سفر پیدل اور دور کا سفر گھوڑے پر کیا جاتا تھا۔ اور فوری ڈاک رسائی کا ذریعہ بھی گھوڑا ہی تھا۔ جب حضرت مصلح موعودؑ اہل و عیال و چند بزرگاں ہمارے گاؤں موضع آسنور میں غالباً ایک مہینے تک تشریف فرما تھے۔ مرکز قادیان اور دیگر جماعتوں کے ساتھ برابر رابطہ قائم تھا۔ یعنی روزانہ ڈاک بذریعہ گھوڑا سوار سرینگر سے آتی اور واپس بھجوائی جاتی تھی۔

آسنور سے سرینگر کی مصافت تقریباً ۶۰ کلومیٹر ہے۔

پھر زمانے کی ترقی کے ساتھ ساتھ شاہ راہوں پر موٹریں اور بسیں چلنے لگیں۔ چونکہ حضرت والد صاحب مرحوم کی ڈیوٹی محکمہ جنگلات میں تھی۔ اس لئے کوہ و بیابانوں میں گھوڑا ہی کام آتا رہا۔ آپ گھوڑے کی سواری کے بہت شوقین بلکہ اچھے شاہ سوار تھے۔ گھر میں بھی گھوڑے پالنے کا شوق تھا۔ اور دور سفر پر جانے کے لئے کرایہ پر بھی لیتے تھے۔ ہماری بستی کے دو گھوڑے والے مکرم منصور احمد ٹھوکر مرحوم ساکنہ کوریل اور مکرم عبدالحق و گے ساکنہ آسنور نے مجھ سے بیان کیا کہ ہم جب بھی خواجہ ربینجر صاحب کے ساتھ گھوڑا لے کر (بطور سائیس) سفر پر جاتے تھے۔ حسب معمول کچھ سفر طے کر کے آپ گھوڑے سے اتر جاتے تھے اور ہمیں گھوڑے پر سوار ہونے کے لئے کہتے تھے۔ ہماری کیا بساط تھی کہ ہم آپ کے ہوتے ہوئے آپ کے گھوڑے پر سوار ہو جاتے اور آپ پیدل چلتے۔ لیکن حضرت ربینجر صاحب مرحوم پھر بھی گھوڑے کو آرام دینے کے لئے کچھ سفر پیدل طے کرتے تھے۔ دوران سفر آپ کے پاس جو بھی چیزیں از قسم کڑ، خشک نان یا کھجور وغیرہ ہوتے تھے۔ جس قدر خود کھاتے اسی مقدار سے ہمیں بھی دیتے تھے۔ خاکسار نے بارہا یہ دیکھا کہ جب ابا جی گھوڑے پر گھر پہنچ جاتے تھے تو نیچے اتر کر گھوڑے کے جسم پر ہاتھ پھیر کر تھپتھپاتے اور شفقت کا اظہار کرتے تھے اور ہمیں فوراً گھوڑے کو دانہ اور چارہ دینے کے لئے کہتے تھے۔ یہ کہ ان کے دل میں جانوروں کے لئے بھی جذبہ ہمدردی تھا۔ دور کا سفر آپ نے بذریعہ بس ٹرین اور موٹر بھی کیا ہے۔ اللہ تعالیٰ نے انسان کے لئے جو سواریاں پیدا کیں ہیں آپ نے ان سب میں سے جو بھی میسر آئیں استفادہ کیا اور اس کی دی ہوئی نعمتوں کا شکر گزار رہے۔

احمدیت کی برکات و مصروفیات

مکرم محمد اسد اللہ قریشی صاحب ”تاریخ احمدیت جموں و کشمیر“ میں لکھتے ہیں۔

”احمدیت کا آغاز ریاست میں جن شدید اور مخالف حالات کے ساتھ ہوا ان کے پیش نظر کوئی نہیں کہہ سکتا تھا کہ احمدیت کا پودا کسی جگہ بھی جم سکے گا۔ مگر دیکھتے دیکھتے احمدیت کا پودا نہ

صرف ریاست (جموں کشمیر) میں جم گیا۔ بلکہ جم کر اتنا وسیع اور ہمہ گیر درخت بن گیا کہ آج ریاست کے اطراف و اکناف میں قریباً ہر اہم مقام اور ہر قبیلہ میں اس کی شاخیں پھیلی ہوئی نظر آرہی ہیں۔ اور اہل بصیرت اور نیک فطرت لوگ اس درخت کے شیریں پھلوں سے اس طرح لطف اندوز ہو رہے ہیں جس طرح اس سے قبل اسلام کے درخت کے شیریں پھلوں سے لطف اندوز ہوتے رہے۔ (تاریخ احمدیت جموں و کشمیر ص 14-15)

حضرت میاں حبیب اللہ صاحبؒ اور آپ کے فرزند خواجہ عبدالرحمن صاحب میرٹھ مرحوم اس درخت (احمدیت) کے شیریں پھل سے لطف اندوز ہو کر ایسی روحانی دنیا میں داخل ہوئے جس روحانی دنیا کا ساتھ آپ کو عملی طور تا ابد مشعل راہ ثابت ہو کر اعلیٰ روحانی ترقی کا باعث ہوا۔ اور یہ بات بفضلہ تعالیٰ اظہر من الشمس ہے کہ جماعت احمدیہ کے زیر سایہ سعادت مند روحیں ہر قوم، ہر ملک اور ہر طبقہ فکر سے آکر ”غلامان مسیح“ کا تاج سر پر رکھ کر فخر محسوس کرتے ہیں۔ اللہ بھی غلامان احمد کو نہ صرف دینی دولت سے نوازتا ہے۔ بلکہ دنیاوی نعمتوں سے بھی وافر حصہ عطا کرتا ہے۔ ذالک فضل اللہ یوتیہ من یشاء۔

قادیان کی سرزمین سے محبت و عقیدت۔

”یہ بستی جن کے ذروں نے مسیحا کے قدم چومے۔ اسی گمنام بستی میں مسیح آخر الزمان نے مسیح و مہدی ہونے کا دعویٰ کیا۔ پہلے چند افراد نے آپ کے دعویٰ کو تسلیم کیا۔ پھر آہستہ آہستہ الہی تقدیر کے مطابق اور مسیح موعودؑ کے الہام کے مطابق یعنی یا تیک من کل فی عمیق ایک دنیا آپ کے پاس اٹھ آئی۔ آپ کی تائید کی۔

آپ اپنے منظوم کلام میں فرماتے ہیں:

”وہ خدا میرا جو ہے جو ہر شناس اک جہاں کو لا رہا ہے میرے پاس“

جب براہین احمدیہ چھپی تو اس کی بڑی دھوم ملک میں مچی اور مولوی غلام دستگیر

قصوری نے متاثر ہو کر حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی تائید میں کہا تھا۔۔۔۔۔

سیرت المہدی حصہ چہارم (غیر مطبوعہ) مرتب فرمودہ حضرت بشیر احمد صاحب ایم۔ اے میں ذکر آتا ہے۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم

۱۲۴۱: میر عبد الرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہ مولہ کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ مجھ سے میاں محمد دین صاحب (غیر احمدی) مالک مسلم کلاتھ ہاؤس لاہور نے کہ جب براہین احمدیہ چھپی تو اس کی بڑی دھوم ملک میں مچی۔ علماء نے بھی خوش منائی۔ لیکن مولوی غلام دستگیر قصوری نے جب براہین پڑھی تو اسی وقت ہم کو کہا کہ یہ شخص (مسح موعود) آئندہ کوئی بڑا دعویٰ کریگا۔ ہم نے ان کی بات پر التفات نہ کیا۔ لیکن جب ازالہ اوہام چھپی اور اس میں حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے دعویٰ مسیحیت کیا تو مولوی غلام دستگیر صاحب نے مجھے دور ہی سے ہنس کر کہا۔ اب سناؤ کیا ہم نے پہلے ہی نہیں کہا تھا کہ یہ شخص بڑا دعویٰ کریگا۔“

بفضلہ تعالیٰ حضرت والد صاحب مرحوم نے پانچ سال کی عمر میں ہی اس مقدس سرزمین قادیان میں قدم رکھے جہاں سے آپ کی زندگی کا آغاز ہوا۔ اور ماشاء اللہ اپنے انجام کو بھی بخیر و خوبی پہنچے۔ بچپن ہی سے اس پاک بستی میں اپنے روحانی باپ حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی پاک صحبت اور محبت حاصل رہی۔ پھر سونے پر سہاگہ ان ہی کم سنی کے ایام میں حضرت ام المؤمنین کی شفقت بھری نگاہیں آپ پر پڑتی تھیں جن مومنانہ نگاہوں نے آپ کی تقدیر بدل ڈالی۔

آپ میں تقویٰ اور پرہیزگاری کا مادہ پیدا ہوا۔ حضرت اماں جانؑ عنہا حضرت والد صاحب مرحوم کے نام اپنے ایک خط میں لکھواتی ہیں۔۔۔

”آپ تو صحابی ہیں۔ اور خدمت حضرت مسیح موعود علیہ السلام کا موقع پا چکے ہیں۔
آپ کیوں کہتے ہیں کہ خدمت کا موقع نہیں ملا۔“
والسلام (دستخط مرزا بشیر احمد)

حضرت والد صاحب کو مسیح پاک علیہ السلام کی اولاد سے راہ و رسم رہی۔ حضرت مرزا
بشیر احمد صاحب ایم اے کیوجہ حضورؐ کے گھر میں آنا جانا رہا۔ صاحبزادہ صاحب کے
ساتھ دوستانہ اور محبانہ تعلق رہا۔ اور سرزمین قادیان میں گھر میں سکول میں پڑوس میں
ایسے بزرگان اساتذہ اور اصحاب احمد کی مجالس میں رسائی رہی۔ اور ان کے زیر سایہ
میں اپنی جھولی کو علم و ادب اور تہذیب و شائستگی سے بھر دیا۔ اور ان کی روحانیت کا درس
حاصل کیا۔ جو بزرگان اپنی دینی خدمات کی وجہ دنیائے احمدیت کا قیمتی سرمایہ ہیں۔
حضرت خواجہ صاحب نے قادیان میں جو گنج بے بہا حاصل کیا اس سرمایہ نے زندگی بھر
آپ کا ساتھ دیا۔ جس سرمایہ کا بیش بہا حصہ خاندان حضرت مسیح موعود علیہ السلام سے
والہانہ محبت و عقیدت کا ملا جو تادم مرگ قائم رہا۔ محکمہ جنگلات میں آپ جہاں بھی گئے۔
جس پیشہ میں ڈیوٹی پر مامور رہے۔ قادیان دارالامان کا خیال ہمیشہ بے چین کرتا رہا۔
۔۔۔ یعنی

یا تو ہم پھرتے تھے ان میں یا ہوا یہ انقلاب۔ پھرتے ہیں آنکھوں کے آگے کوچہ ہائے قادیان
حضرت والد صاحب مرحوم نے اپنے بچوں کو حصول تعلیم کے لئے قادیان بھیجا تھا۔ یعنی
بچوں کو والدین کے پیار کے بدلے قادیان کی محبت و عقیدت سے مانوس کرانا چاہا۔ اس طرح
اپنی اولاد کے لئے یہ سعادت مندی سمجھتے رہے۔

قادیان میں حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ کے گھر میں ایک عجیب واقعہ:
خواجہ محمد عبد اللہ صاحب میر نے مجھ سے بیان کیا کہ دوران تعلیم جن دنوں ہم دونوں بھائی

حضرت مولوی شیر علی صاحب مرحوم کے گھر میں رہائش پزیر تھے۔ گھر میں میری ڈیوٹی علی الصبح بھینس کو چارہ ڈالنے کی تھی غالباً جلسہ سالانہ قریب تھا ایک روز میں حسب معمول بھینس کو چارہ ڈالنے کے لئے اندھیرے میں چارہ کوٹھری کے پاس پہنچا تو میں یہ دیکھ کر بہت حیران اور گھبرا سا گیا جب خلاف معمول اس کوٹھری میں لالٹین جلتے ہوئے دیکھا۔ حیرت کے عالم میں رک گیا کہ یہ کیا ماجرا ہے۔ آخر جرأت کر کے کوٹھری (اندھیری) کے اندر جھانکا تو کیا دیکھا۔۔۔ کہ میرے پیارے اباجی مرحوم (خواجہ عبدالرحمن صاحب میر) اس کوٹھری کے ایک گوشہ میں قبلہ رخ ہو کر اپنے محبوب حقیقی کے دربار سے فارغ ہو کر بیٹھے ہیں۔ اس حال میں دیکھ کر اور فوراً جذبات میں آکر میں نے زور سے السلام علیکم ورحمۃ اللہ کہا اور اپنے والد بزرگوار سے بغلگیر ہو کر پوچھا کہ آپ اس ویران کوٹھری میں کیسے آئے۔ تو آپ نے جواباً فرمایا۔ بیٹا میں رات کو دیر سے یہاں پہنچا۔ لالٹین میرے ساتھ تھی۔ میں نے مناسب نہیں سمجھا کہ آپ کو اور اہل خانہ کو میری وجہ سے بے وقت تکلیف پہنچے۔ اور میں نے اس کوٹھری میں رات گزار لی۔ جب میں نے اباجی (حضرت مولوی شیر علی صاحب) کے گھر میں اس واقعہ کی اطلاع دی تو سب لوگ اظہار تعجب کرنے لگے۔ لیکن حضرت والد صاحبؒ اپنے کئے پر مطمئن تھے۔ یعنی

تلخی کی زندگی کو کرو صدق سے قبول ☆ تاکہ تم پر ہوں لانکہ عرش کا نزول

۱۹۴۷ء میں جب ملک کا ہٹوارہ ہونے والا تھا حالات مخدوش ہوئے تھے۔ قادیان اور ملحقہ قادیان کے سب مسلمانوں کو حضرت مصلح موعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی سرپرستی میں لاہور اور باقی جگہوں پر منتقلی کا کام شروع ہو چکا تھا۔ قادیان کے اس پر آشوب زمانے میں مرکز کی اجازت کے بغیر کوئی احمدی جان بچانے کے لئے ہجرت نہیں کر سکتا تھا۔ بلکہ ہر احمدی دیوانہ وار مرکز کی حفاظت کے لئے اپنی خدمات پیش کر رہا ہوتا تھا۔ اور یہاں (آسنور کشمیر میں) ہم لوگ خصوصاً والدہ صاحبہ مرحومہ اپنے تین بچوں عبدالمنان میر۔ خواجہ محمد عبداللہ میر اور لعلۃ الرحیم کے بارے میں مضطرب و پریشان تھے یاد رہے یہ لوگ ۱۹۴۷ء کے پر آشوب زمانے میں قادیان میں ہی مقیم تھے۔ غرض ماں کی مامتا اپنے لخت جگر کی یاد میں خون کے آنسوں بہاتی رہی۔ نہ معلوم ان کا کیا حال ہوگا۔ ادھر حضرت والد صاحبؒ مرحوم کو اللہ پر توکل قادیان سے عقیدت

اور بیٹوں کو اس نازک گھڑی میں سچے ایمان اور بہادری کا درس اس خط کے ذریعہ دیتے ہیں:

”اللہ تعالیٰ تم کو خدمت دین اور حفاظت مرکز کی خاص توفیق دے۔ دیکھو پیارے بچو۔۔۔۔۔ بھگوڑے نہ بننا بلکہ بہادروں کی طرح مرکز کی حفاظت میں لگے رہو۔ اور مرکز قادیان کو ہرگز نہ چھوڑنا خواہ جان دینی پڑے۔ یہی تو وقت ہے بہادری دکھانے اور ایمان کے مظاہرے کا۔ مومن بنو منافق نہیں اور پیٹھے ہرگز ہرگز دشمن کو نہ دکھانا۔ فاللہ خیر حافظ مرکز کے چند بے باق اعدہ دو۔ الحمد للہ ہمارا گذرہ باوقار اللہ تعالیٰ چلا رہا ہے۔ اگر عزیزہ لمتہ الرحیم سلمہ اللہ تعالیٰ کو افسران احمدیت اور حضرت صاحب کشمیر آنے کی اجازت دیں تو آجائے ورنہ ہرگز ہرگز نہ آئے۔ وہاں ہی خدمت دین کرے اور دین سیکھے۔ ہماری طرف سے ہزار شاباش تم دونوں سے ہم خوش ہیں۔ وہاں مرکز کی حفاظت کرو۔ جزاکم اللہ احسن الجزاء۔ فاللہ خیر حافظ و ہوا رحم الراحمین۔

بھائی کی سڑک حادثہ میں موت اور حضرت خواجہ صاحب کا رد عمل:

بعض اخلاق انسان میں فطرتاً ہوتے ہیں۔ لیکن وہ اخلاق فاضلہ اس وقت تک نہیں ہو سکتے۔ جب تک ان کے عمل کا وقت نہ آیا ہو۔ اباجی کے مزاج میں انکساری اور صلہ رحمی بدیوں سے بیزاری اور انیکوں میں پیش قدمی کا جذبہ ہی نہیں تھا بلکہ جب بھی آپ کو موقع ملا آپ نے ایسے شخص کو بھی لا تشریب علیکم الیوم کے جذبے کے تحت معاف بھی کر دیا۔ جو آپ کے چنگل میں پھنسا ہوا تھا۔ حضرت والد صاحب کا چھوٹا بھائی عبدالقادر ”جرمن وار“ میں شعبہ حیوانات میں میڈیکل اسٹنٹ تھا جہاں اس کو اچھی کارکردگی کے عوض دو تمغے ملے تھے۔ جو خاکسار کے پاس محفوظ ہیں۔ پھر عبدالقادر صاحب ریاست کے محکمہ پولیس میں ملازمت کرتے تھے۔ ملازمت کے دوران سڑک کے حادثہ کے شکار ہو کر فوت ہو گئے۔ حادثہ کرنے والوں کو پولیس نے گرفتار کر لیا اور کیس رجسٹر ہوا۔

اس واقعہ کی روئیداد ایک پیر سالہ بزرگ مکرم فضل الرحمن صاحب خان ساکنہ یاری پورہ نے مجھے یوں سنائی۔ ”حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میر اور اس کے بھائی عبدالقادر میر کو اس

طرح جانتا ہوں کہ میں ان کے گھر موضع گاگرن شویان اکثر جاتا رہتا تھا۔ اور میرے والد صاحب (جو صحابی تھے) کو خواجہ رنجبر صاحب سے بہت محبت تھی۔ جب عبدالقادر صاحب کی وفات سرینگر میں سڑک حادثہ میں ہوئی تو اس کے پاداش میں حادثہ کرنے والے ڈرائیور کے رشتہ داروں نے ایک بھاری رقم خواجہ عبدالرحمن صاحب میر کو پیش کی لیکن انہوں نے رقم لینے سے انکار کیا اور کہا۔۔۔۔۔ ”میرے بھائی کی موت حادثہ میں ہی مقدر تھی۔ میں اپنے آپ کو کیوں اللہ تعالیٰ کے حضور مجرم بنالوں۔ خان صاحب نے بیان کیا کہ اس واقعہ کا اثر فریق ثانی پر بہت اچھا پڑا جب ان کو معلوم ہوا کہ حضرت خواجہ صاحب ایک احمدی ہیں۔

ایک مخلص محب

بعض روایات کے مطابق حضرت خواجہ صاحب مرحوم کچھ مدت حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے گھر میں ہی رہے۔ جن دنوں حضرت صاحبزادہ مرزا بشیر احمد ایم اے حضرت خواجہ صاحب کے کلاس فیلو اور ہم کتب تھے۔ اور حضرت اماں جان صاحبہ گاجی کو کچھ نقدی بطور جیب خرچ دیتی تھیں۔

جیسے سیرت المہدی حصہ سوئم روایت نمبر ۸۳ میں حضرت والد صاحب خود فرماتے ہیں:

”کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے خانگی امور خدا کے فضل سے میرے دل میں ”کا نقش فی الحجر ہیں۔ اس بات سے بھی ثابت ہوتا ہے کہ آپ حضور کے گھر میں رہے ہیں۔ اور روایت نمبر ۸۴ میں حضرت خواجہ صاحب فرماتے ہیں۔

”حضرت ام المؤمنین سلمیٰ اللہ تعالیٰ ماہوار کچھ نقدی بھی عطا فرماتی تھیں۔ مگر میرا اصل معاوضہ حضور کی خوشنودی اور دعا تھی۔

۳۴۰: بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب متوطن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ خط بیان کیا کہ میں حضرت مسیح موعود کی زندگی میں قادیان کے سکول میں پڑھتا تھا۔ تو اس زمانے میں جو لوگ حضور کے لئے کوئی پھل وغیرہ بطور ہدیہ لاتے تھے تو بعض اوقات میرے ہاتھ اندرون خانہ حضور کو بھیجاتے تھے۔

عموماً حضورؐ کچھ پھل بندہ کو بھی عطا فرما دیتے تھے۔ اور بعض دفعہ تحریر کے کام میں اس قدر استغراق ہوتا تھا کہ بغیر میری طرف نظر اٹھانے کے فرما دیتے تھے کہ رکھ دو میں رکھ کر چلا تا تھا۔

(سیرت المہدی جلد دوم ص ۲۸)

بھائی عبدالغفار صاحب ڈار نے تحریراً مجھ سے بیان کیا کہ:

”روایت یہ واقعہ سننے میں آیا ہے کہ جب انصار اللہ کی تنظیم پہلی دفعہ عمل میں آئی تھی تو اس وقت چالیس سال کی عمر کی حد تو نہیں تھی۔ تاہم ممبران انصار اللہ میں باہمی اخوت کے رشتے قائم کئے گئے تھے۔ اور انہیں ایک دوسرے کا ”انصار بھائی“ بننے کا عہد کرنا پڑتا تھا۔ چنانچہ اس تعلق حضرت صاحب (حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میر) کا حضرت سید زین العابدین ولی اللہ شاہ صاحب کے ساتھ بھائی چارے کا بندھن ہوتا تھا۔ چنانچہ اکثر بزرگان دین سے سنا ہے کہ خواجہ صاحب اور سید صاحب کا باہمی رشتہ اخوت مرتے دم تک قائم رہا اور اس عہد کو خوب نبھایا۔“

پیارے آقا حضرت مرزا طاہر احمد صاحب خلیفۃ المسیح الرابعیہ اللہ تعالیٰ بنصرہ العزیز نے پانچ بنیادی اخلاق کا تعین اس طرح کیا سچ کی عادت۔ نرم اور پاک زبان کا استعمال۔ وسعت حوصلہ۔ غریب کی ہمدردی۔ مضبوط عزم و ہمت۔ ان پانچ اخلاقیات کی کسوٹی پر حضرت خواجہ صاحب کی شخصیت کی پرکھ اور جائزہ قارئین کے لئے پیش خدمت ہے۔

سچ کی عادت

حضرت بانی سلسلہ عالیہ احمدیہ سچائی کے بارہ میں کشتی نوح میں فرماتے ہیں۔۔۔۔۔

”ہر ایک جو سچ در سچ طبیعت رکھتا ہے۔ اور خدا کے ساتھ صاف نہیں وہ اس برکت کو ہرگز نہیں پاسکتا جو صاف دلوں کو ملتی ہے۔ کیا ہی خوش قسمت وہ لوگ ہیں جو اپنے دلوں کو صاف کرتے ہیں۔ اور اپنے دلوں کو ہر ایک آلودگی سے پاک کر لیتے ہیں۔ اور اپنے خدا سے وفاداری کا عہد باندھ لیتے ہیں۔ وہ ہرگز ضائع نہیں کئے جائیں گے۔ ممکن نہیں کہ خدا اس کو رسوا کرے۔ کیوں کہ وہ خدا کے ہیں اور خدا اُن کا۔ وہ ہر ایک بلا کے وقت بچائے جائیں گے۔“

(کشتی نوح)

حضرت والد صاحب مرحوم نے کبھی جھوٹ کے بُت کو اپنے دل میں جگہ نہیں دی۔ کیوں کہ آپ کو وحدہ لا شریک کی ذات پر کامل بھروسہ تھا۔ اور سچی بات ہمیشہ برملا کہہ دیتے تھے۔ خواہ کتنا ہی مالی و جانی نقصان کا احتمال درپیش ہوتا۔

سیچ و دیانت کے دو واقعات (حمل رینج ترائل کشمیر میں)

چچا محمد عبداللہ صاحب میر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ خواجہ صاحب کی ڈیوٹی 1937ء سے 1940ء تک بارہمولہ کشمیر ”حمل رینج“ میں تھی۔ سب آفسران و ماتحت اور عوام الناس آپ کے زہد و تقویٰ اور دیانت داری کی وجہ آپ کی بہت عزت کرتے تھے۔ اور آپ کی سچائی کے سامنے خوف زدہ تھے۔ صرف ایک راشی اور متعصب ڈی۔ ایف۔ او۔ پنڈت رگوناتھ عداوت پر تھلا ہوا تھا۔ ایک دفعہ کمپارٹمنٹ 43 میں فرم کی پسماندہ لکڑی اور برفباری سے افتادہ درختان حضرت خواجہ صاحب نے یہ سمجھ کر ملاحظہ لوگوں کو بغیر قیمت کے اٹھانے کی اجازت دی کہ نزدیک لوگوں کو حق جنگل ہوتا ہے۔ لوگوں نے بے تحاشہ لکڑی جمع کی۔ متذکرہ متعصب ڈی۔ ایف۔ او کو اس بات کا پتہ چلا اور کمپارٹمنٹ 43 کا دورہ کیا۔ اور اس لکڑی کو موس (ضبطی کی مہر) لگا کر اپنی تحویل میں لے لیا اور رینجر متعلقہ (ابا جی) سے جواب طلبی کی کہ آپ نے کس حکم سے لوگوں کو لکڑی اٹھانے کی اجازت دی۔ ڈی۔ ایف۔ او کی اس کارروائی پر خواجہ صاحب مرحوم نے ماتحت ملازموں اور چچا محمد عبداللہ صاحب میر سے مشورہ پوچھا کہ ڈی۔ ایف۔ او کو کیا جواب لکھوں۔ سمجھوں نے ایک زبان ہو کر مشورہ دیا کہ آپ یہ جواب لکھ دیں کہ مجھے حق جنگل کے آرڈر پڑھنے میں غلطی لگی ہے۔ ابا جی نے کہا کہ یہ تو جھوٹ ہے۔ البتہ نزدیکی لوگوں کو حق جنگل حاصل تو ہے لیکن یہ متعصب ڈی۔ ایف۔ او۔ میرے خلاف ہے۔ غرض آپ نے صاف صاف جواب لکھ دیا کہ میں نے لوگوں کو محض اس بناء پر لکڑی اٹھانے کی اجازت دیدی کہ ایک تو یہ غریب ہیں نیز ان کو حق جنگل حاصل ہے اور میرا اس میں کوئی لالچ نہیں ہے۔ اور ساتھ ہی اس ضبط شدہ لکڑی کی پیمائش وغیرہ بھی بھیج دی۔ مذکورہ متعصب ڈی۔ ایف۔ او۔ نے جب خواجہ صاحب کی یہ تحریر پڑھی تو خوش ہوا۔ اس جواب طلبی کے ساتھ چیف

کنسرویٹر فارسٹس جموں و کشمیر کو لکھا کہ ”ایسے ملازم سرکار (خواجہ صاحب) کو فوراً ڈس مس کیا جائے۔“

ادھر یہ بندہ خدا حضرت والد صاحب بالکل مطمئن تھے۔ کہ جھوٹ کے پاؤں نہیں ہوتے اور سچ کا ضرور بول بالا ہوگا اور دُعائیں کرتے رہے کہ چیف کنسرویٹر پر حقیقت حال ظاہر ہو۔ چیف کنسرویٹر نے بڑی مدت تک کیس اپنے پاس رکھا۔ اور معاملہ کی چھان بین کرتا رہا۔ اور بالآخر اس ڈی۔ ایف۔ او۔ (پنڈت رگوناتھ) کو تحریراً حکم بھیج دیا ”چونکہ ریجنر صاحب (خواجہ عبد الرحمن صاحب میر) ایمان دار اور دیانت دار آدمی ہے اور رشوت نہیں کھاتا اور افتادہ لکڑی جو ریجنر صاحب نے لوگوں کو اٹھانے کی اجازت دی ہے آپ کو حکم دیا جاتا ہے کہ برداشت شدہ لکڑی بذریعہ ریجنر صاحب رعایت قیمت پر لوگوں کو ہی دی جائے۔“ آرڈر ملتے ہی ہم سب ملازمین اور عوام الناس بہت خوش ہوئے۔ اور لکڑی زمینداروں کو رعایتی قیمت پر دیدی گئی۔ اور اباجی سے مزید کوئی باز پرس نہیں ہوئی۔ البتہ ڈی۔ ایف۔ او۔ اپنے کئے پر شرمندہ ہوا۔

کبھی نصرت نہیں ملتی درِ مولیٰ سے گندوں کو

کبھی ضائع نہیں کرتا وہ اپنے نیک بندوں کو

دوسرا واقعہ خواجہ فضل الرحمن صاحب خان ساکنہ یاڑی پورہ کشمیر نے بیان کیا۔۔۔

خواجہ عبد الرحمن صاحب میر ریجنر صاحب کو میں بہت قریب سے جانتا ہوں۔ آپ ایک حقیقی مومن تھے آپ خشوع و خضوع سے اور التزام سے نماز ادا کرتے تھے۔ میں نے کئی دفعہ خواجہ صاحب مرحوم کے ساتھ نماز ادا کی ہے۔ وہ بحیثیت امام الصلوٰۃ جلد نماز ادا کرتے تھے۔ لیکن اکیلے میں گھنٹوں اللہ کے حضور عبادت کرتے تھے۔ حضرت ریجنر صاحب کی ڈیوٹی ترال (کشمیر) میں تھی۔ ترال کے ایک بڑے ٹھیکیدار جنگل کو ہمارے والد راجہ حیدر خان صاحب کے ساتھ دوستانہ تعلقات تھے جب انہیں اس بات کا علم ہوا کہ خواجہ ریجنر صاحب احمدی ہیں تو ٹھیکیدار مذکور ایک دفعہ میرے ہوتے ہوئے راجہ حیدر خان صاحب مرحوم کے پاس آیا اور کہنے لگا کہ ہمارے علاقہ میں ایک ریجنر صاحب آئے ہیں۔ وہ احمدی ہیں اور آپ بھی احمدی ہیں۔ دو ہزار روپیہ دیتے ہوئے راجہ حیدر خان صاحب سے کہا کہ آپ ریجنر صاحب کے پاس ایک

سفارش کرائیں تاکہ محکمہ جنگلات میں میرا کام ہو سکے۔ اس پر والد صاحب نے فوراً ٹھیکیدار جنگل کو تنبیہ کی۔ دو ہزار کیا اگر آپ ایک لاکھ بھی رہنبر صاحب کو دیں گے تو وہ غلط سفارش قبول نہیں کریں گے۔ وہ رشوت کا ایک پیسہ بھی نہیں لیتے۔ بلکہ وہ نہایت دیانتدار اور راستباز آدمی ہے۔

راستی کے سامنے کب جھوٹ پھلتا ہے بھلا

قدر کیا پتھر کی لعل بے بہا کے سامنے

ایک اور واقعہ چچا محمد عبداللہ صاحب نے مجھ سے بیان کیا۔۔۔

کہ حضرت میر صاحب کا سائیکس لہ بٹ ساکنہ اسلام آباد (کشمیر) تھا۔ (گھوڑے کے ساتھ والے آدمی کو سائیکس کہا جاتا ہے) اور دوران سفر ساتھ ہوتا تھا۔ اور حضرت خواجہ رہنبر صاحب سے نظریں بچا کر چوری چھپے عام لوگوں سے روپیہ لیتا تھا اور اس جھوٹی کمائی سے اس نے اسلام آباد میں ایک شاندار بنگلہ تعمیر کیا۔ پھر بعض اوقات لوگ (غیر شعوری طور پر) رہنبر صاحب کو کہتے تھے کہ تمہارے سائیکس نے بنگلہ بنایا اور بحیثیت ریجن آفیسر کے تمہارے پاس رہنے کے لئے پورا مکان بھی نہیں ہے۔ تو حضرت والد صاحب ان لوگوں کو جلال سے اور سنجیدہ ہو کر جواب دیتے تھے۔۔۔

”کیا میں بھی حرام کمائی جمع کر کے بنگلہ تعمیر کرتا“ اور بار بار لا حول ولا قوۃ الا باللہ پڑھتے رہتے۔ اور یہ بھی کہتے تھے۔۔۔

”جس کا میں بندہ ہوں وہی میری دولت ہے“

غرض حضرت خواجہ صاحب نے اپنی پاکبازی اور راستبازی سے دونوں جہانوں کی عالیشان عمارتیں تعمیر کیں اور آنے والی نسل کے لئے سچ کا محل نمونے کے طور پر باقی رکھا۔ حضرت مسیح موعود علیہ السلام فرماتے ہیں۔۔۔

”یاد رکھو کہ سچے اور پاک اخلاق راست بازوں کا معجزہ ہے جن میں کوئی غیر شریک نہیں۔“
(کشتی نوح)

نرم اور پاک زبان کا استعمال

حضرت موسیٰ علیہ السلام کے ذکر میں اللہ تعالیٰ قرآن کریم میں فرماتا ہے۔ کہ حضرت موسیٰ علیہ السلام اور حضرت ہارون علیہ السلام کو اللہ تعالیٰ نے جب فرعون کی طرف دعوت الی اللہ کے لئے بھیجا تو فرمایا۔

”فقولا له قولاً ليناً تولعله يتذكر او يخشى (طه ٢٥)“

اور تم دونوں اس سے نرم نرم کلام کرو۔ شاید کہ وہ سمجھ جائے یا (ہم سے) ڈرنے لگے۔ پہلے بھی خاکسار عرض کر چکا ہے۔ کہ حضرت والد صاحبؒ بہت کم بولتے تھے جب بھی بولتے تھے نرم زبان اور پاک زبان یعنی اسلامی اور اخلاقی حدود میں اللہ تعالیٰ نے آپ کو بے ہودہ مزاق اور استہزاء سے پاک رکھا تھا۔ ہمیشہ بنی نوع انسان کی بھلائی اور خیر خواہی کے کلمات زبان پر لاتے تھے۔ اور قلم حق نگاری کے لئے استعمال کرتے تھے۔ بعض لوگوں کا خیال ہے کہ اللہ تعالیٰ نے انسان کو دوکان اور ایک زبان اس لئے ودیعت کئے ہیں اور اس میں حکمت یہ ہے کہ انسان بولے کم اور سنے زیادہ۔ لیکن جسمانی ماہرین کا خیال ہے کہ جو لوگ کم بولتے ہیں۔ ان کی غور و فکر کرنے کی صلاحیت زیادہ ہوتی ہے۔ اسلام اور اخلاقیات میں خاموشی کا ایک خاص مقام ہے۔ اور یہ بات تجربہ میں آئی ہے۔ کہ جو لوگ خاموش طبع ہوتے ہیں۔ وہ یاد خدا میں زیادہ وقت صرف کرتے ہیں۔ جھوٹ، غیبت اور لغو کلام سے اجتناب کرتے ہیں۔

جس شخص نے اس گوشت کے چھوٹے ٹکڑے (زبان) کو حد میں رکھا۔ وہ بہت آفتوں اور اخلاقی گراؤوں سے بچ گیا۔ اور قوت فکر اور قوت ذکر کا مادہ بڑھ جاتا ہے۔ لیکن اسلام بالکل چپ رہنا اور خاموشی اختیار کرنا بھی پسند نہیں کرتا۔ اس طرح بھی آدمی کی حقیقت معلوم نہیں ہوتی۔۔۔۔۔ سعدی فرماتے ہیں۔

”تا مردخن نہ گفتہ باشد۔ عیب و ہنرش نہفتہ باشد

جب تک آدمی زبان نہ کھولے اس کے عیب و ثواب چھپے رہتے ہیں۔

حضرت خواجہ صاحبؒ کے ساتھ اپنے ہم عمر رفقاء سادہ اور خفیف طنز و مزاح بھی کرتے تھے۔ مثلاً ایک دفعہ چودھری اسد اللہ صاحب خان (برادر حضرت چودھری سر ظفر اللہ صاحب خان رضی اللہ تعالیٰ صدر عدالت عالمی انصاف و صدر مجلس اقوام جنرل اسمبلی) اور چند رفقاء قادیان

سے آئے تھے۔ اور ہمارے گھر موضع آسنور میں ٹھہرے تھے۔ دوپہر کا کھانا گھر کے نزدیک ہی ایک درخت کے سائے میں کھانے لگے۔ چودھری صاحب نے مزاقا چپکے سے ایک گہری پلیٹ لبا جی کے سامنے رکھ دی۔ جب سبوں نے پلیٹوں میں کھانا ڈال دیا تو چودھری صاحب نے مزاقا کہا کہ یہ کیا چالاکیاں ہیں۔ کہ صاحب خانہ نے اپنے لئے گہری پلیٹ رکھی ہے۔ تاکہ زیادہ فائدہ میں رہیں۔ اباجی بات کو تاڑ گئے اور مسکرا کر جوابا کہا۔ ذالک فضل اللہ یتیمین یشاء

آپ ہمیشہ مختصر اور ضرورت کی بات کرتے تھے۔ اگر کسی کو نصیحت یا مشورہ دیتے اللہ و رسول کے احکام کو ملحوظ رکھ کر سادہ اور سلیس زبان استعمال کرتے تھے۔ خاکسار نے کبھی آپ کو کسی غیر ضروری مجلس میں بیٹھے ہوئے نہیں دیکھا۔ البتہ سکون و سکوت کی حالت میں ہمیشہ تسبیح و تہید اور درود شریف سے زبان کو تر رکھتے تھے۔ بلندی یا پہاڑی پر چڑھتے وقت ہمیشہ سبحان اللہ الحمد للہ اللہ اکبر پڑھا کرتے تھے۔ گھریلو خدمت گاروں کے ساتھ بھی اپنے عزیزوں کی طرح سلوک روارکتے تھے۔

ہمارے گھر میں ایک مستقل نوکر عرصہ زائد ستر سال برابر رہا۔ اس کا نام عبدالرحیم شیخ تھا۔ اگرچہ وہ ایک ادنیٰ ذات کہلانے والوں سے تھا۔ لیکن حضرت والد صاحب مرحوم ہمیشہ اس کی عزت نفسی کا خیال رکھتے تھے۔ وہ بہت صاف ستھرا اور خوش مزاج شخص تھا۔ گھر کے ماحول کے مطابق صوم و صلوة کا پابند تھا۔ حضرت والد صاحب اس کو ماہوار تنخواہ دیتے تھے۔ اس کی دو شادیاں بھی کیں۔ اس کو خوش رکھنے کے لئے بعض اوقات اس کے ساتھ کوئی مزاق بھی کرتے تھے۔ ایک دفعہ کھانا کھانے کے بعد اباجی نے سیب مانگا گھر میں سیب موجود نہ تھے۔ عبدالرحیم شیخ نے اپنے کسی جیب سے سیب نکال کر دیا اور کہا کہ اپنے ہی باغ کا ہے۔ تو اباجی نے خوشی سے کھایا۔ پھر ہمیشہ اپنے اس خادم سے کہتے تھے ہے کوئی سیب جیب میں تو دو۔ عبدالرحیم کی طبیعت اور عادات سلبھی ہوئی تھیں۔ خاکسار کے سب بھائی بہنوں کو پیار و محبت سے پالا پوسا ہے۔ ضعیف العمری میں کئی سال تک صاحب فراش رہے۔ ہم نے خصوصاً میرے دو بچوں نے آپ کی بہت خدمت کی۔ اللہ انہیں جنت نصیب کرے۔ آمین۔

حضرت خواجہ صاحب مرحوم فطرتاً حلیم الطبع تھے۔ حلاوت و مٹھاس کے بارے میں خواجہ عبد

الغفار صاحب ڈار (سابق ایڈیٹر اخبار اصلاح سرینگر) نے مجھے تحریر کیا۔۔۔

”خواجہ صاحب کی محبتیں یاد آتی ہیں۔ تو ان کا ذکر خیر کرنے کو دل چاہتا ہے۔ صرف ایک ہی درد محبت کا ذکر کرونگا۔ خاکسار (عبدالغفار ڈار) کو خوب یاد ہے کہ خاکسار نے ۱۹۳۸ء میں مولوی فاضل کا امتحان پاس کیا۔ اس کے بعد جب سرینگر میں ہی میری ان سے ملاقات ہوئی۔ تو ان کے دریافت کرنے پر جب میں نے اپنے پاس ہونے کا ذکر کیا تو مجھے نہایت خوشی سے گلے لگایا۔ اور اسی وقت اپنے ساتھ لے گئے۔ بجائے اس کے میں ان کو مٹھائی پیش کرتا۔ اپنی عزیز اولاد سمجھ کر اصرار کے ساتھ انہوں نے حلوائی کی دوکان پر جا کے مجھے خوب مٹھائی کھلائی۔ آپ میٹھی چیزوں کو بہت پسند فرمایا کرتے تھے۔ میری عدم موجودگی میں آپ جب بھی اپنے گاؤں موضع آسنور میں ہوتے تھے تو ضرور میری (عبدالغفار ڈار) اہلیہ حمیدہ بیگم اور بچوں کی خیر و خیریت معلوم کرنے کے لئے نہایت شفقت و محبت سے میرے گھر تشریف لاتے تھے۔ اب ایسے مسلم بزرگوں کی زیارت خواب ہو کر رہ گئی۔

وسعت حوصلہ

اللہ تعالیٰ کے پیارے بندے اعلیٰ اخلاق، اعمال صالحہ سے لیس اور متوکل ہوتے ہیں۔ ہر حال وہ اپنے مولا کے وفا شعار اور راضی برضا رہتے ہیں۔ وہ کسی سے خوفزدہ نہیں ہوتے بلکہ بہادری سے ہر میدان زار کو عبور کرتے ہیں۔ کہتے ہیں۔ ”ہمت مرداں مدد خدا“

تاریخ احمدیت جموں کشمیر میں وسعت حوصلہ کے بارے میں حضرت والد صاحب مرحوم کا ایک مشہور واقعہ مکرم محمد اسد اللہ صاحب قریشی نے درج کیا ہے۔ جس کی تائید مکرم فضل الرحمن صاحب خان ساکنہ یاری پورہ نے بھی کی۔ آپ لکھتے ہیں۔۔۔

”خواجہ صاحب مرحوم صوم و صلوة کے اس قدر پابند تھے کہ ایک بار جب ریاست جموں و کشمیر کے کنسرویٹر فارسٹس پنڈت دیوسرن ان کے علاقہ کا دورہ کر رہے تھے تو دوران کام میں نماز قضاء نہ ہونے دی اور خواجہ صاحب اپنی نماز میں مجھ ہو گئے۔ پنڈت کو ایک مسلمان ماتحت افسر کا یہ کام تعصب کی وجہ سے ناپسند ہوا۔ اور معطل کر کے حکم دیا کہ خواجہ صاحب کو جا کر کسی مسجد کی

امامت سنبھال لینی چاہئے کہ وہ ریخ افسری کے اہل نہیں ہیں۔ خواجہ صاحب مرحوم نے اپنا بستر بوریا باندھا اور اپنے گاؤں موضع آسنور خاموشی سے چلے گئے۔ وہاں یہی سمجھا گیا کہ خواجہ صاحب رخصت پر معمول کے مطابق آئے ہوں گے۔ پانچ وقت مسجد میں باجماعت نمازوں کا التزام جاری رہا۔ اپنی دینی و دنیوی بہتری کے لئے اپنے مولا کریم کے حضور گزر گڑانا ان کا شیوہ تھا۔ ابھی چند ہی دن گزرے تھے کہ دیوسرن کنسرویٹر نے خواجہ صاحب کی بحالی کے احکام صادر کئے۔ حالانکہ خواجہ صاحب نے بحالی کی نہ کوئی درخواست کی اور نہ کوئی سفارشی بھیجا۔ اس واقعہ کی تائید مکرم بھائی عبدالغفار صاحب ڈار نے بھی کی۔ اور واقعہ میں اپنی دانست کے مطابق کچھ اضافہ کر کے تحریر لکھتے ہیں۔۔۔

”دیوسرن کی بیوی کو جب اس درویش صفت آفیسر کے ساتھ کی گئی زیادتی اور دل شکنی کا علم ہوا تو اپنے کسی خواب کے بنا پر وہ اپنے شوہر کے پیچھے پڑ گئی کہ میں اس دن سے ایک طرح کے عذاب میں مبتلا ہوں۔ لہذا فی الفور اس مسلمان آفیسر کو بحال کر دیا جائے۔ چنانچہ متوکل علی اللہ خواجہ عبدالرحمن صاحب میر کو گھر بیٹھے ان کی طرف سے کسی قسم کے رجوع کئے بغیر ان کے ڈمس کئے جانے پر نہ صرف معذرت ملی بلکہ کام پر جانے کا آڈر بھی مل گیا۔“

سچ ہی تو ہے۔۔۔ جو خدا سے ڈرتا ہے دنیا اس سے ڈرتی ہے۔

غریب کی ہمدردی اور عزم و ہمت

جس بچے نے ایک غریب گھرانے میں جنم لیا ہو اور غربت و لاچاری میں پروان چڑھا ہو اور ایام طفولیت میں گھر سے بے گھر ہوا ہو۔ اس کے دل میں غریب کی محبت اور غربت کا احساس ہونا ایک لازمی امر ہے۔ یہ اللہ تعالیٰ کا فضل و کرم ہی تھا جس نے حضرت والد صاحب کی غربت امارت میں اور افلاس خوشحالی میں بدل دی۔ آپ دل کے غنی تھے۔ غریبوں کی ہمدردی اور محتاجوں کی حاجت روائی آپ کی زندگی بھر کا معمول رہا۔ اپنی آمدنی کا ایک خاص حصہ ناداروں پر صرف کرتے تھے۔

یہاں پر خاکسار تحذیرت نعمت کے طور پر یہ عرض کرنا چاہتا ہے۔ کہ حضرت خواجہ صاحبؒ نے

حضرت مسیح موعودؑ کی تعلیم کو دل کی عمیق گہرائیوں سے اپنا لیا تھا۔ آپ نے انسانیت کی جو بے لوث خدمت کی اس خدمت کا صلہ اس ورلی زندگی میں بھی آپ کو ملا۔ بفضلہ تعالیٰ آپ کی اکثر اولاد آپ کے نقش قدم پر چلنے کی کوشش کرتی ہے۔ اور خاندان میں ہر جہت وسعت ملی ہے ماشاء اللہ آپ کی اس وقت چوتھی پشت چل رہی ہے۔ اور دنیا کے چند اطراف و اکناف میں آپ کی اولاد بود و باش کرتی ہے۔ دنیوی نعمتوں کے علاوہ اطاعت خلیفہ وقت اور خدمت دین میں کما حقہ حصہ لے رہے ہیں۔ اللھم زد فزد خا کسار کی والدہ صاحبہ اباجی کا ذکر کرتے ہوئے

بیان کرتی تھیں۔۔۔ ”کہ تمہارے ابا درویش تھے۔ جتنا انکو اپنے اہل و عیال کا خیال رہتا تھا اس طرح ناداروں اور پڑوسیوں کا خیال رکھتے تھے۔ خا کسار ایک واقع کا چشمہ دید گواہ ہے۔ حضرت والد صاحب رٹا رڈ ہوئے تھے۔ گھر میں آمدنی محدود تھی۔ ایک دن کہیں دور سے اباجی کا شناسا ایک احمدی فوجی ہمارے گھر آیا۔ اور ایک وزنی چمڑے کا بوٹ حضرت والد صاحب کو دیتے ہوئے اس کی قیمت مانگی۔ اس کو کچھ رقم کی اشد ضرورت تھی۔ والدہ صاحبہ بالکل نہ مانی کیونکہ ایک تو گھر میں قلیل آمدنی تھی۔ دوسری بات وزنی چمڑے کا بوٹ استعمال کرنا اباجی کی طاقت سے باہر تھا۔ لیکن آپ کو اس غریب پر ترس آیا کہ دور سے یہ حاجت مند آیا ہے۔ خالی ہاتھ واپس کرنا ٹھیک نہیں۔ غرض والدہ صاحبہ کی مرضی کے خلاف بوٹ کی قیمت بیس روپیہ دیدئے۔ خا کسار کو یاد ہے حضرت والد صاحب بوڑھا مچے میں اس وزنی بوٹ کو استعمال کرتے تھے۔ وہ اتنا مضبوط تھا کہ خا کسار نے بھی بعد میں اس کو استعمال کیا۔ یہ اس اللہ کے بندے کا محتاجوں کے ساتھ سلوک کا طریقہ تھا۔

اللہ تعالیٰ قرآن پاک میں فرماتا ہے۔۔۔

”فاذا عزمتم فتوکل علی اللہ ان اللہ یحب المتوکلین“

(ال عمران ۱۴)

ترجمہ: جب تو کسی بات کا پختہ ارادہ کرے۔ تو اللہ پر توکل کر۔ اللہ توکل کرنے والوں سے یقیناً محبت رکھتا ہے۔ ”مومن کا ایک نمایاں پہلو یہ بھی ہے کہ وہ ہر آن چست و چو بند ہوتا ہے۔“ حضرت والد صاحب ہر کام مرد مجاہد کی طرح انجام دیتے تھے۔ کسل اور غیر ذمہ داری

آپ کے خمیر میں ہی نہ تھی۔ بلکہ دست با کار دل بایار کی زندہ مثال تھے۔ یہ آپ کے منجھوٹ عزم ہمت کا ہی کرشمہ تھا۔ اور احساس ذمہ داری کا نتیجہ کہ آپ بحیثیت ملازم سرکار ایک کامیاب ریٹج آفیسر بحیثیت خاوند کے ایک اچھے رفیق حیات، بحیثیت باپ کے۔۔ ایک شفیق اور کامل رہبر، بحیثیت خادم قوم کے۔۔ ایک ہمدرد اور غریب پرور خدمت گار، بحیثیت کارکن سلسلہ کے۔۔ ایک مخلص خادم دین اور بحیثیت امیر صوبائی کے۔۔ ایک کامیاب منظم و مربی تھے۔

”سبق پڑھ پھر صداقت کا شجاعت کا عدالت کا

لیا جائے گا تجھ سے کام دنیا کی امانت کا

ماشاء اللہ حضرت خواجہ صاحب مرحوم کے سپرد جو امانتیں تعلق باللہ اور تعلق بالعباد کے تعلق سے تھیں۔ کسی بھی امانت میں زرہ بھر خیانت نہیں کی۔

ہر امانت داری کو خلوص نیت اور خلوص عمل سے پائے تکمیل تک پہنچایا۔ اور بفضلہ تعالیٰ اپنے عمل پیہم اور عظیم ہمت سے ہر معرکہ کو سر کر لیا۔

دینی مصروفیات

حضرت والد صاحب کو قادیان کے روحانی ماحول نے عملی فراست اور تبلیغی صلاحیت کے ساتھ ساتھ قربانی کرنے کی توفیق عطاء کی تھی۔ دوران ملازمت سرکاری فرائض ادا کرنے کے بعد داعی اللہ بن کر تبلیغ کرنے کا ایک جنون سا طاری رہتا۔ کسی نہ کسی رنگ میں دین حق کی بات چھیڑتے اور اپنے حلقہ اثر میں خدا و رسول کی بات پیار کے انداز میں پہنچاتے رہتے۔ آپ ہر وقت دین کی خاطر جان، مال، عزت اور وقت کو حاضر رکھتے تھے۔ دینی خدمات اور سلسلہ کی ضروریات کے لئے خلیفہ کی آواز پر لبیک کہتے۔۔۔۔۔

تحریک جدید کے پانچ ہزاری مجاہدین میں شرکت !!

مجلس احرار نے جب احمدیت کے خلاف ایک بڑا فتنہ کھڑا کیا اور نعوذ باللہ احمدیت کو صفحہ ہستی سے مٹانے کی ناپاک اور مذموم کوشش کی۔ تو اللہ میاں نے حضرت خلیفۃ المسیح الثانی کو

دشمن کے سامنے بڑے عزم و ہمت سے چٹان کی طرح کھڑا ہی نہیں کیا بلکہ دور خلافت کی برکت سے آپ کی روح القدس کے ساتھ تائید فرمائی۔ اور آپ نے وحی خفی کے ماتحت احرار کے فتنہ کے متعلق اعلان فرمایا۔۔۔

”میں احرار کے پاؤں کے نیچے سے زمین نکلتی دیکھتا ہوں۔“

حضور نے ایک نئی تحریک کا اعلان فرمایا۔ جو ”تحریک جدید“ کے نام سے موسوم ہوئی۔ اس تحریک کے متعلق ۲۳ نومبر ۱۹۳۳ء میں ایک خطبہ جمعہ دیا۔

حضرت والد صاحب مرحوم اپنے محبوب آقاء کی اس تحریک اور آواز پر لبیک کیوں نہ کرتے اور خلوص سے دونوں میاں بیوی ”السابقون الاولون“ کے صف میں شامل ہوئے۔ اور اس طرح انیس سالہ دور میں ”پانچ ہزاری مجاہدین“ میں شامل ہوئے۔ یاد رہے پانچ ہزاری مجاہدین میں جموں کشمیر سے اس وقت چند ایک اشخاص کو توفیق اور سعادت نصیب ہوئی ہے۔ جنہوں نے اس بابرکت تحریک میں حصہ لے کر اس خطہ گل پوش وادی کی نمائندگی کی ہے۔ ”تحریک جدید کے پانچ ہزاری مجاہدین“ کی شائع شدہ کتاب سے جموں و کشمیر کے کل سولہ مجاہدین کے اسمائے گرامی ہیں۔ جن میں خاکسار کے والدین کے اندراجات مندرجہ ذیل ہیں۔

نمبر شمار اسمائے مجاہدین میزان رقوم کیفیت
۳۔ میر عبدالرحمن مرحوم

ریخ آفسر آسنور ۵۰۵۸۰

اہلیہ صاحبہ بیگم آسنور ۱۳۳۷۰

تحریک جدید کی غرض و غایت کو حضرت والد صاحب مرحوم نے اپنا لیا تھا۔ عملی کردار کا ایک واقعہ۔ مکرّم عبدالغفار صاحب ڈار (سابق ایڈیٹر اصلاح سرینگر) نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا۔۔۔

”خواجہ صاحب کی پیاری یاد آگئی۔ خواجہ صاحب مرحوم چونکہ قادیان میں زیادہ تر مولانا شیر علی صاحب مرحوم کی زیر تربیت رہے تھے۔ لہذا بالکل اسی رنگ میں رنگین تھے۔ کثرت سے سلام کرنا، عبادت میں مستعدی اور عجز و انکساری کا نمونہ۔ ۱۹۳۳ء کے بعد تحریک جدید نے خواجہ

صاحب کو اور بھی زیادہ سادگی کا نمونہ بنا دیا۔ اس سلسلہ میں ایک غیر از جماعت مرحوم دوست خواجہ سلام الدین صاحب کے ابا جان کے متعلق دو ہرائی ہوئی روایت کا ذکر کرنا مناسب معلوم ہوتا ہے۔

بارہمولہ میں (کشمیر) خواجہ احمد وانی صاحب نام کے ایک سفید پوش دوست ہوتے تھے۔ ان کا یہ گھر انہ مہمانوں کی آماجگاہ بنارہتا تھا۔ اسی گھر انے میں خواجہ غلام محی الدین وانی صاحب سابق وزیر حکومت آزاد جموں و کشمیر۔ خواجہ نور دین وانی حال مقیم بارہمولہ اور ان کے دو فرزند خواجہ بشیر احمد وانی مرحوم جو اینٹ سیکرٹری حکومت پاکستان تھے۔ راقم الحروف بالعموم جب بھی بارہمولہ آتا تو میرا بھی اسی گھر انے میں قیام و طعام کا انتظام ہوا کرتا تھا۔ اس گھر انے کی مہمان نوازی کا زیادہ سہرا خواجہ احمد وانی کی اہلیہ مرحومہ کے سر پر تھا۔ جو نہایت اخلاص و ہمت اور مہمان نوازی کے اعلیٰ جذبوں سے اپنے ہاں کے مہمانوں کی خدمت عبادت سمجھ کر سرانجام دیتی تھیں۔ ہمارے بزرگ خواجہ عبدالرحمن میر (ریجنر صاحب) کا بھی اسی گھر انے سے تعلق تھا۔ آپ گاہے گاہے ان کے ہاں اس لئے بھی قیام کرتے تھے۔ کہ انہیں اس جگہ عبادت و ریاضت کی آسائش میسر تھیں۔ خواجہ سلام الدین صاحب وانی نے بارہا جو بات بیان کی وہ یہ کہ خواجہ ریجنر صاحب جب ان کے ہاں فرودکش تھے اور کھانا پیش کیا گیا تو آپ نے اپنے میزبان کو سختی سے کھانے میں کوئی دوسرا سالن پیش کرنے کی ممانعت کر دی۔ آپ نے انہیں برملا کہا کہ ہمارے امام حضرت مرزا بشیر الدین محمود احمد صاحب نے ہمیں سادگی اختیار کرنے کا منصوبہ دیا ہوا ہے۔ اور اس میں یہ بھی حکم دیا ہے کہ کھانے میں ایک سے زیادہ سالن استعمال نہیں کرنا ہے۔ سلام صاحب کہا کرتے تھے کہ ان کی والدہ صاحبہ کہتی تھی کہ ان کے حضرت صاحب کیسے ہیں۔ کہ انہوں نے ان پر کھانے کی پابندی عائد کر رکھی ہے۔ کشمیری لوگ وادی میں دونوں وقت چاول کھاتے ہیں۔ اور ساگ خدا تعالیٰ نے وافر دیا ہوا ہے۔ لہذا اوسط درجے کے لوگ تقسیم ملک سے پہلے کھانے میں دو تین سالن استعمال کرتے تھے۔ یہ گویا معمول ہوتا تھا اس وجہ سے کشمیر میں ایک سالن کی پابندی واقعی انتہائی سادگی کی بات ہے۔ مگر خواجہ صاحب بہر حال اس سادگی کے پابند تھے۔ اس طرح آپ کی انکساری بھی کمال کو پہنچی ہوئی تھی۔ اس واقعہ سے یہ بات بھی عیاں ہوتی ہے۔

کہ حضرت والد صاحبؒ خلیفہ وقت کے ارشادات کی تعمیل میں کس درجہ مخلص تھے۔

حضرت خواجہ صاحبؒ نے بحیثیت رنچ آفیسر کے تحفظ جنگلات اور کوہ پیکائی ہی نہیں کی۔ بلکہ اپنے فرض منصبی کے ساتھ ساتھ داعی الی اللہ بن کر چٹیل میدانوں اور خارزار وادیوں کو بھی مسیح اور مہدی علیہ السلام کی رحمت باراں سے سبز و شاداب بھی بنایا۔ نور ہدایت اور شمع احمدیت سے تاریک جنگلوں کو بھی روشن کیا، تبلیغ کے دوران آپ کو بعض اوقات رنچ و مصائب کا جو سامنا کرنا پڑتا تھا۔ اس کی کبھی پرواہ نہ کی۔

خدمت دین کو اک فضل الہی جانو

اس کے بدلے میں کبھی طالب انعام نہ ہو

آپ نے خدمت خلق اور جذبہ تبلیغ کو عسرویسر میں ہمیشہ مقدم رکھا اور کوئی بھی موقعہ تبلیغ کا یا خدمت خلق کا ہاتھ سے جانے نہ دیا۔ غیروں تک تبلیغ حق پہنچانے کے بارے میں الحاح چچا محمد عبداللہ میر آف گاگرن نے تحریر کیا۔۔۔۔

اشکوٹ۔ کرناہ کشمیر کا تبلیغی معرکہ

خواجہ صاحب کی ڈیوٹی اشکوٹ میں تھی۔ اور ہیڈ کوارٹر ٹیٹوال میں تھا۔ ایک دفعہ مکرم سید یوسف شاہ صاحب (مبلغ سلسلہ ساکنہ بیہ جباڑہ کشمیر) ہمارے پاس آئے اس سے قبل ہی دور دور تک اس بستی کے لوگوں اور ملاؤں کو یہ معلوم ہوا تھا کہ یہاں کارنچ آفیسر احمدی ہے۔ جب ان کو پتہ چلا کہ احمدی مبلغ آیا ہوا ہے تو ٹیٹوال کے لوگوں نے دیوبندی علماء بلائے اور ہمیں اطلاع دی کہ تم لوگ ہمارے ساتھ احمدیت پر بحث کرو۔ ہم نے ان کا چیلنج قبول کیا۔ ہمارے رنچ کوارٹر کے نزدیک ایک کھلا میدان تھا اور اس میں سائبہ دار چنار کے درخت تھے۔ یہی جگہ بیٹھنے کے لئے مقرر ہوئی۔ پہلے دیوبندی علماء اور بستی کے لوگ اس میدان میں جمع ہوئے اور ہم تین افراد کا قافلہ یعنی خاکسار محمد عبداللہ، خواجہ عبدالرحمن میر ریختر اور مبلغ سلسلہ اس میدان میں پہنچ گئے۔ طے یہ ہوا کہ بحث صرف حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی وفات و ممات پر از روئے قرآن و حدیث ہوگی۔ اور یہ بھی شرط رکھی گئی کہ کسی بھی فریق کے ذریعہ بدامنی نہیں ہوگی۔ غرض بحث

شروع ہوئی۔ تھوڑے ہی وقت کے بعد دیوبندی علماء لا جواب ہو گئے۔ اور اپنی روایت کے مطابق اشتعال اور شرارت کے حربے استعمال کرنے شروع کئے۔ ہم نے قرآن وحدیث سے استدلال کر کے یہ بیان کیا کہ حضرت عیسیٰ وفات پا چکے ہیں۔ جب ان علماء سے کوئی جواب نہ بن پڑا۔ تو انہوں نے شور و غل برپا کیا اور کفر کے فتوے دینے لگے۔

کرناہ کے دو بھائی قاضی محمد شفیع اور قاضی عبدالرحمن علمائے دیوبند کے ساتھی تھے۔ اور ملاؤں نے فوراً لوگوں کو خوش کرنے کے لئے اور اپنے آپ کو دھوکہ دینے کے لئے مذکورہ قاضی محمد شفیع کے ذریعہ اعلان کروایا کہ مرزائی بحث میں ہار گئے اور (نعوذ باللہ) یہ لوگ اسلام کے دشمن اور کافر ہیں۔ یعنی قاضی مذکور سے ہمارے خلاف فتویٰ کفر کا اعلان کروایا۔

معجزہ!!

کرناہ کے مذکورہ قاضی برادران کو ایک ندی پار کرنی تھی۔ اشکوٹ سے ہمیں فتویٰ کفر دینے کے بعد جب ندی پار کرنے لگے تو قاضی محمد شفیع پھسلن کی وجہ سے دھڑام سے پانی میں گر پڑے اور پھر نہ اٹھ سکے۔ اسی جم غفیر کے لوگوں کو اس حال کا پتہ چلا اور فوراً آ کر اپنے قاضی کو پانی سے نکال کر چار پائی پر اٹھا کر گھر لے گئے۔ اور قاضی صاحب تین ماہ تک شدید بخار اور درد و کرب میں مبتلا رہا۔ متواتر علاج معالجہ کے باوجود جانبر نہ ہو سکا اور فوت ہوا۔ اس طرح حضرت مسیح موعود پر دشنام طرازی کرنے والا اور احمدیوں کو کافر قرار دینے والے قاضی نے اپنی ہی قضاء کا سامان پیدا کر لیا اور عذاب الہی کا مورد بن گیا۔ ہاں البتہ اس قاضی صاحب مرحوم کے بھائی مسمیٰ عبد الرحمن بھائی کی وفات کے بعد کئی بار ہمارے پاس آئے اور اپنی غلطی کا اعتراف کیا اور معافی مانگی۔۔۔

”کاذب کا کذب اس کی ہلاکت کا ہے کفیل
ہوتا نہیں ذلیل وہ جس کا خدا وکیل“

کرنہ (کشمیر) میں غار میں مقیم حاجی محمد عثمان کو تبلیغ اور اس کا کرشمہ

منشی محی الدین صاحب محرر مال ساکنہ بارہمولہ نے مجھے تحریر کیا۔۔۔۔

”میری ملازمت کے دوران کرنہ میں خواجہ ربیخ صاحب کے ساتھ احمدی ہونے کے ناطے بہت اچھے تعلقات وابستہ تھے۔ موضع شانو میں ایک خدا دوست حاجی محمد عثمان صاحب بھمراسی سال ایک غار میں رہتے تھے۔ پیر اور درویش سمجھ کر لوگوں کا اس کے پاس آنا جانا رہتا تھا۔ راقم (منشی محی الدین) بھی جب ان کی ملاقات کے لئے گیا۔ واقعی حاجی صاحب صوم و صلوة کا پابند اور نیک بزرگ تھا۔ اچھی طبیعت کا مالک اور تہجد گزار بندہ تھا۔ میں نے اس کو تبلیغ کی اور احمدیت کا پیغام پہنچایا۔ کئی بار میں اس کے پاس گیا لیکن مجھے محسوس ہوتا تھا کہ ان پر میری تبلیغ کا کوئی اثر نہیں ہوتا۔

میں نے ایک دفعہ خواجہ ربیخ صاحب کو اس درویش کے بارے میں کہا کہ آپ بھی میرے ہمراہ حاجی صاحب کے پاس چلیں تو خواجہ صاحب مان گئے۔ جب ہم دونوں غار میں حاجی صاحب کے پاس پہنچے ملاقات کے بعد خواجہ صاحب نے اس کو تفصیل اور استدلال سے نیز قرآن وحدیث کی رو سے تبلیغ کی۔ گو حاجی صاحب نے زیادہ باتیں نہیں کیں۔ البتہ لچپسی اور غور سے خدا اور رسول کی باتیں سنتا رہا پھر درویش اپنے خدمت گار مسمی نبرٹ کی طرف مخاطب ہوا اور اس کو کہا۔ ”خواجہ صاحب خود بھی بہت عابد اور متقی ہیں۔ میرزائی ہونے سے کیا ہوا۔ آدمی قول و فعل سے پہچانا جاتا ہے۔“

غرض لمبی ملاقات اور تبلیغ حق کے بعد خواجہ ربیخ صاحب نے حاجی عثمان صاحب کو کہا کہ آپ تہجد گزار اور دعا گو ہیں۔ آپ اس بارے میں اللہ تعالیٰ کے حضور دعا کریں کہ اے اللہ مجھے صراط مستقیم دکھا۔ حاجی صاحب نے ایک ہفتہ کی فرصت مانگی ہم لوگ واپس آ گئے۔

ایک ہفتہ گزرنے کے بعد ہم دونوں حاجی محمد عثمان صاحب کے پاس گئے۔ جونہی اس نے ہمیں دیکھا دونوں کان ہاتھوں سے پکڑ کر اور زبان باہر نکال کر کہنے لگا۔۔۔ ”واقعی مرزا غلام احمد صاحب قادیانی سچے ہیں۔ میں ان کو مسیح اور مہدی تسلیم کرتا ہوں۔ میں ابھی تک اس غار

میں بے خبر رہا اور اپنے پچھلے گناہوں کی اللہ تعالیٰ سے معافی مانگ لوں گا۔

سفر قادیان میں دو پٹھانوں کی روئیداد اور دعا کا معجزہ !!

الحاج محمد عبد اللہ صاحب میر نے تحریر کیا کہ بھائی رینجر صاحب کی ڈیوٹی بارہمولہ کشمیر میں تھی۔ وہاں سے ہی ہم دونوں براستہ مظفر آباد، راولپنڈی جلسہ سالانہ قادیان میں شرکت کے لئے گئے۔ لیکن پورے جلسہ میں شرکت نہ کر سکے چھٹی کم ملی تھی۔ اس لئے اختتام جلسہ ہم واپس بطرف ایٹ آباد آئے۔ حویلیاں تک ریل گاڑی میں آئے۔ حویلیاں سے ٹیکسی کرایہ پر لی۔ اسی ٹیکسی میں دو پٹھان ہمارے ہم سفر ہوئے۔ راستہ میں نماز ظہر کا وقت ہوا اور ہم دونوں بھائیوں نے ٹیکسی میں ہی نماز ادا کی۔ نماز کی ادائیگی پر پٹھان خوش تو ہوئے لیکن نماز نہیں پڑھی۔ دوران سفر پٹھانوں نے حضرت خواجہ صاحب سے پوچھا آپ لوگ کہاں سے آئے اور کدھر جانا ہے۔ ہم نے جواب دیا ہم قادیان سے آئے اور کشمیر اپنے وطن واپس جانا ہے۔ قادیان کا نام سن کر دونوں پٹھان آگ بگولے ہوئے اور جیسے ان کے سر پر بجلی گری۔ اور کہا کیا تم لوگ میرزائی ہو خواجہ صاحب نے جواب دیا ہاں ہم خدا کے فضل سے احمدی ہیں۔

دونوں پٹھان گالیاں دینے لگے اور کہا تم مسلمان نہیں کافر (نعوذ باللہ) ہو۔ اتفاقاً ٹیکسی خراب ہوئی اور ڈرائیور ٹیکسی ٹھیک کرنے لگا۔ اور پٹھانوں نے یہی رٹ لگائی کہ اس میں مرزائی بیٹھے تھے اس وجہ سے ٹیکسی خراب ہوئی۔

انتہائی کوشش کے باوجود ڈرائیور ٹیکسی کو ٹھیک نہ کر سکا۔ جب ہم سب لوگ تنگ آ گئے تو خواجہ صاحب نے پٹھانوں کو کہا ”اگر تم نے اپنے آپ کو مسلمان اور ہمیں کافر سمجھا۔ ذرا اس ٹیکسی کے ٹھیک ہونے کے لئے خدا سے دعا مانگو۔“ لیکن وہ کوئی جواب نہ دے پائے پھر بیٹھے بیٹھے نا امیدی کے عالم میں ان دونوں پٹھانوں نے خواجہ رینجر صاحب کو کہا۔۔۔۔۔

”اگر تم سچے مسلمان ہو تم ہی دعا کرو۔ کہ ٹیکسی ٹھیک ہو جائے۔ اس بات پر خواجہ صاحب نے ٹیکسی ڈرائیور سے کہا۔ ہم لوگ نماز عصر ادا کریں گے اور انشاء اللہ دعا بھی کریں گے۔ کہ ٹیکسی ٹھیک ہو جائے تم پھر کوشش کرو۔ غرض ہم لوگ نماز عصر کرنے لگے۔ خواجہ صاحب نے دعا کی اور

بفضلہ تعالیٰ دعا منظور ہوئی۔ یعنی ٹیکسی ٹھیک ہو گئی۔ پٹھان اور ڈرائیور حیران و ششدر رہ گئے کہ واقعی خواجہ صاحب خدا رسیدہ بزرگ ہیں۔ نہ معلوم کیا کیا جواہر اس گدڑی میں لپٹے ہوئے ہیں۔ الغرض ہم لوگ ٹیکسی میں سوار ہو کر منزل مقصود کی جانب روانہ ہوئے۔ اب دونوں پٹھانوں نے چپ سادھ لی۔ دونوں کے چہروں سے شرمندگی نیکیتی تھی۔ کیونکہ دیکھتے دیکھتے خواجہ صاحب کی دعا قبول ہوئی۔ یعنی معجزانہ رنگ میں۔

چودھری مبارک احمد صاحب اعوان اسلام آباد پاکستان کا بیان

خاکسار کے بہنوئی چودھری مبارک صاحب نے مجھ سے زبانی بیان کیا کہ ایک دفعہ میری ملاقات بمقام مظفر آباد ایک رٹائرڈ فارسٹ گارڈ سے ہوئی۔ اس علاقے میں موضع کوہامہ میں حضرت والد صاحبؒ نے ڈیوٹی سرانجام دی تھی۔ جب باتوں باتوں میں حضرت خواجہ صاحب کا ذکر خیر آیا تو فارسٹ گارڈ کی آنکھیں پر غم ہوئیں۔ میں نے وجہ پوچھی تو اس نے کہا۔۔۔۔۔

”خواجہ ربینجر صاحب جیسے نیک چلن اور اعلیٰ کردار ملازم سرکار کوئی میں نے نہیں دیکھا میں اس بات کا چشم دید گواہ ہوں کہ اس رینج میں مشکل سے کوئی ایسا درخت ہوگا جس کے نیچے خواجہ صاحب نے نماز ادا نہ کی ہوگی۔ اور روز افزوں ان کی ریاضت و عبادت میں مستعدی اور مداومت کا رنگ دکھائی دیتا تھا۔“

”آرائش جمال سے فارغ نہیں ہے ہنوز۔ پیش نظر ہے آئینہ دائم نقاب میں۔“

حضرت والد صاحب تبلیغ کا سلسلہ ہمیشہ جاری رکھتے تھے۔ کبھی اس کام میں تغافل یا تساہل نہیں کرتے تھے۔ مخالفت کے باوجود آپ ہمیشہ ممتاز اور متمول، گدی نشینوں یا عام لوگوں کو دعوت حق دیتے تھے۔ آپ کسی سے خائف یا مرعوب نہیں ہوتے تھے۔ بلکہ ہمیشہ تبلیغ کے نیک مقصد کو مد نظر رکھا کہ شاید سعادت مند روحوں کو قبول حق کی توفیق ملے۔ اگر کارسز کار سے کبھی فرصت نہیں ملتی تھی۔ تبلیغی مشن کو اپنے دوستوں اور تعلق داروں سے جاری رکھواتے تھے۔ لوگوں کے پاس جانے کے لئے یعنی تبلیغ کرنے کے لئے ان کو کتابیں خرید کر دیتے تھے۔ اور سفر خرچہ بھی مکرم مشی محی الدین صاحب نے تحریر کیا ”خواجہ ربینجر صاحب اکثر مجھے کتابیں (مذہبی) خرید کر دیتے

تھے۔ اور کہتے تھے ان کو پہلے خود پڑھ لینا پھر دوسرے لوگوں کو بھی برائے مطالعہ دے دیا کرو۔ بعض اوقات کسی خاص شخص کے لئے لٹریچر یا کتب دے دیتے تھے۔ ایک دفعہ خواجہ ربینہ صاحب نے مجھے دو کتابیں **الہ اوہام** ۲ حیات و ممات مسیح میرے حوالے کئے۔ اور فرمایا۔۔۔۔۔

یہ کتابیں بارہمولہ کے دوریسوں امیر الدین ککرو اور خواجہ محمد جوگرو کو دے دینا۔ میں نے (محی الدین) عرض کی میری جرأت ہی نہیں کہ میں اپنے سے بڑے یعنی متمول لوگوں کے سامنے جاسکوں۔ پھر خواجہ صاحب مرحوم نے ان دونوں کے نام خطوط لکھ کر دئے۔ اور میں اس طرح راضی ہو گیا۔ جب میں کتابیں لے کر پہلے امیر الدین صاحب ککرو کے پاس گیا۔ کتابیں سامنے رکھیں اس نے دو تھپڑ میرے منہ پر مارے۔ میں کتابیں اور چٹھی اس کے پاس چھوڑ کر بھاگ گیا۔“

چچا محمد عبد اللہ صاحب میر آف گاگرن کی تبلیغ کے متعلق حضرت والد صاحبؒ کے بارے میں رائے خاکسار نے ایک دفعہ اباجی کے ہمسفر چچا محمد عبد اللہ میر صاحب سے کہا مختصر الفاظ میں بتائے کہ حضرت والد صاحب کی تبلیغ کا کیا طریق تھا۔۔۔۔۔

”حضرت بھائی خواجہ صاحب مرحوم جہاں بھی جاتے تھے احمدیت کی تبلیغ کرتے تھے۔ نیز ان کی خاموشی بھی تبلیغ تھی۔ ان کا اٹھنا بیٹھنا، چلنا پھرنا، ان کی سادگی، نمازیں، روزے اور سبوں کے لئے ہمدردی و محبت یہ سب چیزیں قوی اور فعلی رنگ میں تبلیغ کا حق ادا کرتی تھیں۔

گوردواروں اور مندروں کا احترام و اعانت !!

چچا محمد عبد اللہ میر نے تحریر کیا۔۔۔۔۔

”حضرت خواجہ صاحب کی ڈیوٹی بانڈی اشکوٹ (کشمیر) ریج میں تھی۔ اس ریج کے جنگلوں میں فرم (کسی کمپنی کا جنگل ٹھیکہ) کا کام چل رہا تھا۔ محکمہ جنگلات کا چیف کنسرویٹر انگریز ہوتا تھا۔ فرم والے یعنی ٹھیکیدار جنگل کسی انگریز کو ہی اپنا مینجر رکھتے تھے۔ اشکوٹ فرم کا مینجر بھی انگریز تھا اور بھائی خواجہ صاحب کے زیر تبلیغ تھا۔ یہ انگریز مینجر بھائی ربینہ صاحب کی دیانت داری ایمان داری اور علم کا بہت قائل تھا۔

بحث ہوتی تھی۔ اس طرح دونوں کے آپسی دوستانہ تعلقات تھے۔ ایک دفعہ انگریز مینجر کو کسی کام کے لئے لاہور جانا پڑا اور خواجہ صاحب سے کہا کہ لاہور سے میں آپ کے لئے ایک گیس لیپ لے آؤنگا۔ یہاں اندھیرے میں کام آئیگا کیونکہ بجلی نہیں تھی۔ لیکن خواجہ صاحب بالکل نہیں مانے۔ ضرورت نہیں ہے۔ غرض انگریز مینجر نے لاہور سے ایک عمدہ گیس لیپ لا کر خواجہ رہنبر صاحب کی خدمت میں بطور نذرانہ پیش کیا۔ لیکن خواجہ صاحب نے لینے سے انکار کیا۔ اور انگریز بھی بضد رہا اور گیس لیپ چھوڑ کر چلا گیا۔ دوسرے دن ہی خواجہ صاحب نے مجھ سے (محمد عبد اللہ) سے کہا کہ ٹیٹوال کے حسین شاہ نمبردار کو بلا لاؤ۔ اور اس کو یہ بھی کہہ دو کہ یہاں سے ایک گیس لیپ مسجد ٹیٹوال کیلئے جاؤ۔ جب میں نے نمبردار کو یہ پیغام دیا تو اس نے کہا کہ ابھی ٹیٹوال میں مسجد نہیں بنی ہے۔ راقم نے خواجہ صاحب سے کہا کہ گیس لیپ مجھے قیامتاً دے دو اور یہ رقم مسجد کے انتظامیہ کو دے دیں گے۔ لیکن خواجہ رہنبر صاحب ہرگز نہ مانے۔ تیسرے دن خواجہ صاحب نے کہا کہ گرودوارہ کے گرنتھی رنگیل سنگھ کو بلا لاؤ۔ میں نے رنگیل سنگھ کو اپنے ہمراہ لایا۔ اور خواجہ صاحب نے یہ عمدہ گیس لیپ گرودوارہ کے لئے گرنتھی کے حوالہ کیا۔ گرنتھی خوش ہو کر چلا گیا۔

حضرت خواجہ صاحب ہر عبادت گاہ کا احترام کرتے تھے۔ اسی لئے آپ سرینگر کے گرودوارہ میں وہاں کے انتظامیہ کی دعوت پر تقریر کرتے تھے۔ رواداری اور بھائی چارے پر زیادہ بولتے تھے۔ سکھ برادری آپ کی بہت عزت کرتی تھی۔ اپنی خالصہ سبھاؤں میں آپ کی عزت افزائی کرتے تھے اور گرودوارہ میں نماز ادا کرنے کی اجازت دیتے تھے۔ حضرت خواجہ صاحب کے دل میں گورو بابا نانک کی بہت عزت و قدر تھی۔ آگے قارئین ”خطوط“ میں گرو نانک کے متعلق ایک خط پڑھ لیں گے۔ مظفر آباد کے ایک بڑے عالم اور گرنتھی شیر سنگھ کو خواجہ صاحب نے قرآن پاک کا مطالعہ بھی کروایا۔ پھر اس گرنتھی نے قرآن شریف کے متعلق ایک کتابچہ بھی لکھا۔ مکرم غلام محمد صاحب بیگ ساکنہ کوریل (کشمیر) نے مجھ سے بیان کیا کہ خواجہ صاحب نے اپنی لاگت سے مظفر آباد کے قریب بربل سڑک ایک چھوٹی سی مسجد شریف بھی تعمیر کروائی تھی۔ ہم لوگ آتے جاتے اس مسجد میں ٹھہرتے تھے اور نمازیں ادا کرتے تھے۔ اس بات کی تصدیق

زبانی طور پر بہت دوستوں نے بھی کی۔

تحریک جدید کے تحت وقف عارضی کی دھن!!

مکرم منشی محی الدین صاحب محرر مال نے تحریر کیا کہ حضرت خواجہ صاحب کئی برس تک وقف عارضی میں کام کرتے رہے۔ اس سلسلہ میں بارہمولہ بھی آئے۔ اور فرماتے تھے کہ انشاء اللہ تبلیغ حق کے لئے لداخ (کشمیر کا سب سے اونچا حصہ) جانے کا بھی ارادہ ہے۔ میں نے (محی الدین) جواباً کہا جزاکم اللہ۔ لیکن پھر خرابی صحت کی وجہ آپ کی یہ خواہش پوری نہ ہو سکی۔ نیز لکھتے ہیں۔۔۔ ایک دفعہ حضرت والد صاحب ان کے گھر میں فروکش تھے۔ شام کے وقت آپ نے بوجہ بھوک کھانا مانگا۔ میں نے عرض کیا سب افراد خانہ کسی رشتہ دار کی شادی میں گئے ہیں۔ صرف میں آپ کی وجہ سے گھر میں ٹھہرا ہوں۔ ہم دونوں کے لئے رات کا کھانا رشتہ داروں سے ہی آئیگا۔ حضرت میر صاحب کچھ نہ بولے اور نماز شروع کی اور بہت دیر تک عبادت میں مصروف رہے۔ اتنی دیر میں کھانا بھی آ گیا۔ مجھے بھی بھوک لگی تھی۔ جب خواجہ صاحب نماز سے فارغ ہوئے تو میں نے عرض کیا۔ آئیے آپ کو بڑی دیر سے بھوک محسوس ہو رہی تھی۔ اس پر میر صاحب مسکرائے اور فرمایا۔۔۔ ”محی الدین نماز میں اتنا سکون و راحت ملا کہ بھوک کا احساس ہی جاتا رہا۔ پھر ہم دونوں نے کھانا تناول کیا۔

دعا کا معجزہ

حاجی محمد عبداللہ صاحب میر نے تحریر کیا کہ ہندو لوگ بھی خواجہ صاحب کی دعاؤں اور عبادت و اذکار کے معتقد تھے۔ مظفر آباد ڈویژن میں ایک ڈی ایف او مسمیٰ بخشی دیویشن صاحب تھے اس کی ایک ہی لڑکی تھی اور وہ بھی گوگلی تھی۔ زبان سے بالکل بول نہ سکتی تھی۔ ایک دفعہ مذکورہ ڈی۔ ایف او کی اہلیہ خواجہ صاحب کے پاس آئی اور اپنے رسم کے مطابق خواجہ صاحب کے پیروں پر سجدہ کرنا چاہا لیکن خواجہ صاحب نے اس کو ایسا کرنے سے روک دیا۔ نیز اس کو نصیحت کی کہ سجدہ صرف اللہ کی ذات کے سامنے واجب ہے۔ غیر اللہ کو سجدہ کرنا کفر ہے۔ غرض

اہلیہ دیوشرن نے خواجہ صاحب کو کہا کہ میری اکلوتی لڑکی گوگئی ہے۔ آپ اس کے لئے دعا کریں۔ خواجہ صاحب نے جواباً کہا کہ میں ضرور دعا کرونگا۔ لیکن آدمی اپنے لئے خود بھی دعا کرے۔ نیز اس گوگئی لڑکی کے لئے ایک اچھا استاد بھی مقرر کیا جائے۔ اور اس کو تعلیم و تربیت کی طرف راغب کریں۔ ان لوگوں نے اس پر عمل کیا۔ نتیجہ یہ برآمد ہوا کہ گوگئی اور بے زبان لڑکی نے اشاروں کے ذریعہ تعلیم حاصل کی۔ اور اتنی قابل ہوئی کہ لکھ پڑھ سکتی تھی۔ یعنی اپنا مافی الضمیر لکھ کر ظاہر کر سکتی تھی۔ اور لکھی ہوئی بات پر عمل کرتی تھی۔ استاد بھی لائق ملا جس نے محنت سے لڑکی کو پڑھایا۔ لیکن لڑکی کے والدین کو اس بات پر یقین تھا کہ یہ سب کچھ خواجہ صاحب کی دعاؤں کا پھل ہے۔ وہ آپ کو درویش مانتے تھے اور بہت عزت و تکریم کرتے تھے۔

سلطان راجہ متولی خان کٹھائی (اوڑی کشمیر) کا عجیب و غریب واقعہ!!!

حاجی محمد عبداللہ صاحب میر نے مجھے تحریر کیا کہ خواجہ صاحب کی ڈیوٹی کٹھائی ریج میں تھی۔ موضع بزہامہ میں سلطان راجہ متولی خان رہتے تھے۔ سلطان صاحب کی علاقہ بھر میں بادشاہی کی سی شان تھی۔ وہ اپنی عدالت لگاتے تھے۔ اور بحیثیت منصف علاقہ بھر کے جھگڑے اور دعویٰ جات کا فیصلہ کر دیتے تھے۔ محکمہ جنگلات کے کچھ کیس بھی ان کی عدالت میں جاتے تھے۔ ڈوگرہ حکومت میں ریاست جموں و کشمیر میں ہری سنگھ کے دربار میں سلطان راجہ متولی خان کٹھائی کے لئے کرسی بحیثیت ایک معزز درباری کے حاصل تھی۔ سلطان صاحب کو خواجہ صاحب کے ساتھ بہت محبت اور دل میں عزت تھی۔ ایک دفعہ میرے ہوتے ہوئے خواجہ صاحب کو شاہی کمرے میں اپنے ساتھ لے گئے اور شاہی الماری سے ایک قیمتی اچکن نکال کر خواجہ صاحب کو اعزازی طور پر پہنائی۔ اور بطور عطیہ مرحمت کی۔ خواجہ ریجنر صاحب سادہ مزاج تھے۔ کبھی اس شاہی اچکن کا استعمال نہیں کیا۔ بلکہ ایک عرصہ تک صندوق میں رکھا۔ پھر اپنے بیٹے عبدالنن صاحب میر کو دے دی۔ ایک دفعہ خواجہ صاحب دورہ پر تھے۔ اور موضع بزہامہ میں سلطان صاحب کے ہاں ٹھہرے۔ سلطان صاحب خواجہ ریجنر صاحب کو دیکھ کر پھو لے نہ سمائے۔ عدالت بند کر کے خواجہ صاحب کے ساتھ باتیں کرنے لگے۔ اور اپنے خاندانی حالات

کچھ اس طرح بتائے۔۔۔ ”کہ جب ہمارے سابقہ سلطان فوت ہوئے تو میرے چچا زاد بھائی کے ساتھ طویل مدت تک بادشاہی پر جھگڑا رہا۔ اور بہت زر کثیر کا دونوں طرف زیاں ہوا۔ آخر کار میں نے مقدمہ جیت تو لیا لیکن میرا چچا زاد بھائی ہارٹ اٹیک کی وجہ سے فوت ہوا۔ مزید برآں سلطان صاحب نے کہا میں بہت شرابی تھا۔ دینی کاموں سے مجھے کوئی رغبت نہ تھی۔ نماز روزہ تمام ارکان اسلام ہم نے ترک کئے تھے۔ اور عیاشی کی زندگی بسر کرتے تھے۔ ایک دن ایک درویش میرے ہاں تشریف لایا۔ میرے دل کو اس نے موہ لیا۔ اور اس کی عزت و احترام میرے دل میں پیدا ہوئی۔ میرے شراب پینے کے مختلف اوقات مقرر تھے۔ جب میں اپنے نام پر کمرے میں شراب پینے کے لئے گیا تو مجھے کمرے میں ایسی بدبو آئی کہ میری طبیعت خراب ہوئی۔ اور شراب پئے بغیر کمرے سے واپس نکلا۔ دوسرے وقت مقرر پر جب شراب پینے گیا تو وہی پہلی حالت ہوئی۔ اور شراب نہ پی سکا۔ اسی طرح تیسری دفعہ بھی ایسا ہوا۔ پھر مجھے یقین ہوا کہ جو درویش میرے گھر میں مہمان آیا ہوا ہے اسی کی کوئی کرامت ہے۔ تین دنوں تک مجھے بدستور کمرے سے بدبو آئی۔ اور درویش سے زیادہ قربت پیدا ہوئی۔ چوتھے دن درویش نے کہا اب میں واپس جاؤنگا۔ جو میرا کام تھا وہ میں نے کر دیا۔ پھر میں نے (سلطان صاحب) درویش کو کہا کہ آپ ہم سے کچھ نقدی اور پارچہ جات اپنے گھر والوں کے لئے لے جائیں۔ لیکن وہ نہ مانا۔ میرے اصرار پر چند دن اور گھر میں ٹھہرا۔ اور عزت سے جب اس کو الوداع کیا۔ اپنے چند خادموں کو کہا کہ درویش کے ساتھ سفر پر دور تک جاؤ۔ لیکن چند میل سفر کرنے کے بعد نوکر واپس آئے۔ اور کہا کہ ہم اس کے پیچھے پیچھے ”قاضی ناگ“ چڑھائی تک گئے لیکن اچانک درویش غائب ہوا اور کوئی اتاپتہ نہ چلا اور ہم لوگ واپس آئے۔ غرض سلطان صاحب نے کہا کہ اس روز سے میں نے شراب پینا چھوڑ دیا۔ پانچ وقت نمازیں ادا کرنا، اور روزے پابندی سے رکھتا ہوں۔ اور اسلامی شعار کے مطابق اپنی زندگی بسر کر رہا ہوں۔ جب خواجہ صاحب نے یہ ساری داستان سلطان راجہ متولی خان صاحب کی سنی تو آپ سلطان صاحب سے مخاطب ہو کر کہنے لگے۔۔۔۔ ”کیا آپ کو علم ہے وہ درویش کون تھا؟ وہ اللہ کا فرستادہ فرشتہ تھا۔ جس نے آپ کی اصلاح کی اور ہدایت کی راہ پر لایا۔ یعنی شراب نوشی بند کروائی۔ نمازوں سے رغبت

دلوائی۔ عدالت کے فیصلے کرنے میں انصاف سے کام لیا۔ اور غریبوں پر نظر کرم کرنے لگا۔ اور اپنے دسترخوان کو غریبوں کے لئے کشادہ رکھا۔ صرف ایک کسر باقی ہے کہ آپ (سلطان صاحب) اسلامی شریعت کے مطابق داڑھی بھی رکھیں۔ آپ کے سابقہ سلاطین کی جو میں نے ”شاہی کمرے“ میں تصویریں دیکھیں سبھوں کی شریعت کے مطابق داڑھی ہے۔“ اس پر سلطان صاحب نے جواب دیا انشاء اللہ داڑھی رکھنے کی بھی کوشش کرونگا۔ ویسے عملاً سلطان صاحب ایک درویش بن گئے تھے۔ آپ خواجہ صاحب کو علی الصبح کہتے تھے کہ آپ قرآن شریف کی تلاوت کریں میں سنوں گا۔ جتنے دن ہم وہاں ٹھہرے ہر روز شاہی کمرہ میں حضرت خواجہ صاحب کو ساتھ لے کر قرآن پاک کی تلاوت کرواتے تھے۔ نیز خواجہ صاحب آپ کو احمدیت کی تبلیغ بھی کرتے تھے۔ یہ خاندان بمعے راجاؤں کی شاخ ہے۔ یاری پورہ کشمیر کے راجے اسی خاندان سے تعلق رکھتے ہیں۔ اور ماشاء اللہ بہت جوشیلے احمدی ہیں۔ ان کا دوسرا خاندان کھکھے کہلاتا ہے۔“ میں (خواجہ محمد عبداللہ میر) اور حضرت مولوی شیر علی صاحب مرحوم موضع کوہی کوٹ میں کھکھے راجہ مسمی فقیر محمد خان کے گھر میں دو ماہ رہے ہیں۔ بہت شریف لوگ تھے۔ اس گاؤں میں چکھر چشمے تھے۔ اور آب وہوا معتدل۔ گڈی دوپٹے سے دو میل اوپر پہاڑی پر یہ گاؤں آباد ہے اور خوبصورت علاقہ ہے۔“

بارہمولہ کی پہاڑی پر اہل بارہمولہ کے لئے دعائیں

مکرم محمد الدین محرم مال ساکنہ بارہمولہ نے مجھے تحریر کیا۔۔۔ ایک دفعہ میر صاحب میرے مہمان تھے۔ کہنے لگے آج مجھے بارہمولہ کی سب سے اونچی چوٹی پر لے چلو۔ بارہمولہ کے شمال میں آدھ میل کی دوری پر ایک چوٹی تھی ہم دونوں جب اس چوٹی پر پہنچے تو ربغیر صاحب مرحوم نے بارہمولہ کی بستی کو ایک طائرانہ نظر سے دیکھا۔ پھر اس چوٹی پر ہم نے نماز نفل ادا کی۔ اور بعد میں ایک لمبی دعا کی۔ اور بزرگان کشمیری اللہ تعالیٰ سے بارہمولہ کے باشندوں کی ہدایت کے لئے دعائیں مانگ رہے تھے۔ کہ لوگوں کو احمدیت قبول کرنے کی توفیق دے۔ پھر پہاڑی سے اترتے وقت سبحان اللہ الحمد للہ اور اللہ اکبر پڑھتے رہے۔

حمل رنج کا ایک واقعہ!!

مکرم عبدالرحمن صاحب نایک ساکن آسنور نے کئی بار یہ واقعہ بیان کیا کہ میں (عبدالرحمن نایک) درکنگ پلان میں حمل بمقام ساؤر کام کر رہا تھا۔ وہاں ایک پرانے بزرگ نے خواجہ رینجر صاحب کا ایک واقعہ ان کی دیانت داری اور خدا ترسی کا سنایا۔ ایک دفعہ رینجر صاحب (خواجہ عبدالرحمن صاحب میر) کے پاس ایک شیر گوجر ایک کلو دودھ لے کر آیا خواجہ صاحب سے جنگل کا ایک درخت مانگا۔ خواجہ رینجر صاحب نے شیر گوجر کو لاکھ سمجھایا کہ جنگل کے درخت میرے پاس امانت ہیں۔ میں اس کی خیانت نہیں کرتا شیر گوجر بھی بہ ضد رہا اور دودھ بھی واپس نہیں لیا۔ پھر خواجہ صاحب نے تنگ آ کر غصے میں اس گوجر کو کہا چلو میرے ساتھ اور دودھ بھی اپنے پاس رکھو۔ شیر گوجر خوش ہوا کہ شاید رینجر صاحب مجھے جنگل سے درخت دے دیں گے۔ جب دونوں نزدیکی چشمے پر پہنچ گئے تو خواجہ صاحب نے اس برتن کا دودھ چشمے میں ڈال دیا اس کی قیمت اسی برتن میں رکھ دی اور جلدی جلدی واپس گھر آئے۔

منشی محی الدین کے گھر میں علالت:

مکرم منشی محی الدین صاحب نے تحریر کیا کہ ایک دفعہ میر صاحب میرے گھر آئے۔ آپ کو آتے ہی بخار اور سر درد شروع ہوا۔ میں نے آپ کو قہوہ پلایا اور گرم پانی سے پیر دھوئے (پرانے زمانے میں کشمیر میں گرم پانی سے پیر دھونا مہمان نوازی کی اعلیٰ علامت سمجھی جاتی تھی) اور خواجہ صاحب کے سر کو دیر تک دبا تارہا۔ اس طرح درد میں تخفیف ہوئی اور فرمانے لگے۔۔۔ محی الدین اس تکلیف کی وجہ میری اپنی ہی غلطی ہے۔ یعنی جب میں بارہمولہ میں وارد ہوا میں یہ دعا کرنا بھول گیا ”رَبِّ ادْخُلْنِيْ مَدْخَلَ صَدَقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مَخْرَجِ صَدَقٍ وَّاجْعَلْنِيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا“۔ پھر میں ہر تکلیف اور شر سے محفوظ رہتا۔

مخالف احمدیت کو خدا کی مار!!!

حاجی محمد عبداللہ صاحب میر نے تحریر کیا۔ حضرت خواجہ صاحب کی ڈیوٹی ٹیوٹال بانڈی

اشکوٹ رینج میں تھی۔ دریائے کشن گنگا ٹیڈال سے ہی گزرتا ہے۔ دریائے کشن گنگا کے دوسرے کنارے پر موضع چلیانہ واقع ہے۔ یہاں راجہ یار محمد خاں گرداوا احمدی رہتے تھے۔ اسی گاؤں میں ایک کٹر مخالف احمدیت ملا محمد شاہ رہتا تھا۔ خواجہ صاحب چونکہ رحم دل تھے آپ نے اس مخالف کے بیٹے کو فارسٹ گارڈ تعین کیا۔ ایک دفع کا ذکر ہے کہ ڈی۔ ایف۔ او مسمی بخش دیوشرن صاحب ٹیڈال سرکاری دورے پر آئے۔ راستہ ہمارے کواٹر سے ہی گزرتا تھا جب ڈی۔ ایف۔ او صاحب مذکور ہمارے کواٹر کے نزدیک پہنچے تو یہ مخالف احمدیت ملا محمد شاہ چند لوگوں کی معیت میں کھڑا ہوا اور خواجہ رینجر صاحب کے خلاف ڈی۔ ایف۔ او کے پاس تین الزامات کی شکایت کی۔ عبدالرحمن میر رینجر سرکاری کام کچھ نہیں کرتا۔ صرف نمازیں پڑھتا ہے۔ اور احمدیت کی تبلیغ کرتا ہے۔ جب یہ ملا اپنی آواز سے زیادہ بکنے لگا۔ اس پر ڈی ایف او صاحب جو ہندو تھے۔ ان کو رینجر صاحب کے خلاف یہ غلط اور بے بنیاد الزام بزداشت نہیں ہوئے۔ غصے سے گھوڑے سے نیچے اترے۔ اور گھوڑے والے سے لاشٹھی لے کر ملا محمد شاہ کی سخت مار پٹائی کی۔ اور ملا خود لہولہاں ہوا اس کے حمایتی فوراً بھاگ گئے۔ پھر ڈی ایف او صاحب نے اس شریر اور مخالف احمدیت کو سمجھایا کہ اگر رینجر صاحب خدا کی عبادت کرتا ہے۔ تمہیں اس سے کیا تکلیف پہنچتی ہے۔ میں کون ہوں کہ عبادت کرنے سے روکوں۔ تم لوگ رینجر صاحب سے ضد اور تعصب کرتے ہو۔ ہاں اگر رینجر صاحب نقصان جنگل کراتا ہے رشوت لیتا ہے کسی کو خواہ مخواہ ستاتا ہے تو میں ان باتوں کے لئے باز پرس کرتا۔ غرض اس طرح مخالف اور معاندین احمدیت ہمیشہ ہی اپنے پھیلانے ہوئے جال میں پھنس جاتے ہیں۔ اور ذلیل و خوار ہوتے ہیں۔ اس طرح ملا محمد شاہ کو اللہ کی مار پڑی۔

دوستوں سے الفت و مروت

دوست آن باشد کہ گیر دوست دوست۔ در پریشاں حال و در ماندگی
اس دنیا میں جب کسی کی مالی حالت یا کوئی اھتیار یا کوئی جاوٹم حاصل ہوتا ہے تو اس کی
طوطی بولتا ہے اس کو تہذیبیت یا سلیقہ اور باقرینہ کہا جاتا ہے۔ لیکن اگر کسی غریب میں شرافت حقیقی

ہو دیانت ہو، خدا ترسی ہو، اس کی اہمیت دنیا والوں کے پاس نہیں ہوتی۔ لیکن اللہ جل شانہ کے نزدیک وہی بڑا اور پیارا ہے۔ جو متقی اور پرہیزگار ہو۔ اچھے معاشرے میں سچا دوست نواز اس کو گنا جاتا ہے جو پریشان حالی اور درماندگی میں دوست کے کام آئے۔ اور اس کے دل میں عزت ہو۔ اباجی بفضلہ تعالیٰ بہت ہی احسان شناس پرور تھے آپ کسی کے لئے بار خاطر نہیں بنتے تھے۔ بلکہ ہر کس و نا کس کے ساتھ پیار و مروت سے پیش آتے تھے۔ دوست داری کا اس قدر پاس تھا کہ جس کو ایک بار جانچ تول کے اور اپنے من کے مطابق دوست بنایا پھر عمر بھر اس دوست کو نبھایا۔ ہر حال میں دوستوں کا خیال رکھتے تھے۔ جب بھی آپ اپنے دوستوں کا ذکر خیر کرتے تھے ایسی قربت کا اظہار کرتے تھے جیسے وہ آپ کے سگے بھائی ہیں۔ آپ دوستوں کے ساتھ ہمیشہ خط و کتابت کرتے تھے۔ اور ایک دوسرے کے سکھ دکھ میں برابر کے شریک رہتے تھے۔ بڑی مسافت طے کر کے ایک دوسرے کے پاس آتے تھے۔ اور مہینوں ایک دوسرے کے پاس ٹھہرتے تھے حضرت والد صاحبؒ دوستوں کی خاطر داری دل و جان سے کرتے تھے جو چیز ان کو ضرورت ہوتی تھی یا وہ پسند فرماتے تھے۔ خود ہی ان کو تحفہ کے طور پر بھیج دیتے تھے۔

مکرم محی الدین محرم مال نے مجھے تحریر کیا کہ ایک دفعہ حضرت سید زین العابدین ولی اللہ شاہ خلیفہ عبد الرحیم صاحب ولد خلیفہ نور دین صاحب جموں کی کوٹھی پر ٹھہرے ہوئے تھے۔ بارہمولہ سے خواجہ رنجبر صاحب نے تین سیر خالص سفید شہد خرید کر میرے ہاتھ دیا۔ اور کہا کہ یہ شہد تم کو حضرت سید زین العابدین صاحب کو کوٹھی پر پہنچانا ہے۔ اور ان کو صرف یہ کہندینا ہے کہ یہ شہد خواجہ عبد الرحمن میر نے بارہمولہ سے بھیجا ہے۔ غرض شہد لے کر سید صاحب کی خدمت میں حاضر ہوا۔ رات بھر ان کے ہاں ٹھہرا دوسرے روز رخصت کے وقت حضرت سید زین العابدین صاحبؒ نے فرمایا۔ کہ میر صاحب کو میر السلام علیکم کہدینا۔ اور جزاکم اللہ احسن الجزاء۔

ایک احمدی خاتون کا ایمان افروز اور دلہ روز واقعہ!!

چچا محمد عبد اللہ صاحب میر نے مجھ سے بیان کیا کہ خواجہ رنجبر صاحب کی ڈیوٹی بانڈی اشکوٹ کشمیر میں تھی دور ایک پہاڑی پر ایک مخلص احمدی کی بیوی رہتے تھے۔ جب اس احمدی

دوست کو معلوم ہوا کہ کرناہ رینج میں ایک احمدی رینجر آیا ہوا ہے تو وہ ہمارے پاس آیا کرتا تھا۔ ہم لوگ بھی ایک دو دفعہ پہاڑی پر اس کے پاس گئے۔ ایک دفعہ ایسا ہوا کہ یہ احمدی دوست پندراں بیس دنوں تک ہمارے پاس نہیں آیا۔ ہمیں بھی پریشانی ہوئی۔ حضرت رینجر صاحب اور میں ایک دن پہاڑی پر اس کے گھر گئے۔ وہاں کیا دیکھا کہ عورت اکیلی گم سم بیٹھی ہے۔ ہمیں دیکھ کر زار و قطار رونے لگی۔ حضرت رینجر صاحب نے وجہ پوچھی اور کہا کہ تمہارے میاں کہاں ہیں۔ تو اس نے گھر کے صحن کی جانب اشارہ کیا۔ وہاں ایک تازہ قبر تھی۔ ہم لوگ اب سمجھ گئے کہ ہمارے یہ احمدی دوست فوت ہوئے ہیں۔ انا للہ وانا الیہ راجعون۔

پھر اس عورت نے اپنی دلدوز داستان اس طرح سنائی کہ میرے میاں زیادہ دنوں بیمار نہیں رہے۔ قضائے الہی سے پچھلے ہفتہ میں اس کی وفات ہوئی۔ بستی کے لوگ احمدیت کی وجہ سے پہلے ہی ہم سے ناروا سلوک اور حسد و عداوت کرتے تھے میرے میاں کی وفات پر ملاؤں نے بستی کے لوگوں کو ہمارے گھر نہ آنے دیا۔ میں نے اپنے ہمسایوں کی بہت منت سماجت کی کہ میرے گھر آ کر میرے میاں کی تجہیز و تکفین میں میری مدد کرو۔ لیکن نہیں آئے۔ اور نا ہی عام قبرستان میں میت کو دفنانے کے لئے جگہ دی۔ پھر مجبور ہو کر دوسرے تیسرے روز میں نے اپنے صحن میں قبر کھودی اور کفن کا کپڑا خرید اور اس طرح اپنے میاں کو نہلا دھلا کر کفن میں ڈھانپ لیا۔ بڑی مشکل سے میت کو اٹھا کر قبر میں دفنا دیا۔ یہ غیر احمدی لوگ میرے اس سارے عمل کو دیکھ رہے تھے۔ اور بانہر تھے۔ لیکن مذہبی عناد کی وجہ سے ان لوگوں نے میری کوئی مدد نہ کی۔ یہ سکر ہم لوگ بھی بہت آبدیدہ ہوئے۔ اور مرحوم کی قبر پر جا کر دعائے مغفرت کی۔ اور اس باہمت اور پاک طینت عورت کو صبر کی تلقین کی۔ اور حوصلہ و ہمت کی نصیحت کی۔ حضرت رینجر صاحب اس بیوہ عورت کو ماہوار مالی مدد کرتے رہے۔۔۔۔۔

وہ تم کو حسین بناتے ہیں اور آپ یزیدی بنتے ہیں

یہ کیا ہی سستا سودا ہے دشمن کو تیر چلانے دو

ڈاکٹر عمر دین صاحب احمدی:

منشی محی الدین صاحب محرر مال نے تحریر کیا کہ ایک دفعہ میں دوران ملازمت خواجہ رینجر

صاحب کے پاس ہندواڑہ (کشمیر) چلا گیا۔ آپ نے فرمایا۔۔۔ بارہمولہ میں بیرون ریاست کے ایک احمدی ڈاکٹر مسمیٰ عمر دین صاحب آئے ہوئے ہیں۔ وہ دو ماہ تک ٹھہریں گے۔ اور بیماروں کا علاج معالجہ کریں گے۔ ڈاکٹر صاحب بہت مخلص احمدی ہیں۔ انشاء اللہ ان کے علاج و اخلاق سے غیر احمدیوں پر بہت اچھا اثر پڑیگا۔ تم بھی بارہمولہ میں اس کی مدد کیا کرنا۔ غرض ڈاکٹر صاحب اچھا علاج کرنے میں بہت جلد مشہور ہوئے۔ اکثر لوگ علاج کے لئے روزانہ آتے تھے۔ اور ڈاکٹر صاحب ان کو علاج کے ساتھ ساتھ پیغام حق بھی پہنچاتے رہے۔ بہت نڈر آدمی تھے۔ اور خواجہ ربیعہ صاحب کے ساتھ حد درجہ محبت و اخلاص تھا۔

دعا کی تاثیر۔۔۔ اور ایفائے عہد کا واقعہ!!

اباجی کے ہمسفر بھائی محمد عبد اللہ صاحب میر نے مجھے تحریر کیا۔۔۔ ”ہری سنگھ مہاراجہ کشمیر تھا اور اس کے عہد حکومت میں جنگلات سے ایک جڑی بوٹی ”کوٹھہ“ کا نکالنا ممنوع تھا۔ لیکن یاغستانی چوری چھپے کوٹھہ نکال کر اس جرم کے مرتکب ہوتے تھے۔ حضرت خواجہ صاحب کی ڈیوٹی ٹیڈال، بانڈی اشکوٹ ریج میں تھی۔ ایک دفعہ ایک ٹھیکیدار مسمیٰ سید اکبر نے ایک راہ گیر مشکوک آدمی کو ہمارے بنگلہ میں پکڑ لایا کہ اس کے جسم اور کپڑوں سے کٹھ بوٹی کی بو آتی ہے۔ اتفاقاً ڈی ایف او جنگلات بھی اسی روز آئے ہوئے تھے۔ سب نے اس راہ گیر آدمی سے پوچھا تاچھ کی کہ کوٹھہ کی بوٹی کہاں سے نکالی ہے۔ لیکن اس آدمی نے بالکل انکار کیا۔ پھر محکمہ جنگلات نے اس آدمی کے خلاف پولیس میں کیس درج کر دیا۔ پولیس والوں نے بھی اس آدمی کو بہت مارا پیٹا تا کہ بوٹی نکالنے کا راز بتائے۔ اور جھٹکڑیوں میں جکڑ دیا۔ لیکن بے سود۔ آخر تنگ آ کر اس نے کہا میرے ساتھ پہاڑ پر چلو۔ میں وہ جگہ دکھاؤں گا جہاں کوٹھہ نکالی ہے۔ اور موجود ہے۔ پہاڑ پر پہنچ کر اس نے اصل جگہ نہیں دکھائی۔ بلکہ اس کی یہ کوشش تھی کہ میں سب کو دھوکہ دے کر بھاگ جاؤں گا۔ لیکن پولیس والوں نے اس کو زیادہ ہی جکڑا اور مارا پیٹا۔ ظہر کا وقت ہوا حضرت خواجہ صاحب نے ایک چشمہ پر وضوء کر کے نماز ظہر ادا کی یہ یاغستانی سب کچھ دیکھ رہا تھا۔ پھر اس مشکوک آدمی نے ڈی ایف او اور پولیس اہلکاروں کو بتایا کہ اب دوسرے پہاڑ پر کوٹھہ بوٹی کا

شاک موجود ہے۔ وہاں دکھا دوں گا۔ وہاں پہنچ کر بھی کچھ نہ تھا۔ بلکہ سب کو بیوقوف بنا رہا تھا۔ اسی دوران نماز عصر کا وقت ہوا۔ خواجہ صاحب نے نماز ادا کی اور نماز میں دعائیں کرتے رہے کہ اس یاغستانی کی مار پٹائی ہو رہی ہے۔ انسانیت کے ناطے خواجہ صاحب کا دل کڑھ رہا تھا اور اس آدمی کی بد حالی کو برداشت نہ کرتے تھے۔ نماز عصر میں یہی دعائیں کیں کہ یہ شخص ہمیں اصل راز بتائے۔ تا اس کا ظلم بھی ختم ہو جاتا اور ہم بھی اپنے مقصد کو پالیتے۔ خواجہ صاحب رحم دل آدمی تھے۔ آپ نے اس آدمی کو بالکل نہ مارا تھا۔ بلکہ اپنے فرض منصبی کی مجبوری تھی۔ غرض وہ شخص خواجہ صاحب کی طرف غور سے دیکھتا رہا۔ لیکن زبان نہیں کھولتا تھا۔ جب پولیس کے آدمیوں نے اس پر اور سختی کی۔ آخر کار اس مشکوک آدمی نے کہا۔۔۔ ٹھہر واپ مجھے مت مارو۔۔۔ میں اپنا راز اس نماز پڑھنے والے شخص کو بتا دوں گا۔ اور کسی کو نہیں۔ جب خواجہ ریختر صاحب نماز سے فارغ ہوئے۔ تو ڈی ایف او صاحب نے بلند آواز سے بتایا۔ ”خواجہ صاحب آپ کی دعا قبول ہوئی۔“ خواجہ صاحب جواباً بولے انشاء اللہ۔ میں نے واقعی دعائیں کیں کہ یہ شخص اپنا راز بتائے۔

ہاں ریختر صاحب یہ شخص اپنا راز آپ ہی کو بتانا چاہتا ہے۔ اور کسی کو نہیں۔ غرض پولیس والوں نے اس شخص کو خواجہ صاحب کے پاس لایا۔ اور قبائلی نے کہا۔ ”کہ میرے دائیں ہاتھ کی ہتھکڑی کھول دی جائے۔ ہتھکڑی کھولنے پر اس نے خواجہ صاحب سے مصافحہ کیا اور ہاتھ پکڑ کر خواجہ صاحب سے کہا کہ آپ کو خدا اور رسول کو حاضر اور ناظر جان کر یہ وعدہ کرنا ہے کہ جب میں آپ لوگوں کو کوٹھہ بوٹی کا راز بتاؤں گا تو بعد میں آپ مجھے قانونی گرفت میں نہیں لائینگے۔ بلکہ چھوڑ دینگے۔ اور کسی کو یہ پتہ نہ چلے کیونکہ قبائلی برادری کا یہ قانون ہے۔ کہ جو شخص افشائے راز کرے اس کا اہل و عیال برادری میں گولی سے اڑا دیا جاتا ہے۔ اس لئے آپ ہی میرے اہل و عیال پر رحم کریں۔ اب خدا کے بعد مجھے آپ جیسے نیک مسلمان اور عبادت گزار شخص کی امید ہے۔ خواجہ صاحب نے پھر ڈی۔ ایف۔ او کو تسخیدگی سے کہا کہ میں اس یاغستانی آدمی کی ذمہ داری کیوں قبول کروں۔ میں جھوٹا وعدہ ہرگز نہیں کروں گا۔ اس کو عدالت ملزم ثابت کر کے سزا دیگی۔ غرض یہ ایک عجیب معمہ سامنہ گیا۔ ادھر سے محکمہ جنگلات جزی بوٹی کا راز جاننا چاہتا تھا۔

اُدھر سے ایفاء عہد کا معاملہ پیش نظر رکھتا ہے۔ کافی غور کے بعد ڈی۔ ایف۔ او۔ صاحب نے ریجنر صاحب کو بتایا کہ ہمیں راز سے مطلب ہے پھر اس شخص کو چھوڑ دیں گے۔ پھر خواجہ صاحب نے ڈی۔ ایف۔ او۔ کو بتایا کہ آپ بھی میرے ساتھ ایک وعدہ کریں کہ اس شخص کو چھوڑ دیں گے۔ آخر کار ڈی۔ ایف۔ او۔ صاحب نے اپنے رسم اور مذہب کے مطابق بڑی قسم کھائی کہ گاؤ (گائے) کی قسم میں اس قبائلی آدمی کو بغیر کیس کے چھوڑ دوں گا۔ آخر میں خواجہ صاحب نے قبائلی کی ذمہ داری لی اور اس کو اطمینان دیا کہ آپ کو پورا راز بتانے پر چھوڑ دیا جائیگا۔ اس یقین دہانی پر قبائلی نے خواجہ صاحب سے کہا کہ مجھے آپ جیسے سچے مسلمان پر پورا بھروسہ ہے۔ آپ کا وعدہ بھی سچا ہوگا۔ پھر دوبارہ یاغستانی نے خواجہ صاحب سے مصافحہ کیا اور کہا کہ اب میرے ساتھ چلو میں صحیح جگہ دکھاؤں گا۔ جہاں سات بوریاں جڑی بوٹی کٹھ کی ہم نے نکالی ہے۔

دور دریائے کشن لنگا کے کنارے پر ریت کے نیچے سات بوریاں کٹھ کی نشاندہی کی اور قبائلی نے اپنا پورا راز اس طرح بتایا کہ ہم سات آدمیوں نے پہاڑوں سے نکالی ہے۔ وہ سات آدمی آج ہی رات کے وقت یہ کٹھ کی بوریاں اٹھا کر ایک خاص ڈھنگ سے دریابا کر دیں گے۔ یعنی رسیوں وغیرہ سے۔۔۔ غرض گرفتار شدہ آدمی کو وعدہ کے مطابق چھوڑ دیا گیا۔ پھر ملحقہ بستی سے ایک سو آدمی اور پولیس والے بندوقیں لے کر رات کے اندھیرے میں سات بوریاں کی جگہ چست چوکس ہو کر نئے سات قبائلیوں کا انتظار کرنے لگے۔ جونہی رات کے اندھیرے میں قبائلی آدمی آگئے تو دونوں طرف فائرنگ شروع ہوئی اور اندھیرے میں بگڑ بچ گئی۔ جب قبائلی آدمیوں کی گولیاں ختم ہوئیں تو انہوں نے بندوقوں کی نالیوں سے لوگوں کو مارا پیٹا۔ کوئی جانی نقصان نہیں ہوا ان سو آدمیوں نے اور پولیس والوں نے صرف ایک یاغستانی کو پکڑ لیا۔ باقی سب فرار ہوئے بعد میں اس کی نشاندہی پر ملحقہ بستی کے دو اور آدمیوں کو گرفتار کر لیا گیا۔ اور تینوں کو مظفر آباد کی عدالت میں چالان کر دیا گیا۔ بعد تحقیقات تینوں کو عدالت نے سات سال قید کی سزا دی۔ قبائلی جنگجو قوم ہے۔ انگریز کے زمانے میں بھی یہ آزاد قوم تھی۔ انکا اپنا نظم و نسق ایک مخصوص علاقہ پر تھا۔ کہتے ہیں کہ اس زمانے کی حکومت بھی انکو خوش رکھنے کے لئے بھاری رقمیں

بطور نذرانہ (باج) ادا کرتی تھی۔ تاکہ وہ حکومت کے خلاف سازش نہ کریں۔ واللہ اعلم بالصواب

پاکیزگی ایمان و غصہ بصر۔۔۔!!!

اباجی مرحوم حتی الوسع آنحضرتؐ کے اسوہ حسنہ پر چلنے کی کوشش کرتے تھے۔ اسی طرح آپ بانی جماعت احمدیہ حضرت مسیح موعودؑ کی تعلیم کی پیروی میں اپنے روز و شب گزارتے تھے۔ اور ہمیشہ اپنی زندگی کو شرارت، تکبر، خود پسندی، دنیا پرستی، اور لالچ سے پاک و صاف رکھنے کی سعی کرتے تھے۔ بلکہ آپ نے راستی اور پاکبازی کا عہد اپنے خدا سے کر لیا تھا۔ اللہ کی اس زمین پر عاجزی اور انکساری سے چلتے تھے۔ ہر کس و نا کس کیلئے امن و سلامتی کے خواہاں رہے۔ جہان پر پردے یعنی مستورات کا معاملہ پیش آتا غصہ بصر سے کام لیتے تھے۔

جیسے حضرت مسیح موعودؑ آخر الزمان فرماتے ہیں۔۔۔

”اپنی آنکھوں کے لئے نہ صرف چار پایوں کی بینائی بلکہ حقیقی بینائی ڈھونڈو۔ اور اپنے دلوں سے دنیا کے بت باہر پھینکو۔ کہ دنیا دین کی مخالف ہے۔ پس اے نادانوں خوب سمجھو۔ اے غافلو خوب سوچ لو۔ کہ بغیر سچی پاکیزگی ایمانی اور اخلاقی اور اعمال کے کسی طرح رہائی نہیں۔ اور جو شخص ہر طرح سے گندہ رہ کر پھر اپنے تئیں مسلمان سمجھتا ہے۔ وہ خدا تعالیٰ کو نہیں بلکہ اپنے تئیں دھوکا دیتا ہے۔ اور مجھے ان لوگوں سے کیا کام جو سچے دل سے دینی احکام اپنے سر پر نہیں اٹھا لیتے اور رسول کریم ﷺ کے پاک جوئے کے نیچے صدق دل سے اپنی گردنیں نہیں دیتے۔ اور راستبازی کو اختیار نہیں کرتے۔ اور فاحشہ عادتوں سے بیزار ہونا نہیں چاہتے۔ اور ٹھٹھے کی مجالس کو نہیں چھوڑتے۔ اور ناپاکی کے خیالوں کو ترک نہیں کرتے۔ اور انسانیت اور تہذیب اور صبر اور نرمی کا جامہ نہیں پہنتے۔ بلکہ غریبوں کو ستاتے اور عاجزوں کو دھکے دیتے اور اکڑ کر بازاروں میں چلتے اور تکبر سے کرسیوں پر بیٹھتے ہیں۔ اور اپنے تئیں بڑا سمجھتے ہیں۔ اور کوئی بڑا نہیں مگروہی جو اپنے تئیں چھوٹا خیال کرے۔ مبارک وہ لوگ جو اپنے تئیں سب سے زیادہ ذلیل اور چھوٹا سمجھتے ہیں۔ اور شرم سے بات کرتے ہیں۔ اور غریبوں اور مسکینوں کی عزت کرتے

ہیں۔ اور عاجزوں کو تعزیم سے پیش آتے ہیں۔“

(اقتباس از التوائے جلسہ ۲۷ دسمبر ۱۸۹۳)

مکرم منشی محی الدین ساکنہ بارہمولہ نے مجھے تحریر کیا کہ خواجہ صاحب جب بھی ہمارے گھر میں تشریف لاتے پہلے باہر سے السلام علیکم کہتے۔ اگر مجھے گھر میں موجود پاتے تو میری (صاحب خانہ) اجازت سے اندر تشریف لے آتے۔ کبھی میری عدم موجودگی میں گھر میں ہرگز نہیں ٹھہرتے باوجود یکہ میری اہلیہ اور افراد خانہ آپ کو گھر میں آنے اور کھانے پینے کیلئے کہتے تھے۔ لیکن آپ جو بابا صرف اتنا بتا کر واپس چلے جاتے تھے انشاء اللہ شام کو آؤنگا جب محی الدین بھی اپنی ڈیوٹی سے واپس آیا ہوگا۔ ایک بار آپ ہمارے گھر میں فروکش تھے میں بازار کوئی چیز لانے کے لئے گیا۔ اتنی دیر میں خواجہ صاحب کو وضو کے لئے پانی کی ضرورت پڑی۔ گھر میں آواز دی۔ راقم (محی الدین) کی بیوی نے نے لوٹے میں پانی لایا اور دروازے کے پاس رکھ کر واپس چلی گئی۔ خواجہ صاحب نے فرمایا جزاکم اللہ پہلے بھی بیان کر چکا ہوں کہ اتاجی کا پردے کے معاملہ میں بہت سخت رویہ تھا۔ بلا اجازت کوئی بھی ہمارے گھر میں داخل نہیں ہو سکتا تھا۔ صرف ہمارے ماموں اور خالہ کو اجازت تھی۔ خود بھی قریبی تعلق داروں کے گھروں میں بلا اجازت نہیں جاتے تھے۔ اگر گھر میں صاحب خانہ یا اور کوئی مرد ہوتا تب اس کی اجازت سے کسی کے گھر میں جاتے تھے۔

نیت کا پھل

ریٹائرمنٹ سے قبل ہی حضرت والد صاحبؒ کی آنکھوں کی بینائی کمزور ہوئی تھی۔ لیکن بعد ریٹائرمنٹ اور بھی ضعف بصری کی شکایت ہوئی۔ اس زمانے میں چاندی کا سکہ یعنی چاندی کے روپیہ پیسے ہوتے تھے۔ اور سکوں میں کھوٹے سکے بھی گھل مل گئے تھے۔ جن کی کوئی قیمت نہیں ہوتی تھی۔ مکرم میر غلام رسول صاحب آف یاری پورہ نے مجھ سے بیان کیا کہ جب خواجہ صاحب پنشن حاصل کرنے کے لئے کو لگام کے خزانے پر آتے تھے تو آپ مجھے ہمیشہ اپنے ہمراہ لے جاتے تھے تاکہ خزانچی دھوکے سے کھوٹے روپے نہ دے۔ راقم (میر غلام رسول صاحب) ہر

مہینے پنشن لیتے وقت خواجہ صاحب کی مدد کرتا تھا۔ آپ صالح اور نیک بزرگ تھے میرا یہ کوئی بڑا احسان تو نہیں ہوتا تھا۔ پھر بھی وہ میرے لئے گھر سے کھانے کی چیزیں لاتے تھے۔ اللہ تعالیٰ ان کی مغفرت کرے۔ آمین۔

اور ایک دوست نے بھی اسی طرح کا ذکر کیا۔ کہ جب بھی کوئی خواجہ صاحب کو دھوکہ سے کھوٹے روپے دے دیتا تھا۔ تو آپ فرماتے تھے دھوکہ دینے والے خود ہی اپنی نیت کا پھل پائینگے۔

حق تلفی کے ذرے کو بھی پہاڑ سمجھ کر ادا کیا۔

آپ نے بفضلہ تعالیٰ حق اللہ کے فرائض کی ادائیگی میں کوئی کسر باقی نہ رکھی۔ کسی قسم کی حق تلفی آپ کی قوت برداشت سے باہر تھی۔ آپ کسی صورت میں بھی بے جارحیت یا سرکاری املاک کا بے جا مصرف یا خزانہ عامرہ سے ناجائز مال و متاع حاصل کرنے کے حق میں نہ تھے۔ آپ کے رگ و ریشہ میں یہ اثر سرایت کر چکا تھا کہ اس بے ثبات دنیا کے فائدے چند لمحوں کے لئے ہی فائدہ رساں ہیں۔ یعنی

”اس سراب رنگ و بو کو گلستان سمجھا ہے تو۔ آہ! اے نادان قفس کو آشیاں سمجھا ہے تو“

لیکن اللہ تعالیٰ کی خوشنودی ایک لازوال اور ابدی دولت ہے۔ آپ کی نظروں میں دولت کی کوئی قدر نہ تھی۔ بلکہ آپ کو آخرت کے سرمایہ کی فکر لگی رہتی تھی۔ یعنی بڑی دولت تقویٰ ہے۔ جس سے قرآن کریم نے معیار عزت و عظمت قرار دیا ہے۔

جب بھی آپ کو کسی چیز میں حرام کمائی کی لغزش کا ذرہ برابر شک ہوتا۔ اس کی ادائیگی کو تاڑتے رہتے تھے۔ حلال خوری کی یہ حوصلگی اس شخص میں پائی جاتی ہے جو مؤمن باللہ ہو اور اس کی سب سے قیمتی اور پیاری متاع رضائے الہی ہوتی ہے۔ مکرم چچا محمد عبد اللہ صاحب میر نے تحریر کیا خواجہ صاحب کو میوؤں کا باغ لگانے کا بہت شوق تھا۔ دور دور کی نرسریوں سے اپنے ساتھ گھوڑے پر پودے لاتے تھے محکمہ ہارٹیکلچر میں آپ کا ایک قریبی ملازم تھا۔ آپ نے اس سے میوؤں کے پودے قیمتا سرکاری نرسری سے لانے کے لئے کہا۔ جو اس ملازم کے حد اختیار

میں تھا۔ اس نے پودے تو بھیج دیئے لیکن سرکاری بل یا رسید مبلغ پچھتر روپیہ ۷۵ روپیہ قیمت اشجار نہیں بھیجی۔ خواجہ صاحب کے بہت اصرار کرنے کے باوجود اس شخص نے سرکاری رسید بک سے رسید نہیں دی۔ اور نا ہی قیمت لی۔ خواجہ صاحب کی طبیعت ایسی تھی کہ پودے ہی واپس بھیج دے دیتے لیکن پودے نصب کئے گئے تھے۔ غرض خواجہ صاحب کے لئے یہ سودا مشکوک اور بارگراں محسوس ہوا۔ پھر ایک دفعہ جنگلات کے دفتر سے مبلغ ۷۵ روپیہ سفر خرچہ ذاتی کا ایک بل آپ کے نام منظور ہوا۔ لیکن خواجہ صاحب نے یہ بل خزانے سے نہیں نکالا۔ ایک دفعہ خاکسار (محمد عبداللہ میر) نے ان سے کہا؟ سفر خرچہ آپ کا حق ہے۔ اور جائز بل ہے۔ آپ نکالتے کیوں نہیں؟ تو آپ نے جواب دیا دیکھو وہ جو میں نے اپنے ایک قریبی شخص سے مبلغ ۷۵ روپیہ کے سبب کے پودے سرکاری نرسری سے نکلوائے تھے ان کی قیمت اس شخص نے ادا نہیں کی ہے۔ ورنہ وہ رسید دے دیتا وہ بات میرے دل میں کھٹکتی رہی۔ اس لئے میں نے یہ فیصلہ کیا کہ سفر خرچہ کا بل پودوں کے بل کے برابر خزانہ سرکاری میں مجراء رہیگا۔ تاکہ میری ضمیر اور ذات اس چیز سے مبرا ہے کہ میری وجہ سے خزانہ سرکاری کی حق تلفی نہیں ہوئی۔ اللہ اللہ کتنا عظیم مرتبہ دیانت کا ہمارے بزرگوں نے پایا تھا۔

دیانت و تقویٰ

مکرم محی الدین صاحب محرر مال نے مجھے تحریر کیا ایک دفعہ خواجہ رینجر صاحب بارہمولہ میں ہمارے گھر تشریف لائے شام کے وقت باتوں باتوں میں مجھ سے پوچھا۔ محی الدین آپ کے گھر میں کتنے بجلی کے بلب جلتے ہیں۔ اور کتنی فیس ماہانہ ادا کرتے ہیں۔ راقم نے جواب دیا محکمہ بجلی نے صرف تین بلبوں کی اجازت دی۔ اور تین بلبوں کی فیس ہی ادا کرتا ہوں۔ تو آپ نے فرمایا لیکن آپ کے گھر میں چار بلب جلتے ہیں۔ زائد ایک بلب جلانا بددیانتی ہے۔ خواجہ صاحب نے فوراً مجھے فرمایا۔۔۔

”اگر یہاں باز پرس نہیں ہے۔ خدا کے پاس باز پرس ہوگی۔ تم فی الحال میرے کمرے کا بلب بند کر دو تاکہ گھر میں تین بلب ہی جلیں گے۔ اور ہم دونوں بددیانتی سے بچ جائیں گے۔ میں

شرمندہ ہوا کہ اب کیا کیا جائے۔ خواجہ صاحب اندھیرے کمرے میں بیٹھے ہیں۔ پھر میں نے (محمی الدین) فوراً سیڑھیوں کا بلب نکال ہی دیا۔ اور وہاں پر مومنتی رکھ دی اس صورت میں خواجہ صاحب اپنے کمرے کا بلب روشن کرنے پر راضی ہوئے اور دو روز قیام کے بعد واپس چلے گئے۔۔۔

فقیرانہ آئے صدا کر چلے۔ میاں خوش رہو ہم دعا کر چلے۔

اباجی کی وفات کے بعد ایک غیر از جماعت دوست کا خواب

مکرم الحاج مبارک احمد صاحب ظفر سابق صدر جماعت احمدیہ ناصر آباد نے مجھے تحریر کیا کہ میرے چچا مکرم عبدالغنی صاحب لون نے کئی دفعہ خواجہ عبدالرحمن صاحب میر کی وفات کے بعد ان کے متعلق بتایا۔ کہ میرے (عبدالغنی لون) ایک دوست ملک عبدالعزیز شاہ صاحب ساکنہ شویان اگرچہ احمدی نہیں تھے لیکن احمدیت اور بزرگاں کا ان پر ہمیشہ اچھا اثر تھا ملک عبدالعزیز شاہ نے بتایا کہ ایک دفعہ میرے دل میں یہ خواہش پیدا ہوئی کہ میں خواب میں یہ دیکھ لیتا کہ خواجہ عبدالرحمن صاحب میر دنیاوی زندگی میں بہت نیک اور پرہیزگار تھے اب بعد وفات ان کی اخروی زندگی کس طرح گذرتی ہے۔ خدا کا کرنا ایسا ہوا کہ میں نے ایک رات خواب میں دیکھا کہ میں (ملک عبدالعزیز شاہ) ایک وسیع و بسیط میدان میں کھڑا ہوں۔ یہ جنت نما میدان ہر نعمت اور ساز و سامان سے مزین ہے۔ اسی اثنا میں دور سے ایک گھوڑ سوار چست و چوکس میری طرف آرہا ہے۔ جب میرے نزدیک پہنچا تو میں نے پہچان لیا کہ یہ خواجہ عبدالرحمن میر ہیں۔ اور جلدی میں ہیں۔ میں نے عرض کی کہ خواجہ صاحب اتنی کیا جلدی ہے۔ تو آپ نے فرمایا۔ اللہ میاں نے جنت کی چابیاں مجھے سونپ دی ہیں۔ اور میں وہاں جا رہا ہوں اس لئے جلدی ہے۔ مزید برآں مبارک صاحب بتاتے ہیں۔۔۔ کہ خواجہ صاحب ہمیشہ سفر کے دوران ہمارے گھر ناصر آباد میں ٹھہرتے تھے۔ میرے والد بزرگوار محمد عبداللہ صاحب لون کے ساتھ بہت قربت تھی۔ جب بھی ہمارے گھر آتے تھے تو مجھے اپنے ساتھ نماز پڑھاتے تھے۔ چونکہ میں بہت چھوٹا تھا میں سجدے میں ہی سو جاتا تھا۔ لیکن میرا ایمان ہے کہ اس وقت میں نے جو دینی اور دنیوی ترقی حاصل کی ہوئی ہے یہ سب خواجہ صاحب مرحوم کی دعاؤں کا پھل ہے میرا یہ یقین کامل ہے۔

کہ انہوں نے میرے متعلق بہت دعائیں کی ہیں۔ اللہ تعالیٰ ان کو جنت نصیب کرے آمین۔ آپ جب بھی ہمارے گھر آتے تھے میری خوش اور حوصلہ افزائی کے لئے ہمیشہ ایک پیسہ (تانے کا بڑا سکہ) دیتے تھے۔ وہ بھی میری ترقی کا ضامن ہے۔ الحمد للہ۔

ایک پرانے احمدی بزرگ مسمیٰ عمو گے مرحوم کے نواسے مکرم خضر محمد بیگ صاحب (جو ابھی بقیہ حیات ہیں) نے مجھ سے بیان کیا۔۔۔ ”کہ ایک دفعہ خواجہ رنجبر صاحب (ابا جی) اپنی ناگراں کی زرعی زمین پر آئے اور ان کا راستہ ہمارے مکان اور کھیتی سے گذرتا تھا۔ جہاں میرے نانا زمین جوتے تھے۔ لیکن ایک بیل بیٹھ جاتا تھا۔ پھر اٹھنے کا نام نہیں لیتا تھا۔ خاکسار (خضر محمد بیگ) اس بات کا چشم دید گواہ ہے کہ جب خواجہ صاحب ہمارے نانا کے پاس پہنچے تو میری والدہ فرض دید نے خواجہ صاحب سے کہا۔۔۔ بھائی رنجبر صاحب ہمارے اس بیل کا کوئی دارو یا دعا کرو ہم زمیندار لوگ ہیں۔ اس بیل نے ہمیں تنگ کیا ہوا ہے۔ یہ سنتے ہی حضرت خواجہ صاحب میرے ہوتے ہوئے بیل کے نزدیک آئے اور اس کا کان پکڑ کر چند منٹ دعا کی اور بیل کے کان میں پھوک مارا۔ فوراً بیل کھڑا ہوا اور بعد ازاں بلار کاوٹ ہمیشہ کام کرنے لگا۔ یہ کرامت نہیں تو اور کیا ہے!!

موضع شورت کے ایک دوست نے بھی اسی قسم کا ایک واقعہ خاکسار کو بتایا۔ کہ حضرت خواجہ صاحب کھیتوں سے جا رہے تھے۔ ایک کسان اپنے بیل کو بے دردی سے مار رہا تھا۔ جو بیل بیٹھ گیا تھا اور اٹھنے کا نام ہی نہیں لیتا تھا۔ حضرت خواجہ صاحب نے جب بیل کے ساتھ بے رحمی کا سلوک دیکھا۔ تو بیل والے کے پاس آئے۔ اور بہ آواز بلند کہا کہ بیل کو مت مارو۔ بے چارہ بے زبان جانور ہے۔ اس پر کسان نے غصے سے جواب دیا پھر آپ ہی اس بیل کو اٹھالیں۔ کہا جاتا ہے کہ حضرت خواجہ صاحب نے بیل کا کان پکڑا اور دعائیں کیں۔ پھر کان میں پھونک مار کر یہ الفاظ دوہرائے۔ کہ اب خدا کے حکم سے اٹھو اور کام کرو۔ بفضلہ تعالیٰ بیل پھرتی سے کھڑا ہوا اور کام کرنے لگا اور خواجہ صاحب نے کسان کو کہا کہ اب اس بیل کو کبھی نہ مارنا۔ کسان خوش ہوا اور خواجہ صاحب کو دعائیں دینے لگا۔

ایفائے عہد کا واقعہ

ماسٹر محمد عبداللہ صاحب آہنگر ساکنہ شورت کشمیر بیان کرتے ہیں:

موضع شورت کے اکثر بزرگوں نے ہمیں یہ واقعہ سنایا کہ ایک دفعہ حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب میر مرحوم موضع شورت کے نزدیک ایک کھلی جگہ کھڑے کھڑے کسی کے انتظار میں تھے۔ اچانک آسمان سے موسلا دھار بارش شروع ہوئی اور حضرت خواجہ صاحب مرحوم اپنی جگہ پر بارش سے بھیگ گئے۔ بارش رکنے پر لوگوں نے خواجہ صاحب سے پوچھا کہ آپ نے یہ کیا کیا؟ بارش میں اس قدر بھیگ گئے لیکن اپنی جگہ نہ چھوڑی۔ تو آپ نے اطمینان سے جواب دیا۔ ”دیکھو میں نے ایک شخص کو کسی کام کے لئے گاؤں میں بھیج دیا تھا اور اس کو کہا تھا کہ میں اس مخصوص جگہ پر آپ کا انتظار کروں گا۔ اگر میں اس جگہ سے ہٹ جاتا تو میرا وعدہ جھوٹ ثابت ہوتا۔ اگر عام حالات میں یہ ایک معمولی واقعہ ہے لیکن اس سے حضرت والد صاحب مرحوم کی وعدہ وفائی اور قول کی سچائی کا سبق ضرور ملتا ہے۔

حضرت والد صاحبؒ اکثر یہ کہتے ہوئے فخر محسوس کرتے تھے کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام کو کشمیری زبان میں بھی ایک الہام ہوا ہے۔ یعنی یا اللہ رحم کر۔ جو خالص کشمیری زبان کے الفاظ ہیں۔ یاد رہے کہ والد صاحب مرحوم اور اکثر کشمیریوں کی زبان پر بے ساختہ یہ الفاظ آتے ہیں یعنی یا اللہ رحم کر یعنی اے اللہ تو رحم فرما۔

عمر کے آخری ایام بھی راہ مولانا میں ”بحیثیت امیر جماعت صوبہ جموں و کشمیر“:

صوبہ جموں و کشمیر میں احمدیت کا آغاز ڈوگرہ خاندان کے عہد حکومت میں ہوا۔ اور اسی عہد حکومت میں عرصہ پچیس سال ملازمت کرنے کے بعد حضرت والد صاحبؒ ملازمت سے سبکدوش ہوئے تھے۔ گو آپ کی عمر تقریباً ۶۰ سال کی تھی۔ لیکن معدے کے عارضہ کی وجہ جسمانی قوائے کمزور ہوئے تھے اور آنکھوں کی بصیرت کم ہوئی تھی۔ خصوصاً سفر میں رات کے وقت چلنا پھرنا

باعث مشکلات و مصائب ہی تھا۔ لیکن بفضلہ تعالیٰ ہمارے اسلاف نے ہر جہت مشکلات برداشت کر کے احمدیت کے اس (کشمیر میں) ننھے پودے کی دل و جان سے آبیاری کی ہے۔ اور دین کو دنیا پر مقدم رکھنے کی بڑی جدوجہد کی ہے۔ خاکسار راقم الحروف مؤلفہ کتاب ہذا اور ایک بہن بہت کم سن تھی اور دو بچے قابل شادی تھے۔ ذریعہ آمدن بھی محدود یعنی پنشن وغیرہ لیکن ان حالات کے باوجود بقول شاعر

جب بھی دیکھا ہے تجھے عالم نو دیکھا ہے۔ مرحلہ طے نہ ہوا تیری شناسائی کا
یعنی نیک فطرت اور فرشتہ سیرت شخص کا تعارف اور واقفیت ہمیشہ حل طلب رہتی ہے۔
دنیا والے اپنے گرد و نواح کے حالات کے مطابق اپنی گذر بسر کے تدابیر کرتے ہیں۔ لیکن
ایک حقیقی عابد، متقی، اور خدا رسیدہ انسان اللہ تعالیٰ پر بھروسہ اور توکل کر کے اپنی عمر کے آخری ایام
بھی راہ مولا میں وقف کرتے ہیں۔

حضرت والد صاحب اگرچہ جسمانی طور نحیف و لاغر تھے۔ لیکن خدمت دین کے لئے آپ
کا دل جوان تھا۔ دوران طالب علمی و ملازمت آپ جسمانی طور شہر بشہر اور دور دراز کوہ بیانوں
میں گھومتے رہے۔ لیکن روحانی طور آپ کی کشش عبادت، خدمت خلق اور خلافت سے رہی۔
کیونکہ آپ نے خود زمانہ امام الزمان اور دور خلافت کو قریب سے دیکھا تھا۔ اور اس مقدس سلسلہ
کو سمجھ لیا تھا۔ آپ نے بفضلہ تعالیٰ سلسلہ کی بے لوث خدمت اور تبلیغی خدمات میں کوئی دقیقہ
فرو گذاشت نہیں کیا۔ الحمد للہ۔

ہمیشہ حضرت والد صاحب نے خلیفہ وقت کے ارشادات کو اولین جگہ دی۔ اطاعت کا جذبہ
آپ کے خمیر و ضمیر میں مضمر تھا۔ اسی جذبے کے تحت رٹائرمنٹ کے معاً بعد خلیفہ وقت حضرت
مرزا بشیر الدین محمود احمد کو وقف عارضی کے تحت اپنی خدمات پیش کیں۔ پہلے آپ تحریک جدید
کے تابع وقف عارضی میں کام کرتے رہے۔ پھر حضرت مصلح موعودؑ نے ازراہ شفقت بعد
فسادات ۱۹۲۸ء تا ۱۹۴۹ء امیر جماعت صوبہ جموں و کشمیر مقرر کیا۔ چونکہ آپ کو سلسلہ کے ساتھ
انتہائی فدایت کا جذبہ کا فرما تھا۔ خلیفہ وقت کے حکم کی تعمیل میں وقت پیری میں بھی کمر ہمت
کس لیا۔ اور احمدیت کے پیغام کی منادی کرتے رہے۔ اس لگن میں آپ کو گھریلو مسائل حائل

نہ ہو سکے۔ بلکہ از سر نو سلسلہ کے کاموں میں جوانوں کی سی دلچسپی لینے لگے۔ بفضلہ تعالیٰ جماعت ہائے کشمیر کو خلیفہ وقت کے ارشادات کے مطابق متحد و منظم کیا۔ جماعتوں میں دورے کئے اور تعلیم و تربیت اور باقی امور کی طرف توجہ دلائی۔ غیروں میں تبلیغ حق کے لئے نئے اقدام اٹھائے۔ خاکسار کو یاد ہے آپ نے بحیثیت امیر جماعت جموں کشمیر احمدیت کی تعلیم اور مسیح موعودؑ کے ارشادات جلی حروف میں ہاتھ سے لکھوا کر پوسٹروں کی شکل میں ہر جگہ چسپاں کروائے تھے۔ آپ نے بفضلہ یک طرفہ احسان کا ایسا سلسلہ جاری کیا تھا کہ غیروں کے دل بھی موہ لئے تھے۔ اپنے خطبات سے احباب جماعت کو سرگرم عمل اور مستعد رکھنے کی انتھک کوشش کی۔ آپ نے جماعتوں میں نیکی، تقویٰ، اور اسلامی رنگ پیدا کرنے کی سعی کی۔ ہاں جب امیر کاروان کی اپنی شخصیت بلحاظ اخلاق، انسانیت، عبادت و ریاضت اور صاف گوئی کی حامل ہو اور معاشرے میں ایک نمونہ کی حیثیت حاصل ہوئی ہو۔ تب وہ باقی افراد جماعت میں عملی اصلاح کرنے میں کامیاب ہو سکتا ہے۔

بفضلہ تعالیٰ آپ سترے اور سنورے ہوئے وجود تھے۔ اور تمام شعبہ ہائی زندگی میں اسلامی رنگ میں تراشیدہ تھے۔ خاکسار اس بات کا عینی گواہ ہے کہ حضرت والد صاحبؒ نے نہ صرف جماعتوں کی تربیتی پہلو کی طرف دھیان دیا بلکہ جماعت کے دور دراز گوشوں میں جا کر فسادات کی وجہ جہاں بے سہارا بیوائیں تھیں۔ یتیم بچے تھے مرکز کیساتھ رابطہ کر کے ان کی بحالی اور آباد کاری کے اقدام کئے۔ خاکسار کو اچھی طرح یاد ہے کہ جب حضرت والد صاحبؒ امیر جماعت احمدیہ تھے آپ کسی نہ کسی یتیم بچے کو اپنے گھر لاتے تھے اور مہینوں گھر میں ٹھہراتے تھے اور ان کی از سر نو بحالی کے انتظامات کرتے تھے۔

تعمیر مساجد بیروں کے لئے اور تحریکات کے لئے جماعتوں سے چندے جمع کرنے کے لئے اور تبلیغی دورے کرتے تھے۔ آپ نے ماشاء اللہ تعمیر مسجد سیرالیون وغیرہ کے لئے بہت کام کیا ہے۔ خاکسار کو اس بات کا بخوبی علم ہے آپ دوران سفر کمزوری کے باعث گر جانے سے زخمی بھی ہوتے تھے۔ رات کے اندھیرے میں درو دیواروں سے ٹکرائے اور لڑکھڑاتے تھے۔ شدت کی سردی اور برف سے ہاتھ اور پاؤں کی انگلیوں سے خون بہتا تھا۔ معدے کا عارضہ لاحق تھا۔ لیکن

ان تکلیفوں کے باوجود اللہ تعالیٰ کی درگاہ میں جماعت کی ترقی اور احباب جماعت کے لئے درد دل سے دعائیں کرتے تھے اور اس کوشش میں تھے کہ خلیفہ وقت نے جو ذمہ داری مجھ پر ڈالی ہے۔ اس سے کما حقہ عہدہ برآ ہو سکوں۔

تیری درگاہ میں کن راہوں سے آؤں۔ وہ خدمت کیا ہے جس سے تجھ کو پاؤں حضرت والد صاحبؒ جب دوروں سے واپس گھر آتے تھے۔ مرکز سے ان دنوں امیر جماعت صوبائی کے لئے ایک منشی مقرر ہوتا تھا۔ جو امیر جماعت کی سربراہی میں مرکز اور جماعتوں کیساتھ خط و کتابت کا کام سرانجام دیتا تھا۔ آپ کے ساتھ مسمیٰ مکرم احمد دین صاحب مرحوم ساکن یاری پورہ کشمیر ہوتے تھے۔ جو بہت ہی مخلص اور جوشیلے احمدی تھے۔ ان کا ماہانہ مشاہرہ تیس روپیہ تھا۔

حضرت خواجہ صاحبؒ کی زندگی نے وفانہ کی۔ پھر بھی مختصر دور امارت میں شاندار کام سرانجام دیا۔ اور آپ جیسے نیک سیرت کردار کے حامل بزرگوں کو اگر آئندہ نسل اپنی مشعل راہ بنائے تو انشاء اللہ ہر سوا حمدیت کا بول بالا ہوگا۔ اور چپے چپے پر احمدیت کا پرچم بلند ہوگا۔ ایسے بزرگ جو محض رضائے الہی کی خاطر اور خدمت خلق کے لئے کام کرتے ہیں۔ ہمیشہ زندہ رہتے ہیں۔ اور اللہ تعالیٰ ان کی وفا شعاری، فرمانبرداری اور کاوشوں کو نوازتا ہے۔ سال ۱۹۵۰ء میں جب آپ خدمات سلسلہ بجالانے کے لئے گھر سے نکلے۔ اور سرینگر کے ہسپتال میں انڈر ہوئے اس کیفیت کا جب موضع آسنور میں پتہ چلا تو ہم لوگوں نے آپ کے عمر بھر کے ہمسفر بھائی محمد عبداللہ میر کو سرینگر ان کی عیادت کے لئے بھیجا۔ ان کا کہنا ہے۔۔۔ ”کہ بھائی خواجہ رہنبر صاحب نہایت صبر سے درد کی شدت برداشت کئے ہوئے تھے۔ معدے کی تکلیف تھی۔ ڈاکٹروں نے مشورہ دیا تھا کہ گلوکوز ڈرپ دینے کے بعد مریض کا آپریشن ہوگا۔ جب تین چار بوتلیں گلوکوز آپ کے جسم میں پہنچائی گئیں۔ تو آپ کی حالت قدرے ٹھیک تھی۔ اور بھائی خواجہ صاحب آپریشن کرانا نہیں چاہتے تھے۔ پھر حضرت خواجہ صاحب نے ڈاکٹروں کو بتایا فی الحال مجھے ہسپتال سے ڈسچارج کیا جائے۔ پھر آپ چچا محمد عبداللہ میر کے ہمراہ اپنے گھر آسنور آئے اور گھر میں بھی صاحب فراش ہی رہے۔ درد میں کوئی خاص افاق نہ ہوا۔ پھر کئی مہینوں تک یونانی

علاج ہوتا رہا۔ خاکسار کو ان ایام میں اپنے نیک اور صالح باپ کی خدمت کرنے کا موقع نصیب ہوا۔ یعنی کم سنی میں ہی دور دور پیدل جا کر حکیموں اور یونانی دوکانوں سے آپ کے لئے دوائیاں اور ضرورت کی چیزیں لاتا تھا۔ اور گھر میں خدمت بجالاتا تھا۔ آخری دنوں میں معدے سے تیزابی مادہ خارج ہوتا رہا اور معدے نے کام کرنا چھوڑ دیا۔ کمزوری دن بدن بڑھتی گئی اور نہایت بے چینی اور درد و کرب کی حالت رہی۔ لیکن زبان سے اف تک نہ کیا۔ صرف زبان سے سبحان اللہ الحمد للہ۔ اللہ اکبر اور درود شریف پڑھتے رہے۔ اور ہوش کی حالت میں اشاروں سے نماز ادا کرتے رہے۔

خاکسار کی والدہ صاحبہ اور ہم بھائی بہن پاس ہی بیٹھے رہتے تھے۔ جب آپ کی حالت زیادہ نازک ہونے لگی تو میری والدہ نے گھبرا کر ابا جی سے آخری بار پوچھا ہمیں کس کے سہارے چھوڑ کر جا رہے ہو تو آپ نے شہادت کی انگلی اٹھا کر اور دبی زبان سے اللہ اللہ کہتے رہے۔ اور ۷ ستمبر ۱۹۵۰ء بوقت چار بجے دن دنیائے احمدیت کے اس فرشتہ خصلت وجود نے نہایت خلوص و وفادار اور جاں نثاری سے اپنی جان جان آفریں کے سپرد کی۔

انا للہ وانا الیہ راجعون۔

آپ بفضلہ تعالیٰ صحابی کے علاوہ موصی بھی تھے۔ لیکن وفات کے بعد بوجہ تنگ دستی اور نامساعد حالات آپ کا جسد خاکی قادیان (بہشتی مقبرہ) نہ لے جاسکے۔ اور آپ آسنور کے (ہرم باغ) قبرستان میں دفن ہیں۔ اس قبرستان کو یہ فضیلت حاصل ہے کہ اس میں حضرت مصلح موعودؑ کا ایک نوزائیدہ بچہ بھی مدفون ہے۔

آسمان اس کی لحد پر نور افشانی کرے۔ سبزہ نور ستہ اس گھر کی نگہبانی کرے

اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ وہ آپ کے دینی و دنیوی خدمات کو قبول فرمائے۔ اور ہم سب کو آپ کے نقش و قدم پر چلنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین۔

بفضلہ تعالیٰ نیک اور صالح بزرگوں کے کہنے کے مطابق ابا جی عبادت گزار، منکسر المزاج، مخلص داعی الی اللہ، سلسلہ کا وفادار خادم، دعا گو، اور بے نفس انسان تھے۔ اللہ میاں آپ کو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمان کے مطابق جنت الفردوس میں اعلیٰ علیین میں جگہ نصیب

کرے۔ آمین۔ صحیح بخاری شریف میں یہ حدیث ہے:
ایک دفعہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس ایک جنازہ گذرا۔ اور اچھے لوگوں نے اس کی تعریف کی تو آپ نے فرمایا۔۔۔

”جس کی اچھے لوگ تعریف کرتے ہیں وہ جنتی ہوتا ہے۔“
سینکڑوں بزرگ اباجی کی نیک سیرت کے رطب اللسان ہیں۔ جیسے آپ کی یادگاری کتبہ بہشتی مقبرہ قادیان قطعہ خاص کے چھوٹے گیٹ کے پاس ہی یہ عبارت درج ہے۔

یادگار ۷۹۰

بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب میر فارسٹ ریٹج آفیسر

بے نفس، منکسر المزاج، عابد، دیانتدار، صحابی، دوران طالب علمی ایک نشان کے گواہ، سابق

امیر صوبائی کشمیر، سکنہ ودفون آسنور۔ کشمیر۔ وفات ۵۰-۱۲-۷۰

وصیت نمبر۔ ۲۰۴۴

سیرت المہدی جلد دوم جلد سوم جلد (جلد چہارم غیر مطبوعہ) مرتبہ قمر الانبیاء مرزا بشیر احمد صاحبؒ میں حضرت والد صاحب (خواجہ عبدالرحمن صاحب مرحوم) کی تینتیس روایات کا ذکر خیر ملتا ہے۔ ان سب روایات کی نقل میرے کرم فرما بزرگ مکرم سید عبدالحی صاحب ناظر اشاعت ربوہ نے اپنے ان تاثرات کے ساتھ بھجوائے۔ جزاکم اللہ۔ آپ ”کوثر الرحمن“ کے متعلق لکھتے ہیں۔ مناسب ہوگا کہ اس کی اشاعت کے وقت اس میں حضرت خواجہ صاحب کی وہ تینتیس روایات بھی شامل فرمائیں۔ جو آپ نے مسیح موعود علیہ السلام کے تعلق میں حضرت مرزا صاحبزادہ بشیر احمد صاحبؒ کے سامنے بالمشافہ یا بذریعہ خط بیان کی تھیں۔ یہ روایات سیرت المہدی۔ حصہ دوم اور سوم میں چھپ چکی ہیں۔ اور کچھ روایات اس غیر مطبوعہ جلد چہارم میں درج ہیں۔ جو میرے پاس سلسلہ کی امانت کے طور پر پڑا ہے۔

نوٹ: اٹھارہ روایات کا ذکر ”کوثر الرحمن“ میں آچکا ہے باقی پندرہ روایات قارئین کی دلچسپی کے لئے مندرجہ ذیل ہیں۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ خواجہ عبدالرحمن صاحب متوطن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ خط بیان کیا کہ ایک دفعہ ایک بڑا موٹا کتا حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے گھر میں گھس آیا اور ہم نے اسے دروازے بند کر کے مارنا چاہا۔ لیکن جب کتے نے شور مچایا تو حضرت صاحب کو بھی پتہ لگ گیا۔ اور آپ ہم پر ناراض ہوئے چنانچہ ہم نے دروازے کھول کر کتے کو چھوڑ دیا۔ (جلد دوم ص ۲۸، ۲۹)

(۵۰۳)۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب ساکن کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ ایک کشمیری بھائی نے اپنے نوزائندہ لڑکے کی ولادت پر مجھے خط لکھا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام سے نام دریافت کر کے تحریر کرو۔ میں نے حضرت اقدس سے اس بارہ میں استفسار کیا حضور نے فوراً ہی عبدالکریم نام تجویز فرمایا۔ پھر کچھ خیال آیا تو مجھ سے دریافت فرمایا کہ اس کے باپ کا کیا نام ہے۔ میں نے نام بتایا جواب مجھے یاد نہیں۔ حضور نے فرمایا اچھا جو نام پہلے منہ سے نکلا ہے یعنی عبدالکریم وہی ٹھیک ہے۔ (جلد سوئم ص ۲۴) خاکسار عرض کرتا ہے کہ خواجہ عبدالرحمن صاحب حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے زمانہ میں قادیان میں تعلیم پاتے تھے۔ اور اب کشمیر میں محکمہ جنگلات میں ملازم ہیں۔

(۵۰۴)۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ خواجہ عبدالرحمن صاحب ساکن کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ اکثر اصحاب اپنے بچوں کے نام حضور علیہ السلام سے رکھواتے تھے۔ اور حضور نام تجویز فرمادیتے تھے۔ حضرت مولوی شیر علی صاحب کے بڑے لڑکے کا نام عبدالرحمن اور بندہ کی دو بہنوں کے نام حلیمہ اور لمتہ اللہ بھی حضور ہی کے تجویز کردہ ہیں۔

خاکسار عرض کرتا ہے کہ حضرت صاحب عموماً بچے کا نام رکھتے ہوئے قریبی رشتہ داروں کے نام کی مناسبت ملحوظ رکھتے تھے۔ (جلد سوئم ص ۲۴)

(۵۲۰)۔ خواجہ عبدالرحمن صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ میں نے بھائی محمود احمد صاحب ساکنہ ڈنگل ضلع گجرات سے سنا ہے کہ جن دنوں کرم دین والا مقدمہ گورڈ اسپور میں دائر تھا عموماً حضرت اقدس مقدمہ کی تاریخوں پر قادیان سے علی الصبح روانہ ہوتے تھے اور نماز فجر راستہ میں ہی

حضرت مولوی فضل الدین صاحب بھروی کی امامت میں ادا فرماتے تھے۔ ایک دفعہ بٹراں کی نہر کے قریب نماز فجر کا جو وقت ہوا تو حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے فرمایا کہ نماز فجر کا وقت ہو گیا ہے یہیں نماز پڑھ لی جائے۔ احباب نے عرض کی کہ حضور حکیم مولوی فضل الدین صاحب آگے نکل گئے ہیں اور خواجہ کمال الدین صاحب اور مولوی محمد علی صاحب ساتھ ہیں۔ حضور علیہ السلام خاموش ہو گئے اور خود ہی امامت فرمائی۔ پہلی رکعت فرض میں آیت الکرسی اور دوسری رکعت میں سورۃ اخلاص تلاوت فرمائی۔

خاکسار عرض کرتا ہے کہ فطرتاً اس قسم کی روایتوں کے لینے سے میں تامل کرتا ہوں۔ جس میں اس وقت کے ایک مخالف گروہ پر زد پڑتی ہے۔ مگر جب میرے پاس ایک روایت پہنچتی ہے اور میں اس میں شک کرنے کی کوئی وجہ نہیں دیکھتا اور نہ ہی راوی میں کوئی طعن دیکھتا ہوں تو اس کے قبول کرنے پر مجبور ہوتا ہوں۔ اور خیال کرتا ہوں کہ شاید اس قسم کے واقعات خدائی تصرف کے ماتحت وقوع پزیر ہوئے ہیں۔ واللہ اعلم۔ (جلد سوئم ۳۱)

(۵۳۰): خواجہ عبدالرحمن صاحب کشمیر نے مجھ سے بیان کیا کہ حافظ حامد علی صاحب مرحوم ان سے بیان کرتے تھے کہ جب حضور کے پاس کہیں سے روپیہ آتا تھا تو حضور مجھے بلا لیتے اور بلاگنتی روپیہ دے دیتے تھے اور فرماتے تھے کہ اس وقت روپیہ لے لو نہ معلوم پھر کب ہاتھ میں آئے۔

خاکسار عرض کرتا ہے کہ حافظ حامد علی صاحب مرحوم حضرت صاحب کے خاص خادم تھے جنہیں حضرت صاحب گھر کی ضروریات اور مہمانوں وغیرہ کی مہمانی کے لئے روپیہ دیا کرتے تھے۔ نیز خاکسار عرض کرتا ہے کہ اس روایت اور روایت نمبر ۵۲۹ میں جو تضاد نظر آتا ہے یہ حقیقی تضاد نہیں ہے بلکہ اپنے اپنے موقعہ کے لحاظ سے دونوں روایتیں درست ہیں۔ اور حافظ حامد علی صاحب نے جو بات بیان کی ہے یہ غالباً خاص خاص لوگوں کے متعلق یا خاص حالات میں پیش آتی ہوگی۔ (جلد سوئم ص ۳۴)

۶۰۱۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب ساکن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ مجھے میرے والد

صاحب نے بتایا کہ جب حضور علیہ السلام نماز کے وقت تشہد میں بیٹھتے تو تشہد پڑھنے کی ابتداء ہی میں دائیں ہاتھ کی انگلیوں کا ہلکا بنا لیتے تھے۔ اور صرف شہادت والی انگلی کھلی رکھتے تھے۔ جو شہادت کے موقع پر اٹھاتے تھے۔ سیرت المہدی جلد سوئم

خاکسار عرض کرتا ہے کہ خواجہ صاحب کے والد چونکہ اہل حدیث میں سے آئے تھے اس لئے معلوم ہوتا ہے کہ وہ ان باتوں کو غور کی نظر سے دیکھتے تھے مگر مجھ سے مکرم ڈاکٹر محمد اسماعیل صاحب نے بیان کیا کہ ابتدا سے ہی ہاتھ کی انگلیوں کے بند کرنے کا طریق انہیں یاد نہیں۔ ہاں یہ ہو سکتا ہے کہ کبھی ایسا ہوا ہو۔ واللہ اعلم۔

۸۲۳۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب ساکن کشمیر نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ میرے والد صاحب بیان کرتے بیٹھے۔ کہ جب حضرت مسیح موعود علیہ السلام نماز کی نیت باندھتے تھے تو حضور اپنے ہاتھوں کے انگوٹھوں کو کانوں تک پہنچاتے تھے یعنی یہ دونوں آپس میں چھو جاتے تھے۔ جلد سوئم ص ۲۳۱

۸۲۵۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم۔

خواجہ عبدالرحمن صاحب ساکن کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ مولوی قطب الدین صاحب ساکن شورت علاقہ کشمیر بیان کرتے تھے کہ جب میں احمدی ہوا تو چونکہ ابتداء میں شورت میں کوئی احمدی نہ تھا لہذا میری مخالفت شروع ہوئی۔ میں نے حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی خدمت میں مخالفت کی نسبت ایک خط ارسال کیا۔ اور دعا کے لئے درخواست کی جس کا جواب حضور نے رقم فرمایا کہ صبر کرو۔ وہاں بھی بہت لوگ ایمان لائیں گے۔ خواجہ عبدالرحمن صاحب بیان کرتے ہیں کہ بعد میں اگرچہ شورت والے لوگ تو ابھی تک ایمان نہیں لائے لیکن اس کے بالکل متصل گاؤں موسوم کنہ پورہ (ناصر آباد) سارے کا سارا احمدی ہو گیا۔ اور علاقہ میں کئی اور جگہ احمدیت پھیل گئی ہے۔

خاکسار عرض کرتا ہے کہ خواجہ صاحب جلدی کرتے ہیں۔ اگر حضرت صاحب نے ایسا فرمایا ہے تو تسلی رکھیں۔ شورت بھی نہیں بچ سکتا۔ (جلد سوئم ص ۲۳۱، ۲۳۲)

۱۲۱۹۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب ریخ آفیسر کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ بیان کیا ابھ سے میاں عبداللہ خان صاحب ساکنہ چک ایمر پچھ کشمیر نے کہ ”میں نے حضور علیہ السلام کے پاس اپنا یہ رویا بیان کیا۔“ کئی درختوں کی قطار ہے جن پر گھونسے ہیں۔ اور ان میں خوبصورت پرندے ہیں۔ حضور نے فرمایا کہ ”یہ مسیح موعودؑ کی جماعت ہے۔“ (جلد چہارم غیر مطبوعہ)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

۲۱۲۱: میر عبدالرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہ مولا کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ مجھ سے عبداللہ خان صاحب مرحوم ساکنہ چک ایمر پچھ نے ایک دن سیدنا حضرت اقدس مسیح موعود علیہ السلام جو صبح کے وقت سیر کو نکلے تو مولوی عبداللہ صاحب حال وکیل کشمیر نے حضور کے پاس اپنی رویا بیان کی۔ میں نے خواب میں دیکھا ہے ایک دریا ہے۔ اور میں اس کے کنارے کھڑا ہوں۔ اس پر حضور علیہ السلام نے مولوی صاحب سے دریافت کیا کہ۔ اس کا پانی کیسا تھا۔ مولوی صاحب نے جواب دیا۔ میلا پانی تھا۔ حضور نے فرمایا۔ دریا سے مراد دل ہے۔ راقم ہذا کو یاد نہیں رہا کہ میاں عبداللہ خان صاحب مرحوم نے کہا تھا یا۔۔ (کتابت سے مٹ گیا ہے۔ مؤلف) (جلد چہارم غیر مطبوعہ)

۱۲۲۳۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہ مولا کشمیر نے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ مجھ سے میاں فقیر خان صاحب مرحوم ساکنہ اندھ کشمیر (ملازم حضرت راجہ عطاء محمد خان صاحب مرحوم جاگیر دار یاری پورہ) نے راجہ صاحب موصوف کی بیٹائی بڑھاپے کیوجہ سے کمزور ہو گئی تھی۔ جب وہ قادیان گئے۔

تو جب کبھی حضرت اقدس مسیح موعود علیہ السلام اپنے باغ میں بیدانہ کے ایام میں جاتے تو حضور راجہ صاحب موصوف کے آگے خود اچھے اچھے دانے بیدانہ یا شہتوت میں سے چن کر رکھتے۔ راقم عاجز عرض کرتا ہے کہ راجہ صاحب موصوف مہمان خانہ میں رہتے تھے۔ اور حضورؑ مہمانخانہ آکر راجہ صاحب کو بھی سیر میں شریک فرماتے تھے۔۔ (سیرت الہدی جلد چہارم غیر مطبوعہ)

۱۲۲۳۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

خواجہ عبدالرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہمولہ کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ سیدنا حضرت مسیح موعود علیہ الصلوٰۃ والسلام بیمار مہمانوں کی بعض اوقات عیادت فرماتے تھے۔ راجہ عطاء محمد خان صاحب مرحوم کی بھی مہمان خانہ میں آکر عیادت فرماتے تھے۔ ایک دفعہ میاں ضیاء الدین صاحب مرحوم طالب علم تعلیم الاسلام ہائی سکول کی بورڈنگ میں عیادت فرمائی تھی۔۔۔ (سیرت المہدی جلد چہارم غیر مطبوعہ)

۱۲۲۹۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

میر عبدالرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہ مولا کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ خاکسار راقم عرض کرتا ہے کہ میاں عبدالکریم مرحوم حیدر آبادی کو میرے روبرو دیوانے کتنے بورڈنگ ہائی سکول (جو اس وقت اندرون شہر ہے اور جواب مدرسہ احمدیہ کا بورڈنگ ہے) کے صحن میں بوقت دن کاٹا تھا۔ میرے سامنے ہی اسے کسولی بھیجا گیا تھا وہاں سے علاج کرا کر جب مرحوم واپس قادیان آیا۔ تو چند روز کے بعد اسے ہلکاؤ ہو گیا۔ اس پر حضرت مولوی شیر علی صاحب نے کسولی کے افسران کو تار دیا کہ عبدالکریم کو ہلکاؤ ہو گیا ہے کیا علاج کیا جائے۔ انہوں نے جواب دیا۔

sorry nothing can be done for abdul karim کہ افسوس عبد

الکریم کے لئے اب کچھ نہیں ہو سکتا۔ تب عبدالکریم کو سید محمد علی شاہ صاحب رئیس قادیان کے ایک مکان میں علیحدہ رکھا گیا اور مکرم معظم سید ولی اللہ شاہ صاحب اور خاکسار (خواجہ عبدالرحمن میر) اس کے پاس پہرہ کے لئے اپنی مرضی سے لگائے گئے۔ ہم دونوں بھی اس کے پاس جانے سے ڈرتے تھے۔ بہر حال سیدنا حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے نہایت الحاح سے عبد الکریم کے لئے دعائیں کیں۔ ڈاکٹروں کو حکم دیا کہ عبدالکریم کو ہرگز ہرگز نہ مارا جائے۔ اسے بادام روغن بھی استعمال کراتے رہے۔ سو اللہ تعالیٰ نے اپنے مسیح پاک کی دعاؤں کی برکت سے اسے شفا دی۔ (سیرت المہدی جلد چہارم غیر مطبوعہ)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

میر عبد الرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہ مولہ کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ سیدنا حضرت اقدس مسیح موعود علیہ السلام کے وقت ایک دفعہ قادیان کا لنگر خانہ گورداسپور منتقل کیا گیا۔ یعنی قادیان میں لنگر خانہ بند کیا گیا۔ اور گورداسپور میں لگایا گیا وہ ایام کرم دین کے مقدمہ کے تھے۔ جب کہ مجسٹریٹ عداؤتزدیک نزدیک تاریخیں رکھتا تھا۔ حضرت صاحب کو تکلیف ہو۔ ہم چند طلباء بھی گورداسپور چلے گئے تھے دوسری دفعہ ہر چوال اکثر احمدی بالغ و نابالغ ڈپٹی کمشنر کے پاس گئے تھے کیونکہ مرزا نظام الدین صاحب نے مسجد کا عام راستہ اور شارع عام دیوار چنا کر بند کر دیا تھا۔ اس وقت بھی ہر چوال میں حضرت حکیم فضل دین صاحب علیہ الرحمۃ مہتمم لنگر خانہ نے ہم سب کو کھانا ہوا کر ہر چوال کھلایا۔ تھا۔ (سیرت المہدی جلد چہارم غیر مطبوعہ)

۱۲۳۴۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

میر عبد الرحمن صاحب ریخ آفیسر بارہ مولہ کشمیر نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ مجھ سے میاں شمس الدین صاحب (غیر احمدی) سابق سکریٹری انجمن احمدیہ جماعت اسلام لاہور نے کہ دعویٰ سے پہلے ہم چند شرفاء لاہور قادیان اس غرض سے جاتے تھے کہ سیاسی امور میں حضور علیہ السلام ہماری راہ نمائی فرماویں گے۔ لیکن حضورؐ نے اس وقت کی نئی نئی حکومت انگلشیہ کے خلاف ہم کو کبھی بھی کچھ بات نہ کہی۔ پس ہم نے پھر قادیان جانا ہی چھوڑ دیا۔ (سیرت المہدی جلد چہارم غیر مطبوعہ)

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

حضرت خواجہ صاحب مرحوم۔۔ ”خط و کتابت کے آئینہ میں“

حضرت والد صاحبؒ کی بحیثیت ریخ آفیسر جنگلات کے دفتری خط و کتابت کی سینکڑوں سرکاری فائیلں بھری پڑیں ہوں گی۔ جو کارسروکار کو چلانے کے لئے دفتری خط و کتابت سے تعلق رکھتی تھیں۔ لیکن بحیثیت خادم حضرت مسیح موعود علیہ السلام اور اہل خاندان کی خدمت میں نہ معلوم کتنے خطوط لکھے ہونگے۔ نیز خادم سلسلہ اور بحیثیت امیر جماعت صوبہ جموں و کشمیر بھی خط و کتابت کی ہوگی۔ ایسا کیوں نہ ہوتا۔ آپ ایسے خوش قسمت بزرگ تھے۔ جو بچپن سے لڑکپن تک قادیان کے پاکیزہ اور روح پرور ماحول میں پلے بڑھے تھے۔ اور خصوصاً حضرت اقدس مسیح الموعودؑ کے گھر میں (ایام طفولیت میں) آنے جانے کی اجازت تھی! حضورؑ کے دوست احباب اور تربیت یافتہ ساتھی جو حضرت والد صاحبؒ کے سرپرست تھے۔ استاد بھی تھے اور جید عالم بھی تھے۔ ان کی بزرگی، نیک نامی، امانت داری، ایمان داری، سادگی اور اخلاص اپنی مثال آپ تھے۔ بفضلہ تعالیٰ حضرت خواجہ صاحبؒ نے بھی انکارنگ اختیار کیا تھا یعنی آپ بھی بے نفس، منکسر المزاج، سادہ، غریب الطبع، اور دیانت داری میں یکتائے روزگار عبادت میں مستقل مزاج، دعاگو، تعلق باللہ اور تعلق بالعباد کے ارفع مقام کو ہزاروں لوگوں نے مشاہدہ کیا ہے۔ یہ سب سعادت آپ حضرت مسیح الموعودؑ کی غلامی اور خدمت کا صلہ سمجھتے تھے۔ آپ ماشاء اللہ درجنوں روایات کے راوی ہیں۔ جو سیرت المہدی میں ریکارڈ ہو چکی ہیں۔ ایک نشانی کے چشم دید گواہ بھی ہیں۔ اسی طرح خلفاء اور رفقاء کے ساتھ بھی آپ کی خط و کتابت رہی۔ دوران طالب علمی حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم۔ اے خلف حضرت مسیح موعودؑ کا کتابوں کا بستہ گھر سے سکول لایا اور لے جایا کرتے تھے۔ اور آخری دم تک جب بھی صاحب زادہ صاحب کو خط لکھتے تھے آخر میں ”آپ کا بستہ بردار“ لکھنے میں فخر محسوس کرتے تھے۔ صاحب زادہ صاحب آپ کے کلاس فیلو بھی تھے۔ اسی طرح حضرت اہل جان کی خدمت کرنے کی سعادت پائی تھی اور انکو اپنی روحانی ماں سمجھتے تھے۔ ان کی خدمت میں ہمیشہ خط لکھتے اور خدمت کرنے کا موقع تلاش کرتے۔ غرض خاندان حضرت مسیح موعودؑ کیساتھ کمال درجے کی وفاداری

اور پیا رحمت کا اظہار آپ کے خطوط سے عیاں ہے۔ اپنے ہم عمر رفقاء کے ساتھ ہمیشہ خط و کتابت جاری رکھی۔ اپنے رفیق و شفیق سرپرست حضرت مولوی شیر علی صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ انتہائی قرابت یعنی باپ بیٹے کا سلسلہ جاری رکھا۔ اور ہمیشہ ان کو باجی کہہ کر پکارتے تھے۔ اپنے دو بیٹوں اور ایک بیٹی کو قادیان خط لکھتے رہے۔ جو تقسیم ملک سے پہلے قادیان میں ہی تھے اور بعد میں پاکستان چلے گئے۔ تینوں کے نام آپ کے لکھے خطوط جو شفقت پداری اور دینی و دنیوی نصائح سے بھرے پڑے ہیں۔ الغرض حضرت والد صاحبؒ کی جو بھی خط و کتابت خاکسار کو مہیا ہوئی ہے۔ اس میں ”مشتے از خرف و وارے“ کی مماثلت سے ہدیہ قارئین کئے دیتا ہوں۔ جن میں چند نادر اور انمول خطوط بھی ہیں۔

مندرجہ ذیل خطوط کا مختصر خلاصہ ہے۔ قارئین سے گزارش ہے کہ مشمولہ اصلی خطوط کا بھی مطالعہ کریں۔

(۱) حضرت والد صاحبؒ کے درخواست دعا پر خط کے پشت پر حضرت مسیح موعود علیہ الصلوٰۃ والسلام کے مبارک ہاتھوں کے لکھے چند دعائیہ کلمات

(۲) حضرت خواجہ صاحبؒ کی درخواست دعا کے جواب میں حضرت خلیفۃ المسیح الثانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا جواب بذریعہ پرائیویٹ سکرٹری۔

(۳) حضرت خواجہ صاحبؒ کے خط کے جواب میں حضرت اماں جان رضی اللہ تعالیٰ عنہا بذریعہ حضرت مرزا بشیر احمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ خط میں لکھواتی ہیں۔۔۔ ”آپ تو صحابی ہیں اور خدمت حضرت مسیح موعود علیہ السلام کا موقعہ پا چکے ہیں۔ آپ کیوں کہتے ہیں کہ خدمت کا موقع نہیں ملا۔“

(۴) حضرت والد صاحبؒ نے عید کی مبارک تقریب پر حضرت مرزا بشیر احمد صاحب ایم اے کی خدمت میں عید مبارک کی تہنیت اور حضرت اماں جانؒ کی خدمت مبارک میں سلام و دعا عرض ہے۔ جس کے جواب میں حضرت مرزا بشیر احمدؒ لکھتے ہیں۔۔۔ ”حضرت اماں جان کی خدمت مبارک میں آپ کا سلام پہنچا دیا ہے۔ آپ کے لئے دعا فرماتی ہے“

(۵) قادیان سے واپسی کے موقعہ پر حضرت خواجہ صاحبؒ حضرت خلیفۃ المسیح الثانی ایدہ اللہ

تعالیٰ سے رخصت طلب کرتے ہیں۔ نیز کشمیر کے لوگوں کی ہدایت کے لئے درخواست دعا اور اشاعت دین کی توفیق جیسے بابا نانک علیہ الرحمۃ نے کی۔ حضورؐ خط کے پشت پر دعائیں کلمات کے ساتھ اجازت دیتے ہیں۔

(۶) حضرت میرزا شریف احمد صاحبؒ کی جانب والد صاحبؒ کو خط کا جواب۔۔۔
 ”جب کہ احرارِ کمینہ نے حملہ کیا تھا۔“

(۷) حضرت خواجہ صاحبؒ کے خط کا جواب۔ حضرت خلیفۃ المسیح الثانیؒ بذریعہ پرائیویٹ سکرٹری مبالغہ کے متعلق لکھواتے ہیں کہ انفرادی مبالغہ نہیں چاہئے۔ اجازت لینی بھی انسب ہے۔

(۸) خط میں حضرت والد صاحبؒ نے حضرت مرزا بشیر احمد صاحبؒ ایم۔ اے کو کشمیر آنے کی دعوت دی تھی۔ اور حضرت اماں جانؒ کی خدمت مبارک میں سلام و دعا۔ جواباً حضرت صاحبزادہ صاحبؒ محررہ خط 28-6-48 میں لکھتے ہیں۔ ”خاکسار لمبے سفر پر نہیں جاسکتا۔ اماں جان کی خدمت مبارک میں سلام عرض کروں گا۔“

اپنے رفیق و شفیق سرپرست اباجی حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ، حضرت زین العابدین ولی اللہ شاہ صاحبؒ ڈاکٹر عبدالستار شاہ صاحبؒ اور عزیزان کے ساتھ خط و کتابت۔

(۱) حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ مرحوم محررہ خط 24-6-34 گھوڑا گلی سے والد صاحبؒ کے نام لکھتے ہیں۔

”سلام و دعا کے بعد اس بات پر اظہارِ خوشی کرتے ہیں۔ کہ آپ نے (خواجہ صاحب) قرآن شریف کا کچھ حصہ حفظ کر لیا ہے۔ نیز اپنے لئے درخواست دعا

کرتے ہیں۔ کہ اللہ مجھے قرآن شریف کا کام مکمل کرنے کی توفیق دے۔ دستخط شیر علی عفی عنہ

(۲) حضرت مولوی شیر علی صاحبؒ محررہ خط 31-8-35 میں لکھتے ہیں۔ ”بندہ انشاء اللہ اول

ستمبر یا ۱۵ اکتوبر کو جہاز پر لندن برائے طبع و نظر ثانی ترجمۃ القرآن انگریزی روانہ ہوگا۔ سفر و حضر اور اہل خانہ کے لئے درخواست دعا۔ دستخط شیر علی عفی عنہ

(۳) چوتھے بیٹے کے تولد ہونے پر لندن سے حضرت والد صاحبؒ کو مبارک بادی کا

خط۔۔۔۔

”اللہ تعالیٰ نے اپنے فضل سے آپ کو چوتھا بیٹا عطاء کیا ہے۔ دستخط شیر علی عفی عنہ۔

”(خاکسار مؤلف) عبدالوہاب میر ہی حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحبؒ کا چوتھا بیٹا ہے۔ کسی خواب یا پیار کی بناء پر مجھے والد صاحبؒ شید اور بادام پھول سے بھی پکارتے تھے۔

(۴) حضرت خواجہ صاحبؒ کے خط کے جواب میں ڈاکٹر سید عبدالستار شاہ صاحبؒ تحریرہ خط 5-10-35 قادیان سے لکھتے ہیں۔۔۔۔ ”عزیزم عبدالرزاق کی مبارک بادی کا مشکور ہوں۔ نیز اہل خانہ کی صحت و سلامتی کے لئے درخواست دعا و سلام ڈاکٹر عبدالستار شاہ صاحب۔

(۵) حضرت خواجہ صاحبؒ کا بحیثیت امیر جماعت صوبہ جموں و کشمیر ایک مفصل خط حضرت زین العابدینؑ کے نام۔ خط میں جماعت احمدیہ ہائے کشمیر کی تربیت کا تفصیلی جائزہ۔ نئی پود کی طرف توجہ کی ضرورت۔ شرک و بدعات سے نجات اور توحید کے قیام کے لئے درخواست دعا۔ نیز دونوں خاندانوں کا استفسار وغیرہ۔

(۶) حضرت والد صاحبؒ کی وفات پر حضرت سید زین العابدینؑ ولی اللہ شاہ صاحبؒ کا تعزیتی خط (خاکسار) کی والدہ کے نام۔۔۔۔

”اظہار افسوس کرتے ہوئے۔ کہ خواجہ صاحبؒ مرحوم کے ساتھ عمر بھر پیار و محبت اور رفاقت و شفقت کا برتاؤ رہا۔ آخر موت کا پیالہ سبوں کو نوش کرنا ہے۔ کچھ گھریلو حالات کا ذکر وغیرہ۔ دستخط۔ زین العابدین۔

(۷) حضرت والد صاحبؒ اور والدہ صاحبہ مرحومہ کے نام تحریک جدید کے سال اول سے لے کر دہم تک کی دستخط جو حضرت مرزا محمود احمد خلیفۃ المسیح الثانیؒ کی دعائیہ اور مصدقہ تحریر کے ساتھ ہیں۔

(۸) حضرت خواجہ صاحبؒ کا خط اپنے بیٹوں عبدالمنان میر۔ محمد عبداللہ اور بیٹی لمتہ الرحیم کے نام۔ دعا سلام کے بعد ”اللہ میاں آپ کو اپنی خاص بندگی کا خیر ہمیشہ تاقیامت دیتا رہے۔ اس کی بندگی سے بڑھ کر کوئی دوست نہیں۔ جس سے وہ نصیب ہو اسے اور کیا چاہئے۔“

نیز نمازوں کی تاکید اور عید سعید پر مبارک بادی۔ نمازیں خشوع و خضوع سے ادا کرتے رہیں۔ خدا سے ڈرتے رہو کہ عذاب سے بچائے جاؤ گے۔ والسلام عبدالرحمن احمدی۔

(۹) عبدالمنان میر کے نام خط۔۔۔

”کہ کسی فارم پر آپ کا نام ”میر عبدالمنان ہے“ ہے جو کہ عبدالمنان میر ہونا چاہئے۔ پہلے نام کے میر لکھنا سادات مراد ہوتا ہے جو ہم لوگ نہیں ہیں۔ اور نام کے بعد میر لکھنا ذات مراد ہے جو ہمارے لئے درست ہے۔ پس آئندہ عبدالمنان میر لکھ کر اپنی پہچان ظاہر کرو۔

اگر آپ دونوں میاں بیوی پابند صلوٰۃ ہیں تو گانا بجانے میں مصروف نہیں رہتے تو بے شک یہ امر ہماری آنکھوں کی ٹھنڈک کا موجب ہے۔ لیکن اگر یہ نہیں خدا تعالیٰ علیم و خیر ہے۔ اس کو کوئی فریب نہیں دے سکتا۔ آپ کامل ایمان رکھیں کہ وہ خوب دیکھتا ہے۔ اور جانتا ہے۔ وغیرہ وغیرہ۔ دستخط خاکسار۔ عبدالرحمن احمدی۔

(۱۰) ایک خط عبدالمنان اور لمۃ الحی کے نام۔

”اپنے بھائی بہنوں سے صلح کرو۔ شیخ ارکان اسلام پر کاربند رہو۔ جو بھائی کا قصور معاف نہیں کرتا وہ میری جماعت میں سے نہیں۔ (حضرت مسیح موعود) جب تم صاف پاک ہو تو الزاموں پر صبر کرو۔ بدسلوکی کا نیک سلوک سے بدلہ لو۔ یہی شرفاء کا کام ہے۔ امتہ الحمید، آمنہ بیگم ہمراہ غلام محمد ڈار م ذی الحجہ کو پاکستان کے لئے روانہ ہو جائینگے۔ سرینگر تک میں بھی ساتھ ہوں گا۔ وغیرہ۔ عبدالرحمن احمدی اور والدہ عبدالمنان۔

(۱۱) حضرت خواجہ صاحب کا ایک تاریخی خط اپنے بچوں کے نام (جو ملک کے بنوارے کے وقت قادیان میں مقیم تھے)

عزیزان خواجہ عبدالمنان میر و خواجہ محمد عبداللہ میر۔ ”اللہ تم سب کو خدمت دین اور حفاظت مرکز کی خاص توفیق دے۔ دیکھو پیارے بچو۔۔۔“ بھگوڑے نہ بننا۔ بلکہ بہادروں کی طرح مرکز کی حفاظت میں لگے رہو۔ مرکز قادیان کو ہرگز نہ چھوڑنا۔ خواہ جان دینی پڑے۔ یہی تو وقت ہے بہادری دکھانے کا اور ایمان کے مظاہرے کا۔ مؤمن بنو منافق نہیں۔ اور پیٹھ دشمن کو ہرگز نہ دکھانا۔ والسلام عبدالرحمن میر۔

سب سے پہلا خط ایک تاریخی خط ہے جو حضرت والد صاحب کے پاس موجود تھا۔ حضرت مسیح موعود علیہ السلام کی خدمت عالیہ میں بغرض دعا لکھا تھا۔ اور حضورؐ نے خط کے پشت پر اپنے مبارک ہاتھوں سے جواب رقم فرمایا ہے۔ حضرت والد صاحب قلم ہونے کے باوجود اسی سال حضور علیہ السلام کی دعاؤں سے پاس قرار دیئے گئے۔ اصل خط کے پشت پر حضورؐ کی تحریر بھی ملاحظہ کیجئے۔ جزاکم اللہ۔

حضرت خواجہ عبدالرحمن صاحب کی تحریر یہ ہے۔۔۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم محمدہ و نصلم علی رسولہ الکریم

بجضور جناب حضرت اقدس مسیح الموعود علیہ الصلوٰۃ والسلام

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ بندہ اپنی گناہوں کی شامت سے امتحان انٹرنس میں قلم ہو گیا ہے۔ اس لئے بندہ کی گزارش ہے کہ بندہ کے لئے صراط الذین انعمت علیہم غیر المغضوب علیہم ولا الضالین کی دعا مانگیں۔ اور کہ اللہ تعالیٰ ہمیں صبر دے اور ہمارا ہمیشہ ایمان ہے کہ اللہ تعالیٰ نے کبھی آپ کی دعاؤں کو میرے لئے ہرگز ضائع نہ کیا ہوگا کیونکہ وہ ضائع نہیں کرنے والا اور نہ ہی اب آئندہ حضورؐ کی دعاؤں کو وہ سمجھ دے گا ہرگز ضائع نہ کریگا۔ والسلام

حضور کی جوتیوں کا غلام

خاکسار عبدالرحمن احمدی

مورخہ ۱۵ اپریل ۱۹۰۸ء

حضور علیہ السلام کی تحریر:

السلام علیکم

خدا تعالیٰ پھر تم سب کو پاس کر دے۔ آمین۔ بے صبر نہیں ہونا چاہئے۔

والسلام

مرزا غلام احمد

نوٹ حضرت خواجہ صاحب:

الحمد للہ کہ اللہ تعالیٰ نے اسی سال امتحان انٹرنس میں پاس فرمایا یہ دعا حضرت مسیح الموعود علیہ الصلوٰۃ والسلام

کیونکہ میں زیر تجویز تھا اور اسی سال الحمد للہ پاس ہو گیا۔ فالحمد للہ علی ذالک

عبدالرحمن احمدی

بقلم خود

بسم الله الرحمن الرحيم - فخره و عظمتی را بگویند -

عن جرجان خرد اندلس مع مولود العبد المذنب

السلام علیکم ورحمة الله وبرکاته - بنده ایچیم ننگی شایسته است که از آن
 سیرت بیاید - هر که از بنده کلامی میگوید که بنده را از آن سیرت
 انصاف علیکم ورحمة الله وبرکاته - الفایده بی دعا نماند - اورا که الله تعالی
 همین صبر کرد و اورا که دعا را بنده ایچیم ننگی شایسته است که از آن
 سیرت بیاید - هر که از بنده کلامی میگوید که بنده را از آن سیرت
 انصاف علیکم ورحمة الله وبرکاته - الفایده بی دعا نماند - اورا که الله تعالی
 همین صبر کرد و اورا که دعا را بنده ایچیم ننگی شایسته است که از آن

2nd 12. 8. 1900

۱۲۵۱
 در کتابخانه کتب خطی
 ۱۲۵۱

(۱۳)

الحمد لله الذي
في سال امتحان از طرف ميسر (نام)
موجود در دفتر موجود عبيد الله و
گفته ميشود كه راجع به رعا - ادو اسيال
محمد با حسن بوقت - نه شده علي ذالك
عليه الرحمن تعالي

الحمد لله الذي جعل العلم نوراً
والسنة في الفضل على رسول الله

الحمد لله

الحفظ 11/7
سيفت ابراهيم بن سيفت

حلیفہ المسیح اتمان اللہ بخیر کی خدمت عالیہ میں کھڑا ہوا۔ حضور نے

مسدود فاکر المحمد مددی شکر سبزی جزایک اسمہ ابن الجواد

نہر دعاؤ کی اندلی کے اس حق سحر کو آہی

والله
سبحانه
وآله وصحبه
السلامين

- اے اللہ! میں تجھ کو ہر لمحہ یاد کرتا رہتا ہوں۔

مدی - اے اللہ! میں تجھ کو ہر لمحہ یاد کرتا رہتا ہوں۔

آپ! ہر لمحہ یاد کرتا رہتا ہوں۔ اے اللہ! میں تجھ کو ہر لمحہ یاد کرتا رہتا ہوں۔

اور ہر لمحہ یاد کرتا رہتا ہوں۔ اے اللہ! میں تجھ کو ہر لمحہ یاد کرتا رہتا ہوں۔

حضرت لعل خان قزوینی ہیں کہ اس شخص کو کہہ دیجئے کہ یہ کچھ بھول چکے ہیں

تو بھولیں۔ آپ تو صحابی ہیں کہ حضرت حضرت مسیح کو یاد رکھیں

یہ کچھ ہیں آپ بھول چکے ہیں کہ حضرت مسیح کو یاد رکھیں۔

امید ہے آپ نصیب کر دے گا

والکلم

بوقت سحری دعا اللہ علیہ وسلم

بیت آفسیر - مارچ ۱۹۳۵

کتاب

الحمد لله الذي جعل
 في قلبه الحكمة والرحمة
 في كل شيء من خلقه
 في كل شيء من خلقه

الحمد لله الذي جعل
 في قلبه الحكمة والرحمة
 في كل شيء من خلقه
 في كل شيء من خلقه

آیا که در فرزند ارشدی که کاشف حالت بواحد مبارک
 که تهنیت بفرزند ارشدی که کاشف حالت بواحد مبارک
 که تهنیت بفرزند ارشدی که کاشف حالت بواحد مبارک
 که تهنیت بفرزند ارشدی که کاشف حالت بواحد مبارک

حضرت اعلیٰ جا کرامت مبارک میر آبکا سلام
 بهجا دیا ہے کہ نے دعا فرمائی، میر فی الحال اچھوٹے کوئی پیغام نہیں دیا
 جب کہ ~~فرستاد~~ فرستادیں تو آپ کو مطلع فرمایا جائیگا
 مالک

الحمد لله الذي جعل
 في قلبه الحكمة والرحمة
 في كل شيء من خلقه
 في كل شيء من خلقه

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - نَحْمَدُكَ اللَّهُمَّ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَنَسْتَغْفِرُكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ

5

مفرد فوت خلیفہ المسیح ایدہ اللہ تعالیٰ

الحمد لله رب العالمين

دعا خاں اور دین جانی کے رخصت کا خوشخبر

د. براهین حکیم پور تو قطعاً زاریست

۵۰ مع دعا که مشکوٰۃ ضاعیه کہ الله یحکم دینکم

۱۰۸
در کتب جو خوارزمی و غیره

هو در این کتاب که فاکس و کوک است جلد دوم مرقوم علیها

حضرت بابا غلام علی علیہ السلام کی طرح خدا کا

دین کے لئے

المسألة الأولى في بيان ما هو المشيئة
التي هي المشيئة التي هي المشيئة
(٢٠)

بسم الله الرحمن الرحيم - الحمد لله وحده -

مکمل - اسم اعظم

آن کا معنوف سورۃ ۱۱۱/۱۳ - جہانگیر
 احسن الخیرات - جہانگیر کا تفصیل حالت کا تو آپ
 علم سوچا ہوگا - مجھے دو چوتھیں آئی تھیں -
 مگر اس قدر آئی تھیں کہ بالکل آرام ہے -
 اور کئی تھیں ہیں -

خالی -
 خالی -
 خالی -

خط حروف میرزا اسد اللہ

جس کے احوال کی کتب نے قصہ کیا تھا

AR

بسم الله الرحمن الرحيم
 کفر و کفر است از کفر

کفر

الله و کفر

آنکه در کفر 5/35
 کفر و کفر است از کفر

کفر و کفر است از کفر

کفر و کفر است از کفر

کفر و کفر است از کفر

کفر و کفر است از کفر

کفر

پراویندیکر می خلیفه مسیحی

کفر و کفر است از کفر

142

400

بسم الله الرحمن الرحيم

ملکی خواجہ صاحب

تاریخ
۶-۸-۹۱

الحمد لله رب العالمین

آپ کا فطوریہ عہدہ قبول ہوا۔ آپ کی دعوت کا شکریہ
ادا کرتا ہوں جو اللہ تعالیٰ کی حالت ایسے کر کے اپنے لیے سعادت بنی
اگر کیا بھی ہو کسی قریب یا دور جاؤں گا۔ باقی امان جاں کی خدمت مبارک میر
آپ کی خدمت میں آؤں گا اور قریہ سے متعلق ہیں ان سے دریافت کر کے
تو بہ خدمت کروں گا۔ امید ہے آپ کی خدمت کے لیے رہے۔

الحمد لله رب العالمین

بیت مرحوم جوہر علی صاحب دارالعلوم
ڈومیل - کشمیر

31-⁸/₃₅ - برادریم عزیز سید

الحمد لله رب العالمین
 ۱۲ - سید ۵ - اکثریہ چار پیر نندن بر طبع
 و نظارتی ترقیہ القوانین انگریزی روزنامہ ہوگا - دعا فرما
 کہ تمہارے اس سفر کو ہر طرح سے ناکام کر کے اور اہل خیال اور مال
 میں خود خلیفہ ہو - عزیز عبدالرحیم سید - آج دسواں
 کی تہذیب کیونکہ گھوڑا اکل گیا ہوا ہے - اسکو دیکھ کر کھانسی
 کی کیفیت عقل و دماغ کے محاورہ خود اسکو فکر ہے - آج
 صحت اور غیریت سے نا آشنا دوسری کڑی کاڑھ ہے
 اس - سیکر دیوں میں آج کی سادھوی اور شہداء
 آج کل شہداء بہ نسبت احتمال کرتا ہوں - میرا خیال
 تھا کہ وہ دنیا میں امکان ترنگ کا ہے آج کل کو حسیاتی
 کا لکھوں کہ سستی کا وجہ ہے درجہ -

دعا فرما کہ تمہارے تمام دنیاوی کو حذف فرما
 اور اپنے فضل و رحمت کے تمام شکوک سے نجات دے
 اور ہر شے کے منجھ کواد بندہ کا غیر خدا کو
 معذرت ہے - برادریم محمد عبداللہ کی خدمت میں
 الحمد لله رب العالمین دارالحدیث و درخشاں
 کے لئے جو سال اس سفر میں ہے ہوگی سال بیکار

بسم الله الرحمن الرحيم - حمد و ثناء لعلی علیہ السلام - الحمد لله رب العالمین

عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہما - کہ جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے حج کے لیے نکلے تو آپ نے فرمایا کہ حج واجب ہے۔
 اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔
 اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔
 اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔
 اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔
 اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔ اے اللہ! میں تجھ کو شکر کرتا ہوں کہ تو نے اسے میرے لیے فرض فرمایا۔

(۳) ان الذين ينفقون اموالهم في سبيل الله يضاعف لهم اجرهم - ۱۹۹۸ ہجری کے بعد ان کے اجر میں اضافہ ہوگا۔
 رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔
 رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔
 رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔
 رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔
 رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔ رحمت آگے بھی ہے جو اللہ تعالیٰ کے لیے خرچ کرے۔

(۵) من جاهد نفسه في سبيل الله يضاعف له اجرهم - جو اللہ تعالیٰ کے لیے اپنی نفس کو جہاد کرے اس کا اجر دوگنا ہوگا۔

تَعْلِيمُ الْعِلْمِ فَارِغٌ

صاحب: حضرت مولانا عبدالحق دہلوی، صاحب: مولانا عبدالحق دہلوی، صاحب: مولانا عبدالحق دہلوی

پیشہ عدالت - اور پڑھیں تمام اے مجھے = اس بارہ میں اللہ خدا تعالیٰ فرم دے کہ میں دانا

۱۔ حبیب ۲۹ دسمبر جمعہ کے دن سے پہلے رات کو سے فام میں دستخیز ہوا / مالا کے پاس

دستخط کرانے کے لئے اُن۔ راکھ والہہ کی سرے سے دعا کا جواب نہ تھا۔ اس کے لئے

۳ ادنیٰ کے جسد سے سورہ آل - کہ فی الذل بالہ سرنا ۔ مدنی ص ۱۰۸ / ا ح ۲

خط کجور احمد ادا اورده ضابطہ دو - خط سارانیہ اندلی سے خاں کجور

۷
کرم والہ - والدہ کی مختصہ تھیں۔ عدلیہ - برائے راز کے شعلہ قوری مس / ۱۱۱ -

ان کے لئے ہے اور ان کو میرا لئے ہے کہ وہ اللہ کی راہ میں

بسم الله الرحمن الرحيم

۱۰۰ - اے اللہ! میری حالت کو دیکھ۔ یہ اور عبد اللہ بن ابی بکر

آئے تھے اس وقت سے / لکھائے تھے

مجموعہ ۵ کی بارش کی صورت پر - امد والد و د سرائی لکڑی سے - جس سے ۱۳۵۰

۲۔ ایک ملک ۳۔ دوسرا ملک سے ملے دیکھ دیا اور کہا کہ یہ اسے دے دے گا

دفعہ کو درست کرنے کے لئے کہ دفعہ اور تصدیق کے مابین سے اٹھایا اور اسے

میراثہ میں نہ اضافہ کیا اور نہ محض میراث کے لئے یہ دو روپے دئے گئے نہ ان کے لئے

۴۷
کہا جس وقت کہ اس کی ہوائ کی لہر اور دریا کا فوارہ سے

میں نے اس کو دیکھا ہے کہ اس نے اپنے آپ کو دیکھا ہے۔

۱۰۔ وہ کہتے ہیں کہ اظہار سے اسلم دے رہا ہوں کہ میری کتاب

[illegible]

وہ میرا سوال ہے۔ اس پر جواب دینا۔ اور بالکل اسی طرح جاننا

کے لئے یہ ہے کہ اس کے لئے جو چیزیں ہوں ان میں سے ایک اور ایک

امام باقر علیہ السلام

نماز

بسم اللہ الرحمن الرحیم
نمودہ و فعلی علی بولہ العزیز
نہ انک فضل اللہ ربکم کا قد

عبد اللہ بن عبد الرحمن صاحب دیبچہ انیس - خانہ کشمیر

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ - ایسے معلوم ہوا ہے کہ اس کتاب نے
کرم سے آپ نے تکریم کی ہے کہ در اول کیلے دس سال کا فیصدہ - آج کی حالت
اور اگر دیات جکی تفصیل دفتر کے ریٹارڈ کے ورکے مندرجہ ذیل ہے -

سال اول	سال دوم	سال سوم	سال چہارم	سال پنجم
۳۰۔۔۔۔۔	۲۵۔۔۔۔۔	۵۰۔۔۔۔۔	۵۵۔۔۔۔۔	۶۰۔۔۔۔۔
سال ششم	سال ہفتم	سال ہشتم	سال نہم	سال دہم
۳۶۔۔۔۔۔	۴۰۔۔۔۔۔	۴۵۔۔۔۔۔	۵۰۔۔۔۔۔	۵۵۔۔۔۔۔

اس لئے آپ کو بارگاہ دین سے ہر سال ایسے وفاق کیا جوں کہ وہ آپ کو
برائے فیروزہ اللہ آئے تبیع اللہ کی مستقل بنیاد رکھنے میں موثر یا ناکی سے
اللہ کے ایسے قبول فرمائے اللہ اللہ اللہ احمدیت تک پہنچے ہیں ام ترانہ اللہ کی آمدہ ہرگز
بیش آئے اللہ تبارک و تعالیٰ میں ہرگز ہرگز مکرر بعد سے کی آپ کو توفیق بخشنے - اللہ
تبارک و تعالیٰ فضل ہمیشہ آئے اللہ آپ کی نسل کے ساتھ رہے - آمین - در اللہ
نکسار

محمد اللہ ولد اللہ
علیہ السلام انسانی

محمد اللہ ولد اللہ
علیہ السلام

تقاریر امداد بالمرمن الشیطن الرجیم

۲۲ بروت گندم بسم الله الرحمن الرحيم

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم :

فہمکے فضل امدد رہے گا

معد الناصر
من صاحب رنجبر الناصر حلقه الشير

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ - نبی معلوم ہوا ہے کہ اسے قاتل نہ مصلوب نہ کرنا ہے آپ نے تحریک جدیدہ اور ارادہ تحریک سے دس سال کا فیصلہ ہوتا تھا، اور اگر دیا ہے جسکی تفصیل دفتر کے ریکارڈز کے اندر ہے مندرجہ ذیل ہے۔

الاول - الثاني - الثالث - الرابع - الخامس

سال نخست . سال پنجم - سال ششم - سال نهم - سال دهم
۸-۰-۰ ۸-۰-۰ ۱۱-۰-۰ ۱۵-۰-۰ ۲۰-۰-۰

افسوس کہ بارگاہِ دین سے اس سال ایسے دعا کرتا ہوں کہ وہ آپ کو
 جزا عظیم سے نوازے۔ آج تب تک ہم کو مستقل سیارہ کیسے جو قربانی کی ہے
 اس سال اسے قبول فرمائے۔ اے اللہ اے احمدیت کا تئیں بن اہم قرآن کریم کی آیت فرمادے
 بیش آج اس سال ان میں ہیں کہ وہ شکر و حمد سے اپنے آپ کو توفیق بخشنے۔ اے
 تعالیٰ کا فضل مسند آج اس کی نسل کے ساتھ رہے۔ آمین۔ و اللہ اعلم
 خدایک

کذا محمد بن

علیہ السلام

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - عَمْرُو دَهْلَوِی

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

الْمَدِينِيّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

لحم البقر الحام = سورة البقرة على قول آخر حم على قوله الحام ١٥٣

عمر بنان علیہ السلام و اولادہ الکی سلم سید احمد
 محمد علیہ السلام و اولادہ الکی سلم سید احمد

جس وقت کہ - رستہ کا آخر تک پہنچ جائے
 مرنے سے پہلے اور صحت کے طبع کا پیش نظر رکھ کر
 کا توفیق ہے اور پنج ارکان رستہ پر چلتے آتے
 ہو تا قیامت پہنچے یہ توفیق ہے کہ بعد قیامت
 انہیں آئے - + فتنہ مہول ہوا + ظنی اور قیامت کا بار
 کا اعتبار نہیں کیا جا سکتا - جب آج صاف ہو
 ہو تو الزام ہے - جبر مرد اور بدلو کا کوئی
 موت سے بدلو کو نہ ہی عتاب کا ہے
 اور فوراً درخون کیا ہو لے ہے بھارت اور بہن
 نے صدمہ کر کے شہرہ شدہ ہو جاوے - اور اس طرح
 با بھی صلح و فساد کا کیا فائدہ

پیکار جو شخص زبانی اپنے جانی ہم تصور سات

کرتا ہم - وہی بڑا اور غریب (انہیں علیہ صوفی فریضہ پورٹا)
 یہ جدی صلہ کرو اور جانی سب سے جدی صلہ جو
 نیک اور صالح ہو - یہ وہی کردار آئندہ کی آج کو اور دیکھا

۳۔ دیکھو گو جسہ پہ در آئندہ صلہ ہن ہوں کے روانہ
 یا کائنات ہونے - سر شکر ملک سیت جی ہر ملک - جان کے

نے خوب علم نہ کرنا اور یہ کہ بیلہ سداہ باب برائے صلہ
 ہر گاہ ہونے + دعا کرتے ہوئے آئندہ قاتی ہونے کا خاص خیال کر

۴۔ ان سے بھی آئندہ سداہ + یہی معقول باہر صلہ کی
 طے ہے مگر ہم میں ان سے آئندہ صلہ کی وجہ سے
 اور بے خبری سے سب سے سداہ + آئندہ صلہ

انہر صالح اور خادم دین اور نیک طالب بنائے

۵۔ انہر صلہ کی وجہ سے
 جو (۲) صلہ کی وجہ سے

۲۔ درانی + صلہ کی وجہ سے
 درانی + صلہ کی وجہ سے
 درانی + صلہ کی وجہ سے